महाप्रभावक

शंखेश्वर तीर्थपती

श्री पार्श्वनाथ भगवान





પ્રગટ પ્રભાવી શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ ભગવાન



कमठ धरणेंद्रे च, स्वाचित कम कुर्वाति
प्रभु स्तुल्य मनावति पार्श्वनाथ श्रियऽस्तुव ।

कुशल - कान्ति

पदयात्रा महासंघ - स्मारिका

संघ प्रस्थान ··· बाड़मेर से – 31-1-1980

संघ प्रवेश ··· पालीताणा – 23-3-1980

संयोजक ··· मुनि मणिप्रभ सागर

सम्पादक ··· हीराचंद वैद, जयपुर

द्रव्य-दाता

पालीताणा पदयात्रा संघ समिति

बाड़मेर

प्रकाशक :

श्री जिन हरि सागर सूरि ज्ञान भंडार

[illegible] पालीताणा-364270



स्मारिका

के

सयोजक

युवक मुनि श्री मणिप्रभ सागरजी महाराज





स्मारिका

के

सम्पादक

श्री हीराचन्द वैद, जयपुर






आचार्य दादा १००८ श्री
जिनदत्त सूरीश्वरजी महाराज



जैनाचार्य श्री जिनहरिसागर सूरीश्वरजी म० सा०


प.पू. प्रज्ञापुरुष अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी म.सा.
विभिन्न मुद्राओं में



पू मुनिश्री शान्त्यानदजी



पू मुनिवर्यश्री जयानदजी म





श्री कुशल मुनिजी





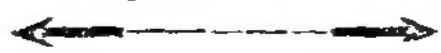




पू आचार्यश्री यशोदेवसूरिजी म

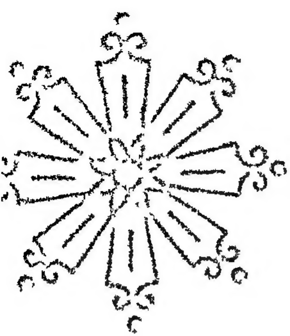


शुभ चिन्तक





पू मुनिश्री कमलविजयजी म



पद-यात्री

संघ

के

निश्रा दाता

को

समर्पित

अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी म० सा०



हे अनुयोगाचार्यवर !

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]





न्याय व्याकरण तीर्थ, साहित्य-शास्त्री

स्व० मुनिराज श्री दर्शन सागरजी म० सा०

शुभ-संदेश

सुप्रसिद्ध वक्ता, प्रभावशाली व्यक्तित्वधारी, अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी महाराजश्री की निश्रा में बाड़मेर जैसे दूरस्थ प्रदेश से निकले हुए छःरी पालत संघ की प्रकाशित होने वाली स्मारिका हेतु मेरी शुभेच्छा मांगी गई है।

जैन संघ के भावी इतिहास के लिए वर्तमान ऐतिहासिक और धार्मिक भव्य घटनाओं की जानकारी एवं विवरण औरों के लिए प्रेरक बने, इसलिये स्मारिका का आयोजन उचित है।

आज के विषम काल में भगवान् महावीर के त्रिकालाबाधित, अविच्छिन्न एवं प्रभावशाली शासन में ऐसी बड़ी पदयात्राएं आयोजित करने वाले पुन्यवंत आत्माएं मौजूद हैं यह जानकर आनन्द और अनुमोदना होती है।

स्वयं के शुभाशीर्वाद और उपदेश द्वारा पदयात्रा संघ के संघपतियों के हृदय में धर्म भावना जागृत कर ऐसी महान् यात्राओं के आयोजन के उपदेशक गुरुवर्यश्री को शत: शत: धन्यवाद !

जैन धर्म की महान् प्रभावना के लिए अनुकम्पादान की प्रवृति सहित की पदयात्राओं का आयोजन इस काल के लिये सर्वोपरि अंग है ऐसा मेरा मानना है, कारण कि हम स्वयं बम्बई से पालीताणा पदयात्रा संघ लेकर आये तब यह अनुभव हुआ है। उस संघ यात्रा द्वारा जो शासन प्रभावना व धर्म प्रभावना हुई उससे प्रेरणा लेकर अनेक पद यात्रा संघों का आयोजन हुआ इससे मेरे कथन की पुष्टि होती है।

ऐसी यात्राएं यदि विधिपूर्वक और शुभ भावपूर्वक की जावें तो यात्रियों के जीवन में नया शुभ-भाव, नयी प्रेरणा, नया प्रकाश और प्रभु कृपा प्राप्त हो सकती है। इससे जीवन का वाहन सही दिशा में बहने लगता है, इस दृष्टि से ऐसी यात्राओं का मैं जोरदार शब्दों में प्रतिपादन करता हूँ।

मुनिवर्य श्री कान्तिसागरजी महाराज जैसे विद्ववर्य, समर्थ, प्रतिभाशाली अनुयोगाचार्य की निश्रा में और सौजन्यशाली विद्वान् युवक मुनि श्री मणिप्रभसागरजी की प्रेरणा से निकले इस संघ के पालीताणा पहुँचने के वक्त के प्रवेशोत्सव में शामिल होने का सुन्दर अवसर मुझे मिला इसका आनन्द मैं अनुभव करता हूं। महान् तीर्थ भूमि में गुरु उपदेश से पालीताणा की भाषा में 'भाथे पोषवा' और राजस्थानी भाषा में 'फले चुन्दडी' का आयोजन कर जैन संघ की उदारता, मैत्री भावना और अनुकम्पादान का गौरव बढ़ाया है। यह यादगार इतिहास बना है, इसको हजारों लोगों द्वारा अनुमोदना हुई है।

अन्त में उदारमना, महामना श्री कान्तिसागरजी महाराज के आत्मीय सम्बन्ध के कारण मैं सपरिवार वर्तमान सुखसाता चाहते सुख-पृच्छ करते रहे हैं। इसी शुभेच्छा के साथ स्मारिका के आयोजकों का अभिनन्दन।

— विजय यशोदेव सूरि

शुभ सन्देश

अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी मेरे पुराने स्नेही हैं । आप विद्वान् विचारक एव प्रखर प्रवक्ता हैं । आपका स्वभाव मिलनसार एव समन्वयवादी है । आपके सान्निध्य मे बाडमेर से पालीताणा तक सघ की पद-यात्रा धर्म प्रचार की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । जैन-तीर्थ की प्रभावना की दृष्टि से इसका अपना ऐतिहासिक महत्त्व है ।

प्रस्तुत इतिहास को सुरक्षित रखने के लिए महासघ एक स्मारिका प्रकाशित कर रहा है, परम प्रसन्नता । मेरी हार्दिक शुभ-कामना है कि महासघ अपने विचार को मूर्त रूप देने मे सफल हो ।

विरायतन, राजगृह

—उपाध्याय अमर मुनि

प्रकाशन सफल हो,
यही शुभ कामना ।



—गणाधीश
उदयसागर

शुभ - संदेश

हे महान् सर्जक !

भारत की धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों से विभूषित पुण्य तीर्थाधिराज की कल्याणी छाया में आपश्री का गुणानुवाद करते हुए सांस्कृतिक जागरण, साहित्यिक विकासोन्नयन एवं जैन ऐक्य के राष्ट्रीय संस्थान शांति विजय ज्ञानपीठ दुर्ग गौरव अनुभव करता है। गुणानुवाद का यह प्रसंग इसलिए उपस्थित हुआ क्योंकि आपश्री ने बाड़मेर से श्री शत्रुञ्जय तीर्थ की यात्रा के लिए छ'री पालित संघ यात्रा का सर्जन किया और अनेक भाग्यशालियों को पुण्यानुबन्धी पुण्य उपार्जित करने का स्वर्णिम अवसर उपलब्ध कराया।

जैन धर्म एवं जैन संस्कृति आप जैसे संत मनीषियों द्वारा प्रोत्साहित धार्मिक प्रवृत्तियों की प्रेरणा पर ही आरूढ़ है। एक लम्बे अरसे से जिन शासन की प्रभावना के आदर्श कार्यों के साथ तप आराधना का शानदार अवसर समाज को आपश्री ने उपलब्ध कराया। शृंखलाबद्ध उपधान तप की आराधना से हजारों आराधकों ने आत्म-कल्याण का मार्ग पाया है। श्री नाकोड़ा में उपधान तप आराधना के बाद ही महायात्रा का उपादेय संकल्प पैदा कर लाखों लोगों की आत्मा में सम्यक्त्व सुधा का सिंचन स्तुत्य है। भगवान् महावीर के सत्य अहिंसा पर आधारित भेदभाव रहित जागृति, देशव्यापी दीर्घदृष्टि, सुसंबद्ध सामाजिक जीवन में धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रगति तथा प्रत्यक्ष आचरण ही अनुकरणीय है।

इस महान् ऐतिहासिक छ'री पालित यात्रा संघ साहस सहित, सद्धर्म की एक मनोरम गाथा इतिहास का अध्याय बन गया है।

आपश्री ने इस महान् यात्रा द्वारा धर्म की दृढ़ता के लिए जैसी आस्था और आवश्यकता होती है उसका शानदार परिचय करा कर जिन शासन प्रभावना की महत्त्वपूर्ण कड़ी को उपलब्धि दी है। अभिनन्दनीय है।

हे प्रज्ञापुरुष....इन्हीं शब्दों के साथ आपश्री के चरणारविन्द में कोटिशः वंदन है।

ज्ञानचन्द नाहर अध्यक्ष	**टी. सी. जैन-केशरीचन्द कोठारी** उपाध्यक्ष	**रावतमल जैन 'मणि'** कार्याध्यक्ष
मोतीलाल बाठिया, बी.ई. कोषाध्यक्ष	**मूलचन्द बोथरा** मंत्री	**ज्ञानचन्द जैन** उपमंत्री

शान्तिविजय ज्ञान पीठ—दुर्ग

शुभ - संदेश

गत जनवरी माह में, परम पूज्य अनुयोगाचार्य श्री कांतिसागरजी महाराज की निश्रा में, बाडमेर से, करीब एक हजार यात्रियों का, तीर्थाधिराज श्री शत्रुञ्जय का, छ'री पालित जो संघ निकला था, यह जानकर प्रसन्नता हुई ।

जिन धर्म भावनाशील श्रीमानों ने इतने बड़े, 850 कि० मि० लम्बे व 52 दिन तक चलने वाले संघ का उदारता से आयोजन किया और जिन छोटी बड़ी उम्र के धर्म श्रद्धावान भाईयों-बहनों ने पैदल यात्रा करने का कष्ट उठाया, उन्होंने शासन प्रभावना का उत्तम कार्य किया है और वे धन्यवाद के पात्र हैं ।

इस संघ के स्मरण निमित्त जो स्मारिका प्रकाशित की जा रही है, वह श्री संघ को तीर्थ यात्रा की प्रेरणा देने वाली व सुन्दर हो, ऐसी मेरी शुभ कामनायें भेजता हूँ ।

भवदीय
श्रेणिक कस्तुरभाई
अध्यक्ष
सेठ आनन्दजी कल्याणजी

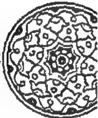
अहमदाबाद







पूज्य गुरुदव क साथ
मुनि श्री मणिप्रभसागरजी एव सघपति श्री भवरलालजी याहरा



पालीताना प्रवेश सभा में—
मगला चरण करत हुय पूज्य गुरुदव





पदयात्री सेवा मण्डल—बाडमेर

[illegible]

[illegible]





सघपति
• श्री मणिलालजी डासी
अपन उन्मुक्त
विचार प्रस्तुत
करत हुय—







कमिश्नर
श्री डी आर महता
विशाल जन-समुदाय
का पद यात्रा सघ क
वाडमर स
प्रयाण के समय
सम्बोधित करत
हुय—



तीर्थ यात्रा का महत्त्व

□ आर्या सुलक्षणा श्री

अनत उपकारी श्री तीर्थकर परमात्मा समग्र जीवो को जिनशासन के रसिक बनाने के लिए तीर्थ की स्थापना करते है।

जिससे तरा जाये उसे तीर्थ कहते है।

ऐसे तीर्थ के मुख्य दो प्रकार है :—

(1) **जंगम तीर्थ** :—साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध संघ को कहते है।

(2) **स्थावर तीर्थ** :—जो एक स्थान पर स्थिर रहता है जैसे–शत्रुञ्जय, गिरनार, अष्टापद, आवू, सम्मेतशिखर आदि। ऐसे स्थावर तीर्थो की महिमा शास्त्रों में विस्तार से बताई गई है। तीर्थ यात्रा से कैसे श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होते है, जरा देखिये---

(1) परम पवित्र तीर्थ स्थानों मे जाने से चित्त मे शुभ अध्यवसाय उत्पन्न होते है। तीर्थ की पवित्रता जीवन को पवित्र बनाती है।

(2) जहां आकर अनेक भक्त लोग भगवद् गुण की स्तुति मधुरालाप से सुन्दर भक्ति के गीत गाते है। जिसे सुनते ही अपना दिल भक्ति रस से भर जाता है और भगवद् भक्ति में एक तान वना रहता है।

(3) परम कृपालु परमात्मा की प्रशांत, मनोहर-मूर्ति के दर्शन मात्र से ही आत्मा अपनी मानसिक व शारीरिक व्यथाओ, पीड़ाओं को भूल कर कोई अलौकिक आनन्द का अनुभव करती है।

(4) तीर्थंकर प्रभु की कल्याणक भूमियो की स्पर्शना से आत्मा मे भावोल्लास की सुन्दर लहरियें उठती है जो चचल-चित्त-वृत्तियों को स्थिर और शान्त बनाती है।

(5) तीर्थभूमि के पवित्र रजकणो के स्पर्श मात्र से आत्मा कर्म रजकणों से रहित बनती है।

(6) तीर्थ स्थान मे परिभ्रमण करने वालों का भव-भ्रमण भी मिट जाता है।

(7) तीर्थ स्थान में अपनी अस्थिर सम्पत्ति का सद्व्यय करने से स्थिर और अविनाशी गुण-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

(8) तीर्थपति परमात्मा की पूजा द्वारा पूजक भी पूज्यपदवी को प्राप्त करता है।

इस तरह तीर्थ-यात्रा द्वारा आत्मा अनंत पुण्य प्राप्ति और अखूट आनन्द का अनुभव करता है।

स्थावर तीर्थ की महत्ता बतलाने के लिए स्वयम् तीर्थकर परमात्मा भी तीर्थभूमि मे आते है जैसे–-प्रथम तीर्थकर श्री ऋषभदेव भगवान् नव्वाणुपूर्व बार (84 लाख से 84 लाख का गुणाकार करने से जो सख्या आती है उतने वर्ष) शत्रुञ्जय तीर्थ पर पधारे थे और अपने निर्वाण समय को समीप जानकर अष्टापद तीर्थ पर जाकर अनशन करके मोक्ष प्राप्त किया था।

अजितनाथ भगवान् आदि 20 तीर्थंकर परमात्मा सम्मेतशिखर तीर्थ पर अनशन करके मोक्ष को पधारे थे।

श्री नेमीनाथ भगवान् पुन:पुनः गिरनार तीर्थ पर आये थे और वही निर्वाण को प्राप्त हुए थे।

श्री वासुपूज्य स्वामी भगवान् चंपापुरी में और श्री महावीर भगवान् पावापुरी तीर्थ मे अनशन करके सिद्धपद को प्राप्त हुए ।

तीर्थ–संसार समुद्र से पार उतरने वाली नौका है और श्री तीर्थंकर परमात्मा उस नाव को चलाने वाले निर्यामक (नाविक) हैं।

ऐसे महान् प्रभाविक तीर्थों की विधि पूर्वक यात्रा करने में महान् फल की प्राप्ति होती है ।

शास्त्रों में निम्नोक्त प्रकार से तीर्थ यात्रा की विधि बतलाई गई है —

(1) सचित्त (सजीव) आहार पानी आदि का त्याग ।

(2) एकासन तप (कम से कम) ।

(3) सद्गुरुओं के साथ पैदल चलना (पदयात्रा) ।

(4) जमीन पर ऊनी वस्त्रों पर शयन करना ।

(5) ब्रह्मचर्य का पालन करना ।

(6) दोनों समय (सुबह, सांय) प्रतिक्रमण करना ।

इन छः नियमों (छरी) का पालन करते हुए तीर्थ यात्रा करने से और शक्ति हो तो चतुर्विध संघ को साथ में लेकर यात्रा कराने से तीर्थंकर पद की भी प्राप्ति हो सकती है ।

श्री ऋषभदेव भगवान् के मुख से तीर्थ यात्रा का महान् फल सुनकर भरत चक्रवर्ती ने श्री शत्रुञ्जय महातीर्थ का संघ बडी ही धूम धाम से निकाला था और तीर्थ का प्रथम उद्धार भी कराया था । उनके बाद दण्डवीर्य राजा आदि ने भी संघ के साथ तीर्थ यात्रा करके तीर्थ का उद्धार कराया था । इसी तरह विक्रम महाराजा, कुमारपाल राजा, वस्तुपाल तेजपाल मंत्री आदि ने भी बड़े-बड़े संघ निकाल कर तीर्थयात्रा का महान् लाभ प्राप्त किया था ।

विधि पूर्वक तीर्थ यात्रा करने में निम्नोक्त फल की प्राप्ति होती है —

(1) आरम्भनिवृत्ति

भावुक यात्री तीर्थ यात्रा के लिए जब से प्रयाण करता है तब से सभी प्रकार के घर और व्यापार संबंधी पाप, व्यापार का त्याग करता है जिससे अशुभ विचार आने बन्द हो जाते हैं। तथा क्लिष्ट कषाय शान्त हो जाने से अशुभ कर्म का बंध भी नहीं होता है ।

(2) लक्ष्मी का सदुपयोग

तीर्थयात्रा में आया हुआ यात्री अपनी लक्ष्मी का सात क्षेत्रों में (जिनमंदिर, जिनमूर्ति जिनागम साधु साध्वी, श्रावक, श्राविका) सदुपयोग करके महान् पुण्योपार्जित करता है ।

(3) संघवात्सल्य (भक्ति)

विधि पूर्वक यात्रा करने वाले को चतुर्विध संघ की भक्ति का परम सौभाग्य प्राप्त होता है । सादर-सविनय पूर्वक साधु साध्वी महाराज आदि को आहार पानी औषध वस्त्र प्रदान करने से सम्यग्-दर्शन आदि गुणों की प्राप्ति होती है । गुरु मुख से जिनवाणी का पान करने से तत्व, ज्ञान, विवेक धर्मश्रद्धा संयम आदि गुणों की प्राप्ति सुलभ बनती हैं साथ ही अपने स्वधर्मी बंधुओं के सद्गुणों को देखकर वैसे ही गुण अपनी आत्मा में प्रगटाने के शुभ मनोरथ उत्पन्न होते हैं तथा इन गुणों के प्रति आदर सत्कार सन्मान प्रगट होता है।

(4) सम्यग्दर्शन की निर्मलता

सम्यग्दृष्टि आत्मा को तीर्थ और तीर्थाधिपति परमात्मा के दर्शन वंदन और स्पर्शना मात्र से अपूर्व भावोल्लास प्रगटता है जिससे सम्यग्दर्शन की विशुद्धि होती है । जिसने अभी तक सम्यग्दर्शन नहीं

पाया है वह भी सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकता है। तीर्थ स्थान के पवित्र वातावरण में चित्त भी प्रसन्न रहता है, प्रसन्नचित्त परमात्मा के ध्यान में मन आत्म-अनुभव प्राप्त करके आनन्द मे मग्न वना रहता है।

"शत्रुञ्जय साधु अंनता सिद्धा सिद्धशे वलीय अनत" इस शास्त्र वचन से यही रहस्य प्राप्त होता है कि तीर्थ स्थान में जाने से आत्मा की अत्यन्त निर्मलता प्रगटती है।

(5) स्वजन स्नेहियों का हित :

तीर्थ यात्रा पारिवारिक दृष्टि से भी हितकारी है। तीर्थ यात्रा के वहाने स्वजन परिजन सभी एक साथ लाभ प्राप्त करते है। घर मे रहते हुए देव दर्शन, पूजन आदि का लाभ नही लेने वाले भी तीर्थ स्थान में जाकर धर्म कृत्य करने लगते है।

(6) जीर्ण मन्दिरों का उद्धार :

तीर्थ यात्रा करने वाले सघ और सघपति वगैरह को रास्ते में आते हुए गाँवों के जीर्ण मदिर आदि के पुनरोद्धार मे तथा जहां नवीन मदिर की आवश्यकता हो वहां पर नवीन मदिर वनाने मे सम्पत्ति का सद्व्यय का शुभ अवसर प्राप्त होता है।

(7) शासन उन्नति :

चतुर्विध सघ के साथ 'छरी' पालते हुए तीर्थ यात्रा करने से गांव-गाव में जिन शासन की प्रभावना होती है, जैन जैनतरो को भी सघ के दर्शन वंदन और संघ भक्ति का लाभ मिलता है इससे जिन धर्म की प्रशसा होने के साथ-साथ पारस्परिक धर्म स्नेह भी वढता है और धर्म श्रद्धा दृढ वनती है। तीर्थ माल आदि की वोली वोल कर देव द्रव्य वढाने से, तीर्थ स्थान में याचकों को दान देने से, तीर्थ उद्धार आदि सत्कार्यो को करने से जिन शासन की महान् उन्नति होती है। संघपति व संघ यात्रियो की उदारता जिन भक्ति गुणानुराग आदि सद्गुणों को देखकर दूसरे श्रद्धालु आत्माओं के हृदय में भी ऐसे सत्कार्य करने की भावना जागृत होती है।

(8) जिनाज्ञापालन .

जिनेश्वर भगवान् ने तीर्थयात्रा को मोक्ष का प्रधान अग कहा है। ऐसा जानकर तीर्थयात्रा करने वाला जिनाज्ञा का भी पालन करता है। वीतराग प्रभु की पवित्र आज्ञा को शिरोधार्य करके अवश्य विधि पूर्वक तीर्थयात्रा करना चाहिये। शक्ति होते हुए भी जो तीर्थ यात्रा नही करता वह विराधना का भागी वनता है। "जिन पडिमा जिन सारखी कहीए सूत्र मझार" तीर्थकर भगवान् की मूर्ति तीर्थकर के समान है, इस शास्त्र वाक्य का रहस्य भावपूर्वक यात्रा करने वाले को प्रत्यक्ष अनुभव गोचर होता है।

(9) तीर्थकर नाम कर्म का बंध :

तीर्थपति परमात्मा की मूर्ति को व तीर्थपति के तीर्थ को उनके (तीर्थपति) समान ही मान कर तीर्थयात्रा करने वाला विवेकी आत्मा उत्कृष्ट भावोल्लास पूर्वक "सवि जीव करू शासनरसी' की मगल भावना से प्रभावित वनकर तीर्थकर नाम कर्म का वधन करता है।

(10) मुक्ति की समीपता :

तीर्थयात्रा करने वाले को उपरोक्त भावोल्लास किंचित न भी उत्पन्न हो सके तो भी वह आसन्न सिद्ध अवश्य वन जाता है। अर्थात् वह अल्पकाल मे ससार मे रहकर जल्दी से जल्दी सिद्ध पद को पाता है।

इस तरह आत्मा तीर्थयात्रा से मोक्ष को समीप (निकट) करता है।

(11) सुर नर पदवी :

तीर्थयात्रा करने वाला जव तक मोक्ष नही मिलता तब तक वह देव और मनुष्य में जन्म

लेता है और वहा भी उसे राजा महाराजा स्वामी इन्द्र आदि के उच्च उच्च पद को अवश्य पाता है। ऐसे व्यक्ति कभी भी दुर्गति मे नही जाते हैं। धर्म विवेक आदि गुणों की प्राप्ति होने से वैराग्य रस मे झीलता हुआ सभी भोगों का त्याग करके चारित्र का विशुद्ध पालन करने अनुक्रम से मोक्ष सुख को प्राप्त करता है।

भव्यात्माओं को ऐसे ही महान् लाभों से लाभान्वित कर आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाला इस युग का महान् प्रभावशाली संघ परम पूज्य श्रद्धेय अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी म सा के पावन सान्निध्य मे निकला था। उस महान् संघ को देखते ही बनता था। करीब 1,000 यात्रियों ने पू गुरुदेव की पावन निश्रा म विधिपूर्वक पदयात्रा कर अमूल्य जीवन भी सार्थक एव सफल बनाया। कोटिश नमन है ऐसे गुरुदेव के चरणों म तथा शत् शत् धन्यवाद है उन संघपतियों एव यात्रियों को जिन्होंने अपनी सम्पत्ति और समय का सद्व्यय कर महान् लाभ प्राप्त किया।

ये युग द्रष्टा ह सत्यव्रती
जीवन हो शीतल ज्यों चन्दन।
हो शरद् पूर्णिमा सम कान्ति गुरुश्री
नत मस्तक चरणों मे सदा वन्दन।



अगणित नयनो के सुखदाई

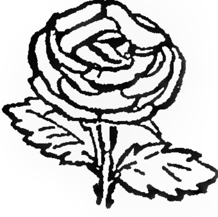
□ आर्या विद्युत्प्रभा

खरतर गच्छ शृंगार मनोहर,
अन्तेवासी हरि रत्नाकर।
जन-जन को पीयूष सिक्त कर,
बाधा है हे गुरुवर तुमने ॥१॥

जिसने दर्शन तेरा पाया,
पुण्योदय उसका प्रकटाया।
जय-जय हो हे गुरुवर तेरी,
तुमने दिव्य ज्योति प्रकटाई ॥२॥

स्व पर की भिन्नता मिटाकर,
सकल विश्व वसुधा अपनाई।
बन्धु-बन्धु हैं हम सब मानव,
तत्व घोष यह तुमने गुंजाया ॥३॥

कान्ति नाम पावन महान् है,
पुरावृत्त मे होगा उज्जवल।
श्री गुरु चरण सरोज वन्दना,
"प्रमोद" मण्डल की अहो अर्चना ॥४॥



वन्देवीरम्

तीर्थङ्कर और तीर्थ

☐ लेखिका—आर्या सज्जन श्री

प्रथम हम यहाँ तीर्थङ्कर और तीर्थ शब्द की व्युत्पत्ति पर किञ्चित विचार करे। व्याकरण शास्त्र की दृष्टि से 'तृ' प्लवन तरगयो: धातु से तीर्थ शब्द बनता है। जिसका अर्थ है तिरना। अर्थात् जिस साधना से जीव संसार समुद्र से तिर जाय उसे तीर्थ कहते है। अथवा जिस स्थान से आत्मा मुक्त हो वह भी तीर्थ कहलाता है।

तीर्थ दो प्रकार के है—जंगम और स्थावर। जंगम तीर्थ, साधु-साध्वी-श्रावक और श्राविका है जिन्हे चतुर्विध संघ भी कहते हैं। स्थावर तीर्थ दो प्रकार के है—शाश्वत तथा अशाश्वत। नंदीश्वर द्वीप आदि शाश्वत तीर्थ है और अशाश्वत तीर्थो की स्थापना समय-समय पर होती रहती है। इन सभी प्रकार के तीर्थो की महत्ता बतलाने वाले और स्थापना करने वाले श्री तीर्थङ्कर भगवान् होते है।

इस अनादि अनन्त संसार मे जड और चेतन रूप में छ: द्रव्य है—(1) धर्मास्तिकाय, (2) अधर्मास्तिकाय, (3) आकाशास्तिकाय, (4) काल, (5) पुद्गलास्तिकाय, (6) जीवास्तिकाय। इनमे मुख्य दो द्रव्य है—जीवास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय। जीवास्तिकाय चेतन द्रव्य है तथा पुद्गलास्तिकाय अचेतन। ये दोनों ही अनन्त है। अनन्त जीव सिद्ध हो चुके है और अनन्तानन्त जीव संसार में ही जन्म मरण कर रहे है। जीवों का मूल स्थान निगोद है। अनन्तकाल से कर्म अर्थात् जड़ और जीव का सयोग चला आ रहा है। इस अनादि संयोग को वियुक्त कर देने की साधना ही मुक्त होने की साधना है। जिन जीवों ने सयम तप की साधना के बल पर स्वयं को जड़ के सयोग से सर्वथा मुक्त कर लिया वे सिद्ध कहलाते हैं।

संसारी जीवों मे से कुछ जीव क्षयोपशमलब्धि से आत्म गुणो का विकास करते हुये मनुष्य गति मे आकर उत्पन्न होते है। इनमे से भी कोई विशिष्ट जीव विशेष क्षयोपशम लब्धि के कारण जिन्हे आत्म-विकास की बाह्य सामग्रियाँ यथा—जैन-कुल, सद्गुरु सयोग, धर्म श्रवण, प्रभु दर्शन, पूजन आदि की समुपलब्धि होती है। ऐसे जीव स्वभाव से ही दयालु, उदार, सरल, विनयवान् और सदाचारी होते हैं। तत्त्व जिज्ञासा उन्हें प्रगति पथ पर अग्रसर करती है। और वे स्वय भी तत्त्व-ज्ञान की प्राप्ति का प्रयत्न करते है। उनका चिन्तन आत्माभिमुखी बन जाता है। उन्हे चेतन और जड़ की भिन्नता का ज्ञान हो जाता है। वे जान-जाते है कि चेतन, नित्य, शाश्वत, अखण्ड और चिन्मय स्वरूप है। जड़—अनित्य अशाश्वत् खण्डित अर्थात् विशीर्ष स्वभावी है। वह आत्मा नही है उसमे चेतना शक्ति नही है। चेतन और जड़ का संयोग संसार भ्रमण का कारण है। जब जड़ के संयोग से चेतन सर्वथा मुक्त हो जाय तो उसका

जन्म मरण व ससार भ्रमण भी नहीं हो सकता। इसी श्रद्धा या विश्वास तथा ज्ञान को सम्यग्दर्शन सम्यग् ज्ञान कहते हैं। ऐसे सम्यक्त्वी जीव मुक्ति-पथ पर प्रस्थित हो जाते हैं। क्रोधादि कषायों और विषय विकारो को जीतते हुये उत्कृष्ट सयम तप की साधना से तीर्थङ्कर नामकर्म का बध करके जगत् की सर्वोच्च विभूति बनते हैं। केवल ज्ञान केवल दर्शन पूर्णत प्रकट हो जाते हैं। उन्हे अनुत्तर रूप सम्पदा, अनुत्तर वैभव, सुरासुर पूज्यत्त्व, चौतीस अतिशय, पैंतीस वागतिशय आदि अलौकिक शक्तियाँ समुपलब्ध होती हैं। वे चतुर्विध सघ की स्थापना करते हैं। इस सघ का ही दूसरा नाम तीर्थ है। तीर्थ निर्माण के कारण ही वे तीर्थङ्कर कहलाते हैं। जगत् के त्रिकालवर्ती भावो को जानते देखते हैं। लोक मे रहे हुये षड् द्रव्यो के गुण और पर्यायो को सप्त नय चार निक्षेप से और उनके अनन्त धर्मों मे से कतिपय धर्मों को सप्त-भगी द्वारा समझाते हैं। लोक के क्षेत्रीय वर्णन मे ऐसे स्थानो का भी वर्णन है जहाँ शाश्वत जिन विराजमान हैं। जैसे देवताओ के भुवन विमान आदि मे तथा नन्दीश्वर रूचक जम्बू आदि द्वीपों मे जहाँ जहाँ शाश्वत जिनप्रासाद हैं और उनमे 500 धनुप शरीर प्रमाण वाली मणिरत्नमय जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं। देवादि जघा-विद्याचारण मुनि और विद्याधर ही यहाँ जाकर प्रभु भक्ति का लाभ लेते हैं। यह बात आगमो मे श्री भगवती सूत्र, जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति, जिवाभिगम रायप्पसेणी आदि मे वर्णित है। ये शाश्वत तीर्थ कहलाते हैं।

भारतवर्ष मे भी वे स्थान जहाँ तीर्थङ्करों के जन्मादि कल्याणक हुये हैं वे तीर्थ रूप हैं। क्योंकि वहाँ का पर्यावरण उन महान् पुरुषो के मानसिक वाचिक तथा कायिक परमाणुओ से परिव्याप्त हैं जिनका प्रभाव दर्शकों पर पडता है। उनके विचार पवित्र बनते हैं। ऐसे स्थान भी जहाँ कल्याणक तो नहीं हुये किन्तु जहाँ से अनन्त जीवो ने मुक्ति प्राप्त की वे स्थान भी तीर्थ स्वरूप हैं। इनके अतिरिक्त अनेकों स्थान जहाँ प्राचीनतम जिनबिम्ब विराज-मान हैं वे भी तीर्थ ही कहलाते हैं। ऐसे स्थान दर्शनीय वदनीय, पूजनीय और बारम्बार स्मरणीय है।

इन सब तीर्थों मे सर्वाधिक महात्म्य शाश्वत तीर्थ शत्रुञ्जय गिरीराज का है। जिसे सब प्रथम आदि तीर्थङ्कर श्री ऋषभदेव भगवान् ने श्री भरत चक्रवर्ती के सम्मुख बतलाया था। और भरत ने चतुर्विध सघ सहित यात्रा कर जीवन सफल बनाया था। तथा जिर्णोद्धार करा कर स्वर्णमय प्रासाद निर्मित कराये और उनमे मणिरत्नो की प्रतिमायें स्थापित की। तदनन्तर इस अवसर्पिणी काल मे शत्रुञ्जय महातीर्थ के असख्य समुद्धार हो चुके हैं उनमे सोलह मुख्य माने जाते हैं। अभी वर्तमान मे सोलहवाँ उद्धार डोसी कर्माशाह का है।

श्री शत्रुञ्जय तीर्थ की महिमा का वर्णन आगमो से लेकर जैन साहित्य की विविध विधाओ मे भक्ति भाव पूर्वक वर्णित हुआ है और आधुनिक युग मे भी भक्त कवि अपने काव्यो मे शब्द बद्ध करते रहते हैं। शास्त्रीय सगीत से लेकर साम्प्रतिक फिल्मी गीतो और लोक गीतो की तर्जों तक मे शत्रुञ्जय तीर्थाधिराज के स्तवन यहाँ के वातावरण मे सदा गूजते रहते हैं।

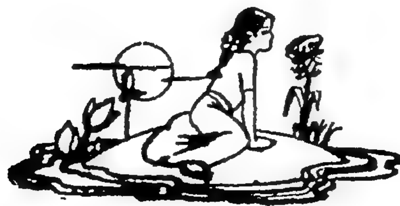
तीर्थ तो अनेक हैं किन्तु इस शत्रुञ्जय महातीर्थ का महत्त्व तो कुछ अद्भुत ही है। क्यो न हो— जहाँ अनन्तानन्त आत्माओ ने साधना कर सिद्धि प्राप्त की है। भगवान् श्री ऋषभदेव जहाँ पूर्वनन्वाणुवार समवसरे है। भगवान् नेमिनाथ के अतिरिक्त तेवीस ही तीर्थङ्कर यहाँ पधारे हैं। श्री अजितनाथ भगवान् एव श्री शान्तिनाथ भगवान ने तो वर्षावास स्थिति की है। श्री पुण्डरीक गणधर पाच कोटि मुनिवरो के साथ मोक्ष पधारे

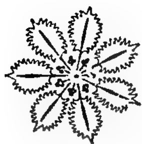
हैं। कहाँ तक वर्णन करे इस पावन भूमि का एक-एक कण अत्यन्त पवित्र है। यहाँ ऐसा कोई स्थान नही, जहाँ से अनन्तात्मा सिद्ध न हुये हो। यहाँ का अणु-अणु उन महान् आत्माओ के आत्मानुरस से ओतप्रोत है अतः यहाँ के वातावरण मे पवित्रता, निर्मलता और विशुद्धता के साथ कुछ ऐसी अद्भुत विशेषता है कि दर्शको की भक्ति विनम्र कोमल हृदय भूमि मे वोधि-बीजाङ्कुर प्रस्फुटित हो जाते है और वे स्वरूपानुभव के आनन्द से भर उठते है और उनके अनेक भवार्जित पापकर्म क्षण मात्र मे विनष्ट हो जाते है।

अतएव त्रैलोक्य पूज्य तीर्थङ्करो ने जगम तीर्थ-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध सघ को इन स्थावर तीर्थो की उनमे भी विशेषतः श्री शत्रुञ्जय तीर्थ की नव्वाणु यात्रा चातुर्मास स्थिति और वहाँ रहकर विशिष्ट तप करने का पावन उपदेश दिया है। तद्नुसार अनेक आसन्न भव्य प्राणिगण यहाँ विभिन्न धर्म कृत्य—दान, शील, तप भावनादि करके अपनी उपलब्ध शक्तियाँ—धन, वैभव, सत्ता सम्पत्ति आदि का सदुपयोग कर मानव जीवन को सफल बनाते है।

वर्तमान मे भी अनेक शासन प्रभावक आचार्य उपाध्याय गणि पन्यास आदि महापुरुष छ.री पालित संघ अर्थात् (1) एकासन भोजन, (2) सचित्त परिहार, (3) पदचारिता, (4) भूमि शयन, (5) शुद्ध सम्यक्त्व धारण और (6) ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये सघ के साथ हजारो मील चलकर इन पावन तीर्थ की यात्रा करते है। ऐसी सघ यात्राओ से जैन जगत का इतिहास भरा पड़ा है। सघ यात्रा के साथ तीर्थ दर्शन, पूजन और भक्ति करके भव्यजन मानव जन्म सार्थक करते हुये मुक्ति मार्ग की ओर अग्रसर होते है।

श्री खरतरगच्छ की सुविहित परम्परा के इतिहास के स्वर्ण पृष्ठ ऐसी अनेक तीर्थ यात्राओं के वर्णन से अकित है। 1000 वर्ष से खरतरविरुद प्राप्त अनेक आचार्यादि की प्रेरणा से भाग्यशाली नर-नारी रत्नो ने छ री-पालित सघ लेकर इस महान् तीर्थ की यात्रा की है। वर्तमान में पूज्य प्रवर शासन प्रभावक प्राज्ञ पुरुष अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी म० सा० की पुनीत प्रेरणा और अध्यक्षता मे मरुधर स्थित बाड़मेर नगर से अभूतपूर्व छ.री पालित संघ यात्रा हुई उसकी अपूर्व शोभा व्यवस्था आदि अत्यन्त सुन्दर व अनुपम थी जो अवर्णनीय है। अनुमानतः शताधिक वर्ष पश्चात् खरतरगच्छ में यह संघ यात्रा हुई जो अपने आप मे एक ही थी। इसका अंकन इतिहास के स्वर्ण पृष्ठो पर चिरकाल पर्यन्त रहेगा। गच्छ गुरुदेव श्री कान्तिसागरजी म० सा० एवं भाग्यशाली सघपतियों की कीर्त्ति पताका को दिग-दिगन्तरो मे फहराता हुआ जैन-शासन की जयवन्तता का उद्घोष प्रसारण करता रहेगा।





श्रद्धास्पद शत्रुञ्जय

□ दिव्य विभूति पूज्य श्री प्र प्रमोद श्री जी म सा की

बाल शिष्या "विद्युत प्रभा श्री",

बाडमेर

डूबते हुये समुद्र मे जिस प्रकार काष्ठ का टुकडा बचाने मे सहायक हो सकता है उसी प्रकार तीर्थ भी इस अथाह भीषण अगाध ससार से तिरने मे सहायता प्रदान करता है। चौरासी लक्ष जीवायोनियों मे भटकते प्राणी ने अज्ञानतावश न जाने कितने पाप कर्मों द्वारा अपनी आत्मा को भारी बना लिया है। कितने कर्म परमाणुओ ने इस आत्मा को मलिन बना दिया है और सर्वविदित है कि भारी वस्तु रसातल मे ही पहुँचती है। उर्ध्वगमन आत्मा का मुख्य स्वभाव है, परन्तु जब तक वह हल्की नही होगी ऊपर उठना उसके लिये असभव है। तीर्थ मे यह शक्ति है कि बडा मे बडा हत्यारा भी भावपूर्वक उसकी वदना मे भव मुक्त हो जाता है। जरूरत है उसके विवेक की एव भावनाओ की। जिस प्रकार शरीर का सबसे अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भाग (Important Part) मस्तिष्क (Brain) है, हमे वह कुछ करता प्रतीत नही होता फिर भी सारी क्रियाओ का सचालक मस्तक है। ठीक उसी प्रकार हम कितनी ही धर्म क्रियायें करें, जहा तक हमारे विचार शुद्ध न हो हमारी भावनायें निर्मल न हो, हम विवेक द्वारा अभिसिञ्चित न हो, धार्मिक क्रियायें जीवन यात्रा को सुखद बनाने के लिये सक्षम न हो सकेंगी।

सीढ़ियों की आवश्यकता

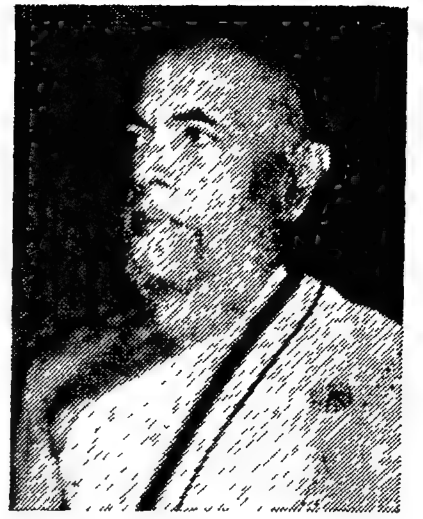
आलीशान सप्तमजिल बगला बना हुआ है। उसका स्वामी सर्वोपरि मजिल पर पहुँचने के लिये लालायित है परन्तु जब तक ऊपर चढने के लिये सीढिया न हो क्या तब तक उस स्थिति मे वह व्यक्ति ऊपर पहुँच सकेगा ? नही। उसी प्रकार अगर हमे भव मुक्त होना है सिद्ध शिला तक की मजिल तय करनी है, तो कितनी सीढियो की आवश्यकता है ? जब तक साधक के समक्ष साधना के उपाय प्रस्तुत नही हो तब तक वह अपनी साधना के चरमोत्कर्ष तक नही पहुँच सकता। "तीर्थयात्रा" भी एक महान् साधन है। अनेक भूले भटके पथिकों ने तीर्थों की वदना कर नूतन मार्ग दर्शन प्राप्त किया है। भारतीय सस्कृति के प्रतीक इस समूचे भारत मे कितने ही तीर्थ हैं जिनमे सिद्धाचल तीर्थाधिराज मुख्य है। इसी तीर्थ के ऊपर कितनी ही महान् आत्मायें उर्ध्वगति को प्राप्त कर चुकी हैं, कर रही हैं और भविष्य मे भी करेंगी। यह तीर्थ जिनेश्वरो के पावन चरणो द्वारा पावन हैं। मुनि पुङ्गवो की पीयूषवाणी आज भी उस प्रात मे गुजरित हो रही है। चुम्बकीय आकर्षण लिये नित्य प्रति लक्षाधिक यात्री इस तीर्थ के दर्शन करते हैं। भारतीय ही नही अपितु विदेशी पर्यटक भी यहा आकर सिद्धाचल की महिमा, इसकी महान् समृद्धि, देखकर आश्चर्यान्वित हो दातो तले अगुली दबाने लगते हैं। पूजा के लिये कतारो मे खडे रहकर प्रतीक्षा करनी पडती है। विशेष उत्सव (function) पर तो यहाँ यातायात की भीड सी लग जाती है। और उनकी सुविधा के



गणाधीश पू. श्री उदयसागरजी
महाराज

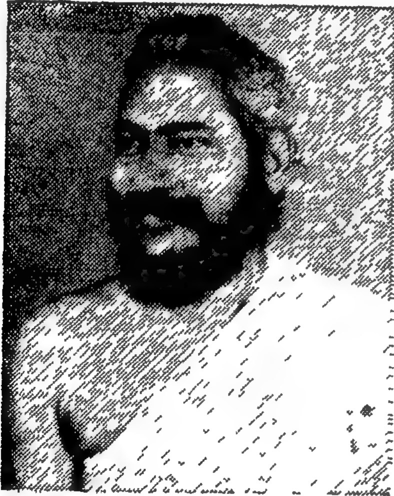


उपाध्याय श्री अमर मुनिजी
महाराज

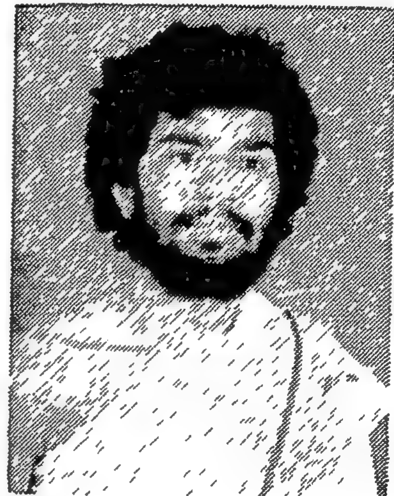


पू. आचार्य देव श्री यशोभद्र
विजयजी महाराज

पदयात्री संघ
के
सहयोगी
व
आशीर्वाद-दाता



पू. मुनिराज श्री जिनचन्द्र
विजयजी महाराज



मुनि श्री मणिप्रभ सागरजी
महाराज

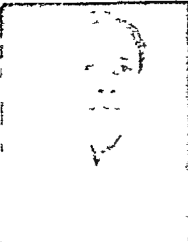


विदुषी आर्या श्री मनोहर श्रीजी
महाराज





साध्वी श्री सुलोचना श्रीजी
महाराज



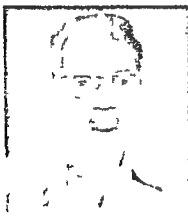
श्री भँवरलालजी बोहरा
बाड़मेर
(संघ के प्रमुख आयोजक)



श्री कमलसिंहजी दूधड़िया
कलकत्ता
(प्रथम संघपति)

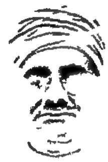


श्री मणिलालजी डोशी
दिल्ली
(फल चुनड़ी के आयोजक)



श्री धर्मचन्दजी छाजेड़
बाड़मेर

यात्री संघ के संघपति



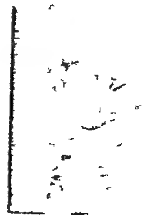
श्री कुन्दनमलजी मेहता
इन्दौर



श्री मिश्रीलालजी नाहटा
शाहदा



श्री आदमलजी बोहरा
बाड़मेर



श्री पुरुषोत्तमजी माहेश्वरी
बाड़मेर



श्री दीपचन्दजी गोलेच्छा
ऊँटी



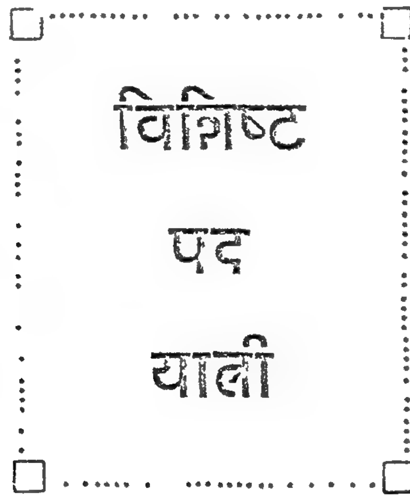
श्री शंभुमलजी रांका
ब्यावर



श्री धनराजजी गोलेच्छा
ऊँटी



सौं. कचनबाई कोचर
फलौदी





सौं. सम्पतबाई गोलेच्छा
ऊँटी



सौं. सुशीलादेवी बाबूलालजी
पडाइया. बाडमेर

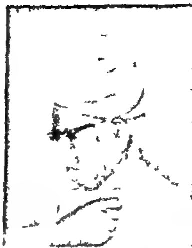


श्रीमती मनोहर बाई [illegible]
दुर्ग



[illegible] रांका
ब्यावर


श्री लूणकरणजी छाजड
बाडमर


श्री जीवणमलजी छाजड
बाडमर


श्री भँवरलालजी सठिया
बाडमर

याली सघ के सघपति

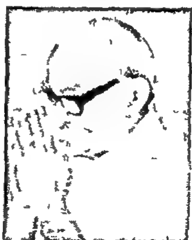

श्री द्वारकादासजी राठी
बाडमर


श्री साहनराजजी लाढा
पाली


श्री भँवरलालजी डागी
बाडमर




श्री भँवरलालजी बाथरा
बाडमर


श्री जवाहरलालजी रायधान
दिल्ली


श्री जठमलजी गालरछा
मद्रास

लिये यहां अनेक भाविकों ने अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग कर धर्मशालाएं वनवादी है। जिसमे "हरि विहार" भी मुख्य है। "पापी अभवि नजरें न निरखे हिंसक पण उद्धरिये शत्रुञ्जय गिरि यात्रा नवाणुं करिये" उदात्त भावना सह परम पावन सिद्धाचलेश्वर आदिनाथ के पावन चरणों-त्पलो शत्-शत् नमन सह मैं अपनी इस तुच्छ लेखनी को विराम देती हूं।

जय गुरुदेव ! जय गुरुदेव !! जय गुरुदेव !!!

• • •

गच्छ शिरोमणि के गुण गाये

□ आर्या मनोहर श्री

गाये हम सब गाये,
गच्छ शिरोमणि के गुण गाये।
आये दूर से आये,
देने बधाई गुरुवर दूर से आये ।।

शुष्क धरातल को सरस बनाया,
जैन शासन का शान बढ़ाया।
सुषुप्त जन मानस को जगाये.........।। आये० ।।

मधुर मनस्वी सरल स्वभावी,
प्रखर प्रेरणा परम प्रभावी।
दर्शन से मन झूम उठा है.........।। गाये० ।।

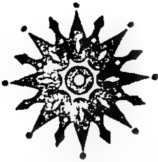
धार्मिक कृतियों का पार न पाये,
अपूर्व छटा संघ की मन भाये।
पावन निश्रा कान्ति सुहाये.........।। गाये० ।।

बाड़मेर संघ का भाग्य खिला है,
अनुयोगाचार्य का साथ मिला है।
संघ चतुर्विध सिद्धगिरि जाये.........।। आये० ।।

तब आदेशानुरूप मिलन है,
हर्षित मन प्रमुदित जीवन है।
भक्ति सुमन मनोहर वंदन है.........।। गाये० ।।

तर्ज—जागो मोहन प्यारे.................

□ □ □



भारतीय मुनि श्री
कांति सागर जी

एक मवेदनशील व्यक्ति

☐ डॉ शशि जैन

'धार्मिक सद्भावो एव सव धम मम वय' के प्रति समर्पित भारतीय मुनि श्री काति सागर जी का सवेदनशील व्यक्तित्व बेजोड है और हर व्यक्ति चाहे वह जैन कहलाता हो या हिन्दू, सिख, ईसाई, पारसी अथवा मुसलमान उनमे प्रभावित हुए बिना रह नही पाता। मुनि श्री कहते ह "धार्मिकता को तो प्रगाढ प्रेम, मैत्री और परस्पर सहयोग से बढाना चाहिए। प्रगाढ प्रेम की भावना ही हमारी शक्ति का कारण है और इसी शक्ति मे राष्ट्रीय समृद्धि निहित है"। उनका यह कथन अपूव समन्वय भारतीय चेतना मे निहित एक गभीर सत्य को परिलक्षित करता है।

भारत के जिस भी कोन मे अनुयोगाचाय श्री कातिसागर जी को जिस किसी ने भी सुना है, देखा है, अनुभव किया है कि उनने अपने चारा ओर कोई भी सकीर्ण साम्प्रदायिक दायरा नही बनने दिया। कई सावजनिक प्रवचना मे उन्होने कहा "भारत के ही नही, सार ससार के धर्मों के मूल सिद्धात एक है—मनुष्य अच्छा मनुष्य बन और सारे मानव समाज को प्रेम तथा बधुत्व की भावना से समृद्ध करे।'

कृष्ण जन्माष्टमी पर अनुयोगाचार्य का दिया गया प्रवचन का एक-एक शब्द धार्मिकता की बुनियाद का विश्लेषण करता है। वस्तुत अनुयोगाचाय से भारतीय मानस के तत्वा को इतने निकट से देखा परखा है कि उसकी सफलतापूवक लोक मागलिकता की ओर उन्मुख कर देने को व्यग्र प्रतीत हाते हैं।

अनुयोगाचाय सवत् 1978 को राजस्थान (रतनगढ) मे जन्मे, छोटी वय मे ही घर परिवार की चहार दिवारी से बाहर आ गए और सारे देश को अपना परिवार बना लिया। प० पूज्य श्री जिन हरिसागरसूरीश्वर जी म सा की पारखी नजरों ने जिन शासन की प्रभावना म सुवासित होने वाले पुष्प को पहचान लिया। आध्यात्म की भूख बचपन मे ही थी, वह उत्तरोत्तर बढती ही गई। जैन धम का उन्होने गहन अनुशीलन किया, अन्य धम ग्रन्थो का स्वाध्याय किया। उन्होने एक सच्चाई को उजागर किया—जैन धम मे विश्व धम होने की क्षमता है। अहिंसा का अथ है, प्रेम और सारे धम यदि वे वास्तव मे धम ह, तो प्रेम की आधार शिला पर ही प्रतिष्ठित हो सकते हैं।

पूज्य गुरुदेव श्री जिन हरिसागर सूरि जी की निश्रा मे ये जैन धम के आचार मूलक सिद्धान को रोम-रोम मे समाविष्ट कर धम का प्रचार करने के लिए अग्रसर हो गए। कठार साधना के साथ जन-जन तक प्रेम का महान् सदेश पहुचाने उन्होने सारे देश की परिक्रमा की। इस परिक्रमा मे जिन शासन की अभूतपूव प्रभावना भी की। जिन मदिरा की प्रतिष्ठा, दादावाडियो का निर्माण, उपधान तप की आराधना, विभिन्न जैन पर्वो पर उत्साहित अनुष्ठान आराधना, दादा जयती के अलावा सामाजिक मतभेदो की गहरी खाइयो को पाटकर आत्मकल्याण का माग प्रशस्त करने की ऐतिहासिक कार्यान्विति उल्लेखनीय है। यही

कारण है कि महीदपुर (मालवा), खेतिया (खानदेश) खामगांव, पायधुनी, (वम्वई), ठाणा, पालीताना, वीकानेर, फलोदी पार्श्वनाथ, राणकपुरजी उदयपुर, आर्वी, भद्रावती (भाँदकजी), कुल्पाक जी, चांदा, गुंटुर, विजयवाड़ा, राज महेन्द्री, मद्रास, कडलूर, सेलम, रामेश्वरम्, कन्याकुमारी, कोचीन, ऊटी, कालीकट, मैसूर, हैदरावाद, वाडमेर, नाकोड़ा जी, जैसलमेर, ओसिया, फलोदी, जयपुर, पाली, जोधपुर, नागौर, ब्यावर, अजमेर, ग्वालियर, कानपुर, वाराणसी, राजगृही, पावापुरी, सम्मेतशिखर, कलकत्ता आदि स्थानो मे अनुयोगाचार्य जी के हस्ताक्षरित कृति दस्तावेज अमूल्य सम्पत्ति है।

अनुयोगाचार्य जी अत्यन्त ओजस्वी वक्ता है। भाषा पर उनका असामान्य अधिकार है। धारा प्रवाह वोलते है। धर्म के सूक्ष्म सिद्धांतो का निरूपण वे इस प्रकार करते है कि सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी उन्हे सहज ही समझ सकता है। वे तात्विक विवेचन करते है। विषय कैसा भी हो किन्तु जितनी सहजता से वे प्रतिपादित कर देते है आश्चर्य होने लगता है। अनुयोगाचार्य जी ने जहां मानव चेतना को प्रवुद्ध करने के लिए अपनी उदात्त वाणी का सदुपयोग किया, वही धर्म प्रचार के लिए साहित्य को माध्यम वनाया। साहित्य मदिर की पूजा मे उनके शिष्य श्री मणिप्रभ सागर जी एक सुन्दर भेंट होगे यह विश्वास होता है।

अनुयोगाचार्य जहा जैन साधुओं की चर्या विधानो की कट्टरता से पालन करते है वही अन्य सामान्यो के साथ सुख-दुःख मे ओतप्रोत हो जाते है। उनके सतत् प्रयासो मे मानवता की सेवा प्रमुख है।

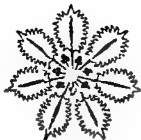
अनुयोगाचार्य जी को यदि प्रेम की साकार प्रतिमा कहूं तो गलत न होगा। विद्वानों तथा समाजसेवियों का वे मुक्त हृदय से आदर करते है। छोटा, वड़ा, धनी, गरीव की दूरी की रेखा वे कभी न खीच सके। "जैन श्री" मासिक पत्र और उसके सम्पादक मण्डल को जैन साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए जिस उदारता से प्रोत्साहित किया उससे समूचा जैन समाज लाभान्वित हो रहा है। अन्यथा आसाम की वादियो मे जैन परिवारो को जिनवाणी का सदेश न मिल पाता। इसीलिए जैन श्री ने आपको सर्व प्रथम प्रज्ञा पुरुष कहकर संवोधित किया जो शब्दशः सत्य है।

अनुयोगाचार्य जी को कई उपाधियों से अलकृत किया गया है। उनकी विद्वता के लिए 'जैन साहित्य शिरोमणि' तथा 'अनुयोगाचार्य' आदि अनेक उपाधि प्रदान कर जैन समाज ने अपने को गौरवान्वित किया है। किन्तु मेरी यह मान्यता है कि उनका व्यक्तित्व इन उपाधियो से कही ऊंचा है, उनके नाम के दो शब्द 'कान्ति' तथा 'सागर' उन्हे ऐसे स्थान पर आसीन कर देते है, जहां कोई भी उपाधि उन्हे नही विठा सकती है।

अनुयोगाचार्य जी के प्रेरक व्यक्तित्व से उपधान तप तथा छंरी पालित यात्रा सघो के हजारो आराधनार्थी लाभान्वित हुए है और आत्म-कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रहे है। इन्ही शब्दों के साथ भारतीय मुनि अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागर जी म. के चरणो में वदन करती हूं।

वांध लिया है अखिल विश्व को सहज भाव से तुमने,
जय घोष सुनाती जिनकी विजय सत्य की वाणी।
संत मनीषी में तुमने भेद न कोई जाना,
इतनी परम उदार सुहृदय वोली तेरी जन कल्याणी॥

—मणि



प० पू० अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी म० की निश्रा मे

बाड़मेर से पद यात्री सघ का ऐतिहासिक प्रयाण

बाडमेर की जनता द्वारा उपकारी गुरुदेव को भावभीनी विदाई

भारत की पश्चिमी सीमा का सजग प्रहरी बाडमेर जिला प० पू० गुरुदेव महान् उपकारी अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी महाराज का सदैव ऋणी रहेगा। उन्होंने इस जिले की जैन समाज सहित समस्त कौमो पर अपनी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व की छाप डाली है और उन्हे धर्म माग की प्रेरणा दी है। आपके उपदेशो से नाकोडा तीथ मे अब तक 5 उपधान आपकी ही निश्रा में हो चुके हैं। अनेको सार्वजनिक प्रवचनो का जनता लाभ उठा चुकी है। चातुर्मास मे बाडमेर मे अपूव तपस्यायें हो चुकी हैं। इसी जिले का सौभाग्य रहा है कि महान् प्रतापी जैनाचार्य दादा श्री जिनकुशल सूरिजी की जन्मभूमि भी इसी जिले के गढ सिवाना मे है। प० पू० बहुमुखी प्रतिभा के धनी अनुयोगाचाय श्री कान्तिसागरजी महाराज की प्रेरणा पाकर सर्वप्रथम धर्मनिष्ठ श्री नवरलालजी बोहरा तथा उनके साथी बाडमेर से पालीताणा महातीर्थ के छहरी पालता यात्रा सघ के निकालने के शुभ कार्य मे तन मन-धन से जुट गये। इसके अलावा इस काय को सफल बनाने के लिए बाडमेर सघ के अनेक लोगो ने रात दिन एक करके सराहनीय सेवाएँ प्रदान की हैं। पद यात्रा सघ प्रयाण का कायक्रम निश्चित होने पर बाडमेर सघ के पाँच व्यक्तियो का प्रतिनिधि मण्डल श्री नैनमलजी भँसाली के नेतृत्व मे प० पू० गणाधीश श्री उदयसागरजी महाराजादि मुनि मण्डल, प्रवर्तिनीजी एव साध्वियो की सेवा म विनती करने हेतु देश के विभिन्न स्थानो पर पहुँचा। सभी स्थानो पर प्रतिनिधि मण्डल का अच्छा स्वागत हुआ। पदयात्रा सघ की अनुमोदना की गई। शासनदीपिका छत्तीसगढ रत्न शिरोमणि श्री मनोहरश्रीजी ठा० 17 ने तत्काल सघ मे शामिल होने की स्वीकृति प्रदान कर दी। इसी प्रकार कई मुनि भगवन्तो एव साध्वीजी महाराजो की स्वीकृति प्राप्त कर प्रतिनिधि मण्डल सहष बाडमेर पहुँचा।

बाडमेर मे इस प्रकार के विशाल ऐतिहासिक यात्रा महासघ के निकलने का पहिला ही अवसर होने से बडे उल्लास के साथ जोर-शोर से तैयारिया की गई। देश भर के कोने-कोने मे हजारो पोस्टर, पत्र एव आमत्रण पत्रिकाएँ भेजी गई और पूर भारत के सघो को आग्रहपूण आमत्रण भेजे गये। थोडे ही समय मे बाडमेर-पालीताना पद यात्रा सघ प्रयाण के समाचारो की देश भर मे "चलो

पालीतानी" से धूम मच गई। आकाशवाणी केन्द्रों, समाचार-पत्रों ने इस शुभ समाचार का प्रसारण किया।

नये मार्ग क्षेत्र का चयन :

प० पू० अनुयोगाचार्यजी की दूर दृष्टि और शासन प्रभावना की अनुपम भावना ने पद यात्रा संघ आयोजक और प्रवर्तक मडल को मार्ग दर्शन दिया फलस्वरूप सर्वथा नवीन मार्ग क्षेत्र का चयन कर ऐसे छोटे-छोटे ग्राम-नगरो को मार्ग मे लाभ देने का निश्चय किया गया जो कि अब तक लाभ से सर्वथा वंचित रहे हैं।

मार्ग का पूरा विवरण एवं पद यात्रा संघ के विश्राम स्थल का पूरा विवरण इसी अक मे है। मार्ग के सभी ग्राम-नगरो मे इस महान् ऐतिहासिक पद यात्रा संघ के समाचार पाकर खुशियाँ छा गई और भव्य स्वागत-सम्मान के लिए असीम उत्साह एव तैयारियो के समाचार मिले।

पालीताना में खुशी की लहर :

प० पू० बहुमुखी प्रतिभा के धनी अनुयोगाचार्य 1008 श्री कान्तिसागरजी महाराज की पावन निश्रा मे इस विशाल ऐतिहासिक पद यात्रा सघ के पालीताना पदार्पण का समाचार पाकर देश की जनता खुशी से झूम उठी अनेक प्रकार से स्वागत व्यवस्थाएँ की गई। इस शुभ अवसर पर पद यात्रा सघ के प्रवेश पर पालीताना एवं पधारने वाले यात्रालुओ के लिए फले चुनदड़ी-नवकारशी का आयोजन प्रवेश महोत्सव के उपलक्ष मे किया गया।

पद यात्रा संघ का भव्य प्रयाण :

वाडमेर जैन न्याति नोहरा से बड़े समारोह-पूर्वक प० पू० अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी महाराज की पावन निश्रा मे मुनि मण्डल तथा श्रावक-श्राविकाओ ने माघ सुदी 15 गुरुवार तारीख 31-1-80 को शुभ मुहूर्त मे पद यात्री सघ मे प्रस्थान किया। प्रस्थान का जुलूस वड़ी धूमधाम से रवाना हुआ। जैनध्वज लिए मरुस्थल की प्रसिद्ध सवारी ऊँटों पर सवार, नगाड़े, बीजापुर का अमृत वैण्ड, वाड़मेर का महावीर वैण्ड, कान्ति जैन मण्डल एव विमल जैन मण्डल के बालक जैन झण्डे लिए हुए चल रहे थे। सजे हुए घोड़े, हाथी, भजन-मण्डलियाँ प० पू० अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी महाराज मुनि मण्डल देश के कोने-कोने से पधारे हुए खरतरगच्छ के अनेक आगेवान वाड़मेर नगर के हजारों जैन-जैनेतर, तखतगढ़ से आये हुए सुन्दर रथ मे प्रभु आदिनाथ, पार्श्वनाथ नवपद गट्टाजी, पंचतीर्थी शोभायमान थे। साध्वी मण्डल, हजारों महिलायें मंगल गान-गाती हुई इस विशाल जुलूस की शोभा वढ़ा रही थी। बाड़मेर के बाजार इस उपलक्ष में बन्द रखे गये। जगह-जगह गहुलियाँ की गईं। अपने प्राणो से प्यारे गुरुदेव श्री कान्तिसागरजी महाराज तथा इस महायात्रा संघ प्रयाण समारोह मे मानों वाड़मेर नगर ही उमड़ पड़ा था। फुटपाथ मार्ग और मकानो के आगे नर-नारी वड़ी सख्या मे एकत्रित थे। पू० गुरुदेव एवं संघ की जयजयकार कर रहे थे। वाडमेर मे यह दृश्य एक अनुपम ऐतिहासिक महोत्सव था। ऐसा विशाल जन-समूह इससे पहले किसी समारोह मे कभी नही दिखाई दिया।

भव्य विदाई समारोह :

बाड़मेर नगर की सीमा पर चौकी चुंगी के समीप प० पू० गुरुदेव चारित्र चूड़ामणि श्री कान्तिसागरजी महाराज तथा पालीताणा यात्रा सघ को विदाई देने हेतु भव्य विशाल पडाल सजाया गया था। यहाँ लगभग तीस हजार नर-नारियो की विशाल उपस्थिति थी। इस समारोह की अध्यक्षता श्री फतहसिंहजी चारण जिलाधीश बाड़मेर ने की। मुख्य अतिथि के रूप मे

श्री देवेन्द्रराजजी मेहता कमिश्नर राजस्थान सरकार पधारे। मंगलाचरण के बाद श्री अ० भा० जैन श्वे० खरतरगच्छ महासंघ के सहमन्त्री श्री गुमानमलजी मालू ने महासंघ की ओर से प० पू० गुरुदेव श्री अनुयोगाचार्य कान्तिसागरजी का गुणगान किया यात्रा संघ की मंगलकामना की तथा नूतन दीक्षित मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी का अभिनन्दन किया। नव दीक्षित मुनिश्री को खरतरगच्छ महासंघ के कोषाध्यक्ष सेठ मणीलालजी डोसी ने महासंघ की ओर से चादर ओढाई।

पद यात्रा समिति के अध्यक्ष श्री हस्तीमलजी पडाइया ने मुख्य अतिथि श्री मेहता साहब, अध्यक्ष जिलाधीश चारण साहब सेठ मणीलालजी डोसी का पुष्पहार पहनाकर अभिनन्दन किया।

सेठ मणीलालजी डोसी की ओर से बाडमेर के जैन मन्दिरों, स्थानक गुरुद्वारा, मस्जिद वैष्णव मन्दिरों विद्यालयों, अस्पतालों गोशाला, कबूतर-खाना, जैन नवयुवक मण्डलों को धनराशि देने की घोषणा करके सब धर्म समभाव का अनूठा परिचय दिया जिसकी सभी ने सराहना की।

सेठ मणीलालजी डोसी ने खरतरगच्छ महासंघ की ओर से यात्री संघ की मंगल कामनाएँ की और कहा कि इस सबका श्रेय प० पू० अनुयोगाचार्यजी श्री कान्तिसागरजी को है। बाडमेर में किए हुए छत्तीस चौमासों पर किये हुए उपकारों की चर्चा की और यात्रियों से अनुरोध किया कि वे सभी अपने को संघ के संघपति समझें और मार्ग में आने वाले कष्टों को भुला दें। यही आपसे निवेदन है।

यह पद यात्रा संघ क्यों ?

विदुषी साध्वी श्री विद्युतप्रभाश्रीजी ने अपनी ओजस्विनी वाणी में फरमाया कि पद यात्रा संघ का बड़ा महत्त्व है। पू० अनुयोगाचार्यजी का अनन्य उपकार है कि हम सबको ऐसा स्वर्णिम अवसर प्रदान दिया। साध्वीजी ने यात्री संघ के लिए भी मंगल-कामनाएँ की।

पुलिस अधीक्षक श्री मीनाजी ने यात्री संघ के लिए मंगल कामनाएँ करते हुए प्रशासन के सहयोग का आश्वासन दिया। श्री वल्लभचन्दजी मसाली ने पू० अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी की सेवाओं की सराहना की। श्री कल्याण जैन मण्डल की ओर से मार्मिक विदाई गीत गायन हुआ —

उपकारों की तो है बड़ी कहानी,
आपकी महिमा किसी ने न जानी।
जावे गुरुवर भूल न जाना,
फिर चौमासे बाडमेर आना॥
आज विदाई दे गुरुवर को,
आये नैना भर-भर हमारी।
कान्तीसागरजी तोडने चाल्या,
आप गुरुवर प्रीति हमारी॥

मुख्य अतिथि श्री देवेन्द्रराजजी मेहता ने कहा कि देश में पद यात्रा की परम्परायें महान् उद्देश्य को लेकर चलती रही हैं। आपकी यह यात्रा अहिंसा अपरिग्रह के सिद्धान्तों का प्रचार करने में सफल सिद्ध हो।

जिलाधीश श्री फतेसिंहजी चारण ने कहा कि बाडमेर से विशाल यात्रा का प्रारम्भ होना गौरव की बात है। इसके लिए यात्रा संघ के प्रेरक और आयोजक धन्यवाद के पात्र हैं। आपकी यह यात्रा मंगलमय हो।

श्री आदीश्वर जैन मण्डल की ओर से श्री वशीधरजी तातेड ने पालीताना यात्रा संघ में चलने का आह्वान गीत प्रस्तुत किया—"सगला पालीताना हालो दर्शन आदिनाथरा पालो हालो हालो पालीताना ।"

बाडमेर श्री संघ एवं बाडमेर पालीताना पद यात्रा समिति के अध्यक्ष श्री हस्तीमलजी पडाइया ने धन्यवाद दिया।

प० पू० अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी महाराज ने फरमाया कि "·······आत्मबल से मनुष्य सब कुछ कर सकता है। जो मनुष्य अपने आदर्श, सिद्धान्त पर रहने वाला है वही मानवता निभाने वाला सच्चा मानव है। आप अरिहन्त के भक्त, नमोकार मन्त्र के उपासक, भ० महावीर के अनुयायी है, आपके हृदय मे मानवता कूट-कूट कर भरी होनी चाहिए। भ० महावीर के श्रावक-श्राविका मानवता को नही भूलते है। पूज्य गुरुदेव ने आगे फरमाया कि सभी यात्री कुल मर्यादा के साथ देव, गुरु, धर्म के प्रति श्रद्धा रखें। यात्रा मे कठिनाइयो और कष्टों की चिन्ता न करें। अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु पच परमेष्ठी के आराधकों से कष्ट दूर रहेंगे। अन्त में आपने बाडमेर के सभी नागरिको को परोपकार, सदाचार तथा आपसी सहयोग की प्रेरणा देते हुए सभी के लिए मंगल-कामनाये कीं।

यात्री संघ ने नवकार मन्त्र स्मरण तथा दादा गुरुदेव एवं उपकारी गुरुवर श्री कान्तिसागरजी महाराज की जयजयकार के साथ अपनी लगभग 800 कि० मी० महान् पद यात्रा के लिए प्रयाण किया।

यात्री संघ के प्रथम मुकाम 14 कि० मी० दूर विदाई देने के लिए 3 हजार नर-नारी पैदल पहुँचे थे। यह यात्रा सघ मार्ग मे धर्म प्रभावना करता हुआ आनन्दपूर्वक आगे बढ़ता रहा है। ❖

त्याग का आनन्द

भूपला मंत्रीश्वर वस्तुपाल की वफादार और विश्वास पात्र सेविका थी। मंत्री वस्तुपाल और तेजपाल ने एक बार शत्रुञ्जय का संघ निकाला। साथ में हजारो यात्री थे। सघ के इन हजारों यात्रियो की एक ही तमन्ना थी। तीर्थाधिपति भगवान् आदिनाथ के दर्शन कर जीवन को धन्य बनाने की।

संघ चलते हुये शत्रुञ्जय तीर्थ पहुँचा। यात्रियो की लम्बे समय की भावना सफल हुई। श्रीमंतो ने अथाह धन खर्च कर प्रभु की पूजा की अन्य लोगो ने स्वयं के भावोल्लास से पूजा की। वस्तुपाल तेजपाल ने तो स्वयं के देह के सारे ही अलंकार प्रभु को समर्पित कर दिये।

जिनालय के एक कोने में खड़ी भूपला यह देख रही थी साथ ही मन में विचार कर रही थी। ये सब भगवान् की अनुपम भक्ति कर जीवन को कैसे धन्य बना रहे है! आह! मैं इन सब मे से कुछ भी तो नही कर सकती? तालाब के पास आकर भी मुझे क्या प्यासा लौट जाना है? नहीं, नही, यह नही होगा। मुझे कुछ तो करना ही चाहिये। दयालु दादा के चरणो मे कुछ तो धरना चाहिये।

पर धरे क्या? भूपला को बड़ी चिन्ता यह हो रही थी। आखिर मै तो एक दासी हूँ, मेरे पास त्रिलोकीनाथ दादा की भक्ति मे रखने योग्य कुछ भी तो नही? इसका जीवन-निर्वाह परतंत्र था!

पर, यकायक उसे याद आया इसके पास पास स्वयं की कही जा सके ऐसी एक वस्तु है। यह सोच कर वह पुलकित हो उठी। यह वस्तु भी उसके गले में पड़ा स्वर्ण हार। मत्री वस्तुपाल की पत्नी ललिता देवी ने किसी वक्त प्रसन्न होकर भूपला को यह हार बक्षीस किया था। यह स्वर्ण हार इस वक्त उसके गले मे था।

वह प्रसन्न हो गई और एक क्षण का भी विलम्ब किये वगैर स्वय के जीवन की एक मात्र पूंजी यह स्वर्ण हार अपने गले से उतार कर आदिनाथ भगवान् के कंठों मे पहिना दिया।

भक्ति के लिये किये हुये इस त्याग का आनन्द उसके अंतर मे प्रकाश मान बन गया।

ले0 मुनि : वात्सल्य दीप ☐ पर्युषण से साभार ☐ अनु0 : हीराचंद बैंद, जयपुर

भारतीय आकाश के सांस्कृतिक सूर्य



परम श्रद्धेय पूज्य अनुयोगाचार्य कान्तिसागरजी म० सा०

□ लेखिका—आर्या सुलोचना श्री

जब भी राष्ट्र सन्त परम पूज्य अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी म० सा० के बारे में सोचने लगती हूँ तो उनकी वह भव्य मूर्ति दिव्य विभूति मेरे नेत्र फलक पर अंकित हो उठती है । उनकी वह मधुर मुस्कान युक्त छवि, कान्तिमय श्यामल आकृति मन मस्तिष्क के प्रांगण में चल-चित्र की तरह घूमने लगती है । प्रशस्त तेजोदीप्त भाल, विशाल वक्षस्थल आजानु प्रलम्ब बाहु, दुग्ध धवल खद्दर से आवेष्ठित उन्नत देह यष्टि, प्रभापूर्ण मुख-मंडल । अपार वीर्य से ऊर्जस्वित अवयव की दृढ़-मांस पेशियां, स्वस्थ रक्त से पूरित पूरित स्फीत शिराएँ और पूंजीभूत पौरुष से ओत प्रोत गात्र । प्रवीण कलाकार के सुदक्ष करों की कुशल-तूलिका से निर्मित एक भव्य चित्र—अत्यन्त विराट अनुपम और अद्वितीय । मनोमुग्धकारी, नयनाभिराम आयत-दृग, पुष्ट-देह, गत भय, अपने प्रकाश में निःसंशय, प्रतिभा का अद्भुत परिचय सस्मारक बाह्य आकृति जितनी आकर्षण युक्त एवं मनोहारी है अंतर उससे भी अधिक महान् और विराट है । उसकी भव्यता एवं दिव्यता की थाह पाना कदापि संभव नहीं है । गहन गंभीर एवं अगम्य सागर से भी अधिक गहन एवं हिमशृंग से अधिक उत्तुंग । सहज सरल विश्वासी बालकों सा निर्मल निश्छल मन, उदात्त चिन्तन तथा तप त्याग एवं तेज की त्रिवेणी प्रवाहित करता जीवन । ध्येय के प्रति अविचल निष्ठा, निर्द्वन्द्वता और निर्भयता । प्रथम दर्शन में ही भारतीय ऋषि, महर्षि की प्रतिमा साकार हो उठती है, और मन मस्तिष्क एक साथ इस महामुनि के चरणों में श्रद्धा से नत हो जाते हैं ।

विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं अनुयोगाचार्य श्री जी । उनकी प्रतिभा की थाह पाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है । बड़े-बड़े विद्वान् और पंडित उनके सामने पहुँच कर अपने को बौना अनुभव करने लगते हैं । जब गुरुदेव श्री की वाणी मेघ की तरह गर्जन करती, अकाट्य तर्कों और प्रमाणों की प्रबल धारासार वर्षा करने एवं विवादी या प्रतिपक्षी पर चोट लगाने लगती है तो उसकी समस्त निपुणता और पंडिताई का चक्रव्यूह छिन्न-भिन्न हो जाता है । अनुयोगाचार्य श्री के तलस्पर्शी, क्रान्त दर्शी विचारों के प्रवाह में वह शुष्क काष्ठवत् या पाषाण पिण्ड की तरह बहने लगता है । वह नानगर्वित, नानोद्धत सहसा विनयावनत हो जाता

है । गुरु देव श्री की ज्ञान-गंगा में जो भी अवगाहन कर लेता है। वह धन्य-धन्य हो उठता है । आप भगवन् की प्रतिभा खडन-मडन मे नही अपितु सृजन में, विध्वश में नही अपितु निर्माण मे विश्वास करती है। यही कारण है कि उनकी प्रतिभा ने विराट साहित्य का सृजन किया है, मयण रेहा अजना आदि अनेको चरित्र अपने गायन कला मे बनाकर जन समूह के समक्ष रखा है। आप श्री की प्रवचन शैली लेखन एवं रचना की तरह वेजोड़, अनूठी एवं अनुपम है । पार्वत्य-कन्दरा से निर्गत कल-कल निनाद करती जलधारा की तरह उनके मुख से नि:सृत वाणी का प्रवाह स्रोताओ को पूर्णतया अपने साथ वहा ले जाने में सक्षम है। उनकी वाणी मे अनूठा जादू, विचित्र चमत्कार है। जब वे किसी विषय का प्रतिपादन करने लगते है तो श्रोता मंत्र-मुग्ध एवं भाव-विभोर होकर आपाद मस्तक उस भाव-गंगा मे डूब जाते है। एक मन एक रस होकर तादात्म्य की अनुभूति करने लगते है। उनकी शैली का सबसे बड़ा वैशिष्ट्य यह है कि वह श्रोताओं को जब चाहे तव रुलादे, जब चाहे तब हँसादे और उसे यह पता ही नही चले कि क्षण भर पहले रो रहा था एवं अब हँस रहा है। विरल वक्ताओ मे मे ही श्रोता मंडली पर इस प्रकार अधिकार करने की क्षमता और शक्ति पाई जाती है। प० पू० कान्तिसागरजी म० सा० न केवल जैन संस्कृति, धर्म एवं दर्शन के निष्णात विद्वान् है अपितु समस्त भारतीय दर्शन एवं वागमय के प्रगाढ़ पंडित है। पिपासु जन उनके पास जाकर पूर्ण तृप्त और संतृप्त हो जाता है। शास्त्रीय ज्ञान ही नहीं, वल्कि अनुभव गम्य ज्ञान की ऐसी अक्षय निधि के एक-से-एक अद्वितीय रत्न वे सामने रखने लगते है तो चमत्कृत एवं विस्मय विमुग्ध रह जाना पड़ता है। ज्ञान राशि का उनका यह पुष्कल आलोक किसी को भी संशय रहित, आस्थावान एवं श्रद्धालु वनाने में सक्षम है, अज्ञान-तिमिर को विदीर्ण कर सत्य का मिहिर द्वार अनावृत कर देता है और राग-द्वेष कलह के विषम वज्र द्वार को तोड़कर अपार भ्रम को हर लेता है। मुझे लगता है कि गुरुदेव का जन्म ही इसीलिए हुआ है—

करने को ज्ञानोद्धत प्रहार—
तोड़ने को विषम वज्र द्वार,
उमड़े भारत का भ्रम अपार हरने को।

खरतरगच्छ के प्रकाण्ड विद्वान् महान् तेजस्वी गच्छ को चमकाने वाले है पूज्य कान्तिसागरजी म० सा०। जैन धर्म गत समस्त मुनि लक्षणो से युक्त उत्कट शान्ति नवनीत शदृश्य स्निग्धता एवं प्रभूत समता से उनका मुख मंडल सदैव प्रदीप्त रहता है। उनके व्यक्तित्व में स्नेह औदात्य और औदार्य के साथ आकृत्तिता, नि:संगता एवं अनाग्रहता का मणि कांचनवत् संयोग है। पर सत्य के लिए निरन्तर संघर्षरत रहने से वे कभी कतराते नही। न मालूम कितनी बार मिथ्यावादियो के आरोपों का जहर पीना पड़ा है उन्हें और पी रहे है, किन्तु वे कभी विचलित नही हुए और न होते है अपितु प्रसन्नता पूर्वक सदैव अमृत ही बाँटते रहते हैं।

प्रकाश और वायु के समान व्यक्तित्व की महिमा और महानता सर्वत्र व्याप्त होकर अणु-अणु को प्रकाशित और प्राणवान बनाती रहती है। व्यक्तित्व की महानता के दर्शन लघुता के प्रति सहज स्नेह मे है। अनुयोगाचार्य श्रीजी महान् सत, प्रबुद्ध विचारक, उत्कट विद्वान् एवं प्रकाण्ड पंडित है पर एक साधारण से साधारण, व्यक्ति उनके व्यक्तित्व की विराट् छाया मे शान्ति, सहानुभूति एवं स्नेह का औदार्य पाकर पुलकित हो उठता है, गद्गद् हो जाता है और उसका अन्तर्मन "मत्थएण वंदामि" कह उठता है।

परम श्रद्धेय गुरु देव श्री की विद्वता, संघ समाज और धर्म के प्रति एकनिष्ठता और सर्व

धर्म समन्वयात्मकता की प्रशंसा बचपन से ही मैं सुन रही थी। किन्तु दर्शन का प्रथम अवसर फलवर्द्धी नगरी में हुआ था, वहीं पर आपके हस्त कमलों द्वारा मेरी बड़ी दीक्षा और प० पू० प्रवर्त्तिनीजी प्रमोद श्रीजी म० सा० को प्रवर्त्तिनी पदवी पू० कमला श्रीजी म० सा० का वर्षीतप का पारणा एवं श्रीचन में प्रतिष्ठा इस प्रकार वहाँ पर महान् कार्य हुये। उसके पश्चात् कितनी ही बड़ी दीक्षा और उजमणे, प्रतिष्ठा विधि शांति स्नानादि अनेकों महान् कार्य किये।

ऐसे तो गुरुदेव ने प० पू० दर्शनसागरजी म० सा० के साथ अनेकों संघ निकलवाये, किन्तु पूज्य गुरुदेव ने बाड़मेर से पालीताणा का संघ निकलवा कर भारत के अन्दर चार चाँद लगवा दिये, जो उस संघ में गये हैं और जिन्होंने देखा है वे मुग्ध कण्ठों से प्रसंशा किये बगैर नहीं रह सकते। समस्त मानव जाति एवं प्राणियों के प्रति अगाध स्नेह, सहानुभूति एवं कल्याण की भावनाओं से परिपूरित है, उनका मन। गुरुदेव श्री का पुण्य ही ऐसा है कि उनके कर कमलों से एक के बाद दूसरा महान् कार्य होता ही रहता है। अभी अभी ब्यावर में आप श्री के वरद्-हस्त से तीन बालाओं ने अभूतपूर्व समारोह के साथ भागवती दीक्षा ग्रहण की। शत् शत् वन्दन हो ऐसे महान ज्योतिधर गुरुदेव श्री के चरणों में। वे दीर्घजीवी और चिरजीवी बनकर भव्यात्माओं के लिये आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते रहें।



सुवासित

- जो स्वयं को जीतता है, वह जगत् का नाथ बनता है। स्वयं जीत कर अन्यों को जिताता है वह जिनेश्वर कहलाता है।
- जैन शास्त्रकारों ने उनकी बहुत सुन्दर शब्दों में स्तुति की है। उसमें यह शब्द आते हैं 'जगबंधव' और 'जगसत्थवाह' जगत् के बंधु और जगत के सार्थवाह।
- वे करुणा निधि हैं, इससे जगत् बंधु हैं और जगत् के उद्धारक इसलिये जगत् के सार्थवाह हैं।

—मुनि वात्सल्यदीप



भारतीय संस्कृति की गौरव गाथा में एक शृंखला

□ लेखिका : "प्रमोद" गुरु चरण रज
वी० पी० एस०, बाड़मेर

अखंड पृथ्वी पालक सम्राट् चक्रवर्ती श्री भरत महाराजा अपने सिंहासन पर आसीन थे। निकट ही अपने-अपने परिधानों में सुसज्जित माननीय मुख्यमत्री, उमराव, सामंत, राजमान्य एवं नागरिक-गण उपस्थित थे। सभा मे सन्नाटा छाया हुआ है। अचानक महाराजा ने प्रसन्न मुद्रा मे निस्तब्धता को भंग करते हुए मुख्यमंत्री को संबोधित कर कहा— अमात्य प्रवर ! आज मेरा शुभ को सूचित करने वाला दायाँ अङ्ग फड़क रहा है—अमात्य-नृपवर ! प्रतीत होता है कि आपको आज अत्यत अभिष्ट की प्राप्ति होनी चाहिये, परन्तु वाक्य पूरा होता उससे पहले ही वार्तालाप मे व्याधात पड गया।

प्रभु का पदार्पण :

दौड़ता हुआ, हाँफता हुआ उद्यान पालक द्वार-पाल की अनुज्ञा प्राप्त कर सम्राट् के समक्ष उप-स्थित हो गया। उसकी सांस भागने के कारण तेज रफ्तार से चल रही थी। सभ्यता एवं आदर सहित उसने अर्ज किया—सम्राट् ! अभी आप श्री की उद्यान वाटिका मे ऋषभदेव प्रभु ने पदार्पण किया है। बधाई सुनते ही भरत सम्राट् अपने सिंहासन से उठ खड़े हुए। उत्तरीय वस्त्र व्यवस्थित कर जिस दिशा मे प्रभु का समवसरण लगा था पाँच-सात कदम जाकर पंचाङ्ग सादर नमन किया। मुकुट को शेष छोड़कर सारे आभूषण उस प्रियंवद को देकर सेनापति की ओर मुड़े।

सेनापति ! मेरे तुम्हारे एवं समस्त प्रजाजन के अहो भाग्य से प्रभु ने इस नगरी को पावन किया है। मेरे पट्ट हस्ति सहित समस्त सेना को सुसज्जित करो। नगर में घोषणा करो सभी समय पर प्रभु के दर्शनार्थ पहुँच जायं।

"तहत्ति" कहकर सेनापति ने श्रद्धा से सिर झुकाया एवं चल दिया। कुछ ही समय मे सारी तैयारी हो गयी। राजा अपने (हरित रत्न) पर महाराणी सुभद्रा सहित आसीन हुए। समस्त सेना एवं नगर निवासी उनके पीछे चल दिये। कोई रथ पर तो कोई घोड़े पर एवं कोई पैदल। सभी प्रभु के दर्शन को उत्सुक थे। आज उनके उद्धार-कर्ता, प्रथम नरेश के रूप मे एवं पश्चात् संयमी के रूप में प्रभु का आगमन था। जुलूस समव-सरण के निकट पहुँचा। समवसरण दिखते ही सम्राट् सहित सभी अपने-अपने वाहन से उतर पड़े। विधियुत् सम्राट् एवं सर्व प्रभु के चरणो में पहुँचे। स्तुति वन्दन कर यथा योग्य स्थान पर सभी बैठ गये। प्रतीत हो रहा था कि अयोध्या आज स्वर्गपुरी अलका है। चार योजन विस्तृत गुण वाली प्रभु ने सुधामयी मधुर देशना दी।

देशना के माध्यम से —

सघ

"जग माहे मोटो अरिहत देव, चौसठ इन्द्र करे जसुसेव । तेहथी मोटो सघ कहाय, जेने प्रणमे जिनवर राय । तेहथी म्हारो सघवी कह्यो, भरत सुणी ने मन गहगह्यो । भरत कहे ते किम पामिये, प्रभु कहे सेत्रुन्जे यात्रा किये ।" श्रद्धालु पाठको ! सात्विक एव सरल इस पद्य मे समयसुन्दरजी महाराज ने जिनवाणी को रागात्मक शैली मे किस प्रकार बहाया है ? इस पद्य मे सघ की, सघपति की एव सिद्धाचल की महिमा सक्षिप्त शब्दो मे कूट कूट कर भरी है। प्रभु ने स्वयम् अपने श्री मुख से कितना इसको महत्त्व प्रदान किया है ।

शत्रुन्जय

'शत्रून जय तीति शत्रुन्जय" जो शत्रुओ पर विजय दिलाता है उसे शत्रुन्जय कहते हैं। इसकी महिमा अपरपार है। इसका एक एक कण महान् आत्माओ के ससग से पावन है। अनती आत्मा यहाँ से निर्वाण को प्राप्त कर चुकी हैं। "जेने शत्रुन्जे तीथ न भेटयो गर्भावास लहत रे" महाकवि ने इस पद्य के द्वारा प्रमाणित किया है कि जिसने सिद्धाचल जाकर अपने अपन आपको पवित्र नहीं किया है, समझना चाहिये वो अभी माँ के पट मे ही है । सिद्धाचल की महिमा तीन भुवन मे विख्यात है ।

निश्रा

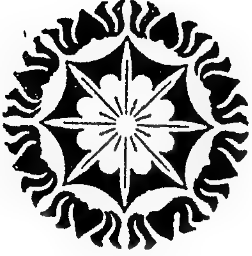
राजस्थान के आचल से प्रस्फुटित मरुधरा की धरती मधुर सौरभमयी सुषमा से सुगन्धित चहुँ ओर अपनी तेजोमयी रश्मियाँ बिखेर रही थी। प्रकृति ने इस प्रदेश का विचित्र आश्चयजनक शृङ्गार किया है। ऊँची ऊँची आकाश को छूने वाली पर्वत शृ खला, दुगम पथ, ककरीली भूमि कण्टक प्रदेश आदि यहा की शोभा है।

इस भूमि ने अपने गर्भ से अनेक महान् रत्नो को उगले हैं जिनके आलोक से इतिहास के पृष्ठ आलोकित हैं । इन्हीं रत्नो के अन्तगत इसी स्मरणीय भूमि ने युगवीर शास्त्र विशारद अनुयोगाचाय श्री कान्तिसागरजी म० सा० जैसे महान् सतो को पैदा करने का गौरव प्राप्त किया है । उनकी ऐतिहासिक चिर स्मरणीय सेवायें खरतरगच्छ को ही नहीं अपितु समस्त जैन शासन को गौरवान्वित कर रही हैं। उनका सयमी जीवन प्रकाशपुन्ज की तरह भावी पीढी को प्रेरणा स्रोत एव प्रकाश देता रहेगा। भगवान् महावीर की अविछिन्न ऐतिहासिक परम्परा मे पूज्य गुरुवर के द्वारा आयोजित "पालीताणा पद यात्रा सघ" एक कडी की तरह जुडा हुआ है। महावीर की ही नही समस्त भारतीय सस्कृति इस सघ की दिव्य आभा से भविष्य मे भी दीप्त रहेगी।

धन्य है वो नर नारी जिन्होंने इस पैदल यात्रा म सक्रिय रूप से भाग लिया। चतुर्विध सघ के साथ यात्रा करने के ऐसे सुनहरे अवसर (Golden chances) जीवन मे बहुत कम पाये जाते हैं। इस सुनहरे अवसर का जनता अधिकाधिक लाभ उठावे। शासन देव से कामना है कि यह सघ अपने लक्ष्य मे सफल रहे। अनुचित के लिये क्षमा याचना के साथ म अपनी लेखनी को विराम देती हूँ । भारतीय सस्कृति की यह शृ खला अमर हो।

"जय गुरुदेव"





शत्रुञ्जय तीर्थ की पद यात्रा : प्रारम्भ एवं समापन

☐ लेखक : **श्री फूलचन्द चोपड़ा,** भाटापारा (म० प्र०)

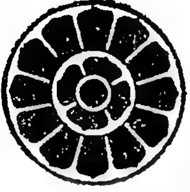
पानी की आवश्यकता खेतो को रहती है। वे बादलों तक याचना के लिए जा नहीं सकते। ऐसे साधन भी नहीं है कि वे मेघमाला को आमंत्रित करने एवं बुला सकने मे सफल हो सकें। बादल ही अपनी सहज करुणा से अपने पैरो चलकर, अपने कंधों पर जल राशि लाद कर खेतो तक पहुँचते है और आवश्यकता से अधिक जल देकर उन्हे तृप्त करते है। संसार मे छाये हुए शीत का निवारण करने के लिए धरती सूर्य के समीप नही पहुँच सकती। सूर्य ही उनकी आवश्यकता समझ कर स्वय उस पर अपना तेजस् बखेरते है। भूकम्प, बाढ, दुर्भिक्ष, अग्नि काण्ड, तूफान आदि दुर्घटनाओ से पीड़ित व्यक्ति तत्कालिक सहायता के लिए साधन सम्पन्नों का दरवाजा खटखटाते हुए पहुँचने की स्थिति मे नही होते। उदार व्यक्तियो को ही अपनी सहज करुणा से प्रेरित होकर उन पीडितो की सहायता करने पहुँचना पड़ता है।

बाडमेर के जैन श्री संघ ने सोचा कि संत मंडली के साथ यदि बाडमेर से पालीताणा तक की पद यात्रा का सघ निकाला जाय तो वह लोक-कल्याणकारी होगा। राजस्थान के इस भू-भाग से सौ-राष्ट्र गुजरात के उस भू-भाग के मध्य का विस्तृत भू-खण्ड ज्ञानालोक से आलोकित होगा। यह सर्वोच्च धर्म कृत्य भी होगा। धर्म कृत्यों मे सबसे अधिक व्यापकता, विशालता और लोक-मान्यता तीर्थ यात्रा को मिली है। तीर्थ की पद यात्रा ही श्रेष्ठ मानी गयी है। प्रकृति के सान्निध्य मे उत्तम जलवायु का लाभ, सात्विक आहार-विहार पर निर्भरता का लाभ और प्रेरणा-प्रद वातावरण से ऊर्जा ग्रहण का लाभ स्पष्ट दीखता था। नई क्षमता, नई दृष्टि एवं नई स्फुरणा के प्रत्यक्ष पुण्य फल दिखाई देने लगे। छत्तीस गुणो से युक्त आचार्यजी और सताइस गुणों से युक्त साधु-साध्वियो की प्राणवान प्रतिभाओ का सामीप्य और सत्संग रहने से पद यात्रियो के साथ मध्यवर्ती 52 नगर ग्रामो का वातावरण प्रभावित होगा। तपस्वी मनस्वियों द्वारा अपनी तप सम्पदा निचोडकर दी जायेगी। विचारशील धर्मज्ञ जन-जन मे धर्म धारणा जागृत रखने के लिए गांव-गांव से विचरेगे और धर्म, दर्शन, अध्यात्म जैसी उच्च स्तरीय अनुभूतियो का ज्ञाना-लोक फैलायेगे। परम पूज्य गुरुदेव अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी महाराज साहब के सम्मुख पालीताणा मे विचारको ने अपने विचार रखे। तप-साधना की यह एक महान् प्रक्रिया थी। महाभाग पुण्य शालियो के लिए सम्यग् दर्शन, ज्ञान और चारित्र्य की प्राप्ति का प्रबल योगायोग था। सच्चे भक्तों को अभिष्ट प्रयोजन के लिए गुरुदेव की सहज स्वीकृति प्राप्त हो गई। इस सद्

उपनिपद की सफलता का आशीर्वाद प्राप्त हो गया। हमारे गुरुदेव तो साक्षात् कल्प वृक्ष हैं। वहा जाकर खाली हाथ वापस कौन लौटा है? आयोजको ने पद यात्रा का विस्तृत कायक्रम तैयार किया। समुचित व्यवस्था हेतु सघपतियो का मनोनयन एव पद यात्रा सघ समिति का निर्माण किया गया। यात्रा माग का निर्धारण एव प्रति-दिन का कायक्रम मुद्रित एव वितरित हुआ। दिनाक 31-1-80 को वाडमेर मे प्रयाण पूव भव्य समारोह सम्पन्न हुआ। सहस्राधिक साधक पद यात्रा सघ मे सम्मिलित हुए। पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कदम बढने लगे। चौवन दिवसीय पद यात्रा के तप से मानवी काया सिद्धत्व का उत्पादन-अभिवद्ध न करने की ओर बढी। व्यक्ति-त्व के उच्च स्तरीय उत्कप इसी स्थिति म सन्निहित हैं। अरिहत, सिद्ध आचाय, उपाध्याय और साधु-इसी प्रगति यात्रा के क्रमिक सोपान हैं। सघ के कदम निर्धारित मार्ग पर बढते रहे। माग मे जो भी गाव, झोपडे, नगले पुरवे मिलते थे, उनमे रुकते ठहरते किसी उपयुक्त स्थान पर रात्रि विश्राम करते रह। मार्ग मे पडे तीथ महातीथ के भी दिव्य-दशन किये। पूरी यात्रा-अवधि मे प्रवचन-भजन, शका समाधान, सत्सग का क्रम चलता रहा। जन साधारण को असाधारण धर्म-लाभ प्राप्त हुआ। पद यात्रियो का मनुष्य जीवन सार्थक हुआ। रोगोपचार का असाधारण प्रयोग भी सफल रहा। नस नाडिया का, मास पेशियो का उचित सचालन होते रहने से शारीरिक मानसिक रोगियो की व्याधिया भी दूर हुइ। 'अतिथि देवोभव' के अनुरूप ही यात्रा-मार्ग मे सघ का सवत्र भाव भरा सम्मान किया गया। तीथ यात्री पद यात्रा की कष्ट साध्य प्रक्रिया से हँसी-खुशी गुजरते हुए दिनाक 23-3-80 को पालीताणा नगर मे प्रविष्ट हुए। विमल गिरि पर शोभित श्री सिद्धाचल का शत्रुन्जय जैन तीथ जिनेश्वर श्री ऋषभदेव प्रभु के पुण्य प्रभाव का अतिशय क्षेत्र आकर्षित करने लगा। दशनार्थ हजारो व्यक्ति यहाँ आ चुके हैं। यह तीथ राज है। जन-सैलाब से तीर्थ का माहात्म्य प्रकट होता है। मौका मिलते ही पद यात्रियो ने तीथ के पारस का स्पश किया और अपने कलुष कालिमा की लौह जैसी कठोरता को बहु मूल्य स्वण सदृश बनाने का श्रेय प्राप्त किया। आत्मिक विश्रांति पायी। उद्विग्नताओ का समाधान हुआ। इस उपलब्धि की सुखद प्रतिक्रिया को देखते हुए तप पूत मनीषियो के तत्वावधान मे पद यात्रा प्रारम्भ से अ त तक की असाधारण सिद्ध हुई।

वास्तव मे धम श्रद्धा मनुष्य जीवन की बहु-मूल्य थाती है। देशभक्ति, परमाथ परायणता, उदार सहृदयता, सेवा साधना, आत्म सयम, चरित्र-निष्ठा, आदश वादिता, तप तितीक्षा आदि के समस्त प्रयोजन वस्तुत धम श्रद्धा के ही रूपान्तरण हैं। यह चेतना जिस भी क्षेत्र मे प्रयुक्त होती है, वही मानवी गरिमा को बढाने वाले महान् काय रच कर खडे कर देती है। यह तत्व जहाँ भी है उसे रत्न राशि से, स्वण खदान से बढकर बहु-मूल्य माना जायेगा। आयोजक एव व्यवस्थापक, जैन श्री सघ एव पालीताना पद यात्रा सघ समिति, बाडमेर साधुवाद के पात्र हैं। सघपतियो का औदाय्य अभिनन्दनीय है। तीथमाल एव पूर्णाहूति मे प्राण प्रतिष्ठा हुई है।





छ'री पालित यात्रा संघ तैयारी के प्रारम्भिक क्षण

☐ सम्पादक : दैनिक छत्तीसगढ़" : रावलमल जैन 'मणि'
पी० एच० डी०

नवपद ओली की भव्य आराधना के दिन थे। नाकोड़ाजी की यात्रा कर तूफानी बारिश से क्षतिग्रस्त इलाकों को देखता बालोतरा से बाड़मेर पहुंचा, 'साधुता के स्वामी' श्री कान्तिसागरजी म० सा० के दर्शनार्थ। रेल्वे स्टेशन से जैन न्याति नोहरा पहुँचा था। विशाल नोहरा स्त्री-पुरुषों बच्चों से खचाखच भरा था, पाक्षिक प्रतिक्रमण चल रहा था। एक बालक दौडता हुआ आया, कान्तिसागरजी म० के दर्शनो को आए है क्या, पूछकर आटोरिक्शा अपने घर ले चला, जबर्दस्ती उतराया बिजली की तरह—पानी, चाय का क्रम लगा दिया, सारा घर महाराज श्री से मिलने आए मेहमान के स्वागत के लिए उमड़ पडा था। कान्तिसागरजी ने साधार्मिक भक्ति से बाडमेर को प्लावित कर दिया। इन दिनो मे, इसका सहज ही अनुभव हुआ। संतोष ने विश्राति ली।

प्रतिक्रमण के बाद अनुयोगाचार्यजी आदि मुनिवरों के दर्शन वदन कर आकर्षक प्रभावशाली व्यक्तित्व से चर्चाओं मे मग्न हो गया। चर्चा के इस क्रम में साहित्य शिल्पी कवि मनीषी मुनि श्री मणिप्रभसागरजी साथ थे। आपश्री ने बाडमेर की भक्ति, उत्साह और तप आराधाना की चर्चा करते हुए बताया कि बाड़मेर से पालीताणा का यात्रा संघ निकालने का निर्णय हुआ है। यह बताते हुए प्रेरणा की सफलता की मुस्कान ने उनका चेहरा रोशन कर दिया। मै उनके मस्तिष्क की गहरी लकीरों को बराबर पढ़ रहा था कि किसी ने सूचना दी कि एक बालमुनि अस्वस्थ हो गए। सूचना मिलते ही कान्तिसागरजी बहुत ही प्यार से अस्वस्थ बालमुनि की सेवा मे सहज ही जुट गए। वे अपनी सहजता की सुरभि बिखेर रहे थे।

दूसरे दिन प्रातः ओली पर्व पर उनका मार्मिक प्रभावोत्पादक प्रवचन जन-मानस को तपस्या के लिए प्रेरित कर रहा था। साधना के निर्माण मे आवश्यक सोपान है अनुभूति, जिज्ञासा और अनुभव और इसे अभिव्यक्ति देते है अनुयोगाचार्यजी अपने ओजस्वी प्रवचन मे।

मध्याह्न अनुयोगाचार्यजी यात्री संघ के आयोजन को अन्तिम रूप देने मे जुट जाते हैं। समूचे भारत मे स्थित साधु-साध्वियों श्रावक-श्राविकाओ को सघ में शामिल होने के लिए निमत्रण भिजवाने तथा व्यक्तिगत पत्र लिखने में वे व्यस्त हो गये। फिर सघ समिति के पदाधिकारियो सदस्यो के साथ विचार विमर्श का दौर चल पडता है। मैने देखा प्रस्तावित आयोजन को लेकर

बाडमेर के हर चेहरे पर प्रसन्नता थी और इतना ही नहीं उन्होंने अपने आपको अपनी सेवाएँ देने मे समर्पित कर दिया था। प्रज्ञा पुरुष ने जिन शासन प्रभावना की इस सरचना को प्राणवनता से गू जता हुआ प्रतीक बना दिया था। आपश्री ने यात्रा सघ के आयोजन पर प्रकाश डालते हुए बाडमेर की भावनाओं की जो प्रशसा की उसे यथार्थ की पूरी प्रभावता मे ढाला जा सकता है। इसी समय बाडमेर सघ के पदाधिकारियो सदस्यो से मेरा परिचय कराया। लेखको, पत्रकारो के प्रति प्रज्ञा-पुरुष का सम्मान मार्ग दर्शन और उदार दृष्टिकोण प्रशसनीय है। यात्रा सघ की तैयारी के प्रारम्भिक क्षणों मे चर्चा के दौरान आपश्री ने विशाल सघ की रूपरेखा बताई। इसी दौरान मैंने नगपुरा तीर्थोद्धार के लिए शाति विजय ज्ञानपीठ की तैयारी की जानकारी दी। दूर दृष्टा ने अनेक किन्तु महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए और ज्ञानपीठ द्वारा भावावेश मे की जा रही एक दुरुह कोशिश के लिए आगाह किया और अपने पारखी अनुभवो से सुगम मार्ग प्रशस्त किया जिसे ज्ञानपीठ ने बाद मे स्वीकार किया और तीर्थोद्धार का प्रयास उसी राह चल रहा है। चर्चा के दौरान छत्तीसगढ अचल मे विहार की चिर अपेक्षित जनाकाक्षा को मैंने निवेदित किया तो उन्होने बडी ही उदारता से कहा मणिजी यदि आप साध्वी मनोहर श्रीजी को प्रस्तावित यात्रा सघ मे शामिल करने के लिए राजी कर लें तो मे छत्तीसगढ अचल मे विहार करूगा।" शत्रु जय यात्रा सघ को लेकर आप मे जो अदम्य उत्साह था, वह पुलकित हो उठा।

यात्रा समिति के सदस्यो के बीच अनुयोगाचार्यजी कुशल मार्ग-दर्शक की भूमिका निभाते। आवश्यक ससाधनो की व्यवस्था का निर्देश देते। इसी बैठक मे विभिन्न स्थलों पर विराजमान साधु-साध्वियो को विनति करने जाने के लिए प्रतिनिधि मण्डल तैयार किया गया। प्रतिनिधि मण्डल के लिए यात्रा कार्यक्रम को उन्होंने इस तरह खीचा कि समूचे भारत का नक्शा सामने "नजर आने लगा। प्रज्ञा पुरुष ने आवाज दी—मणिजी, गुजरात मध्य प्रदेश का रूट बताइये ताकि कम समय मे शीघ्रातिशीघ्र यह कार्य हो सके" और यात्रा रूट निश्चित किया गया। इस तरह यात्रा तैयारी के प्रारम्भिक क्षण बीतते गए और अतत उत्साहित वातावरण में हजारो लोगो ने मीलो तक फैले गाव शहरो से तीर्थाधिराज की यात्रा पूरी की। प्रारम्भिक तैयारी को देखकर छ'री पालित यात्रा सघ की भव्यता का अनुमान लगाना कठिन था। तैयारी का प्रारम्भिक क्षण आश्चयजनक था। भौतिक सुखो मे डूबे जन-मानस के लिए किन्तु इस जरिये कुछ कर जाने की ललक भी तो कम नहीं थी। इस ललक ने जिन-शासन की शानदार प्रभावना की। जैन जयति शासनम्।





श्री शान्तिलालजी पारख, सघपति श्री जवाहरलालजी राक्यान
को साफा पहिनाते हुये—

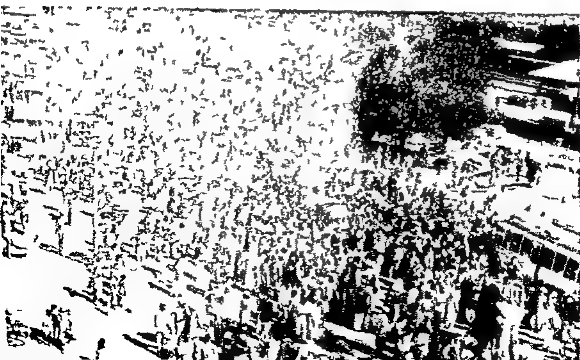
श्री केवलचन्दजी खटोड़ को साफा पहिनाते हुये
श्री चम्पालालजी राका एव श्री शान्तिलालजी पारख—



पालिताणा प्रवेश जुलूस मे महिलाएँ



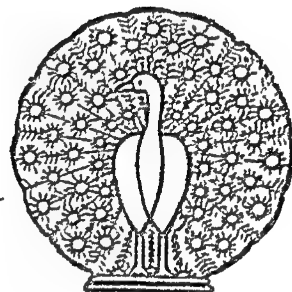
वाडमेर प्रस्थान के समय विशाल जन-समूह





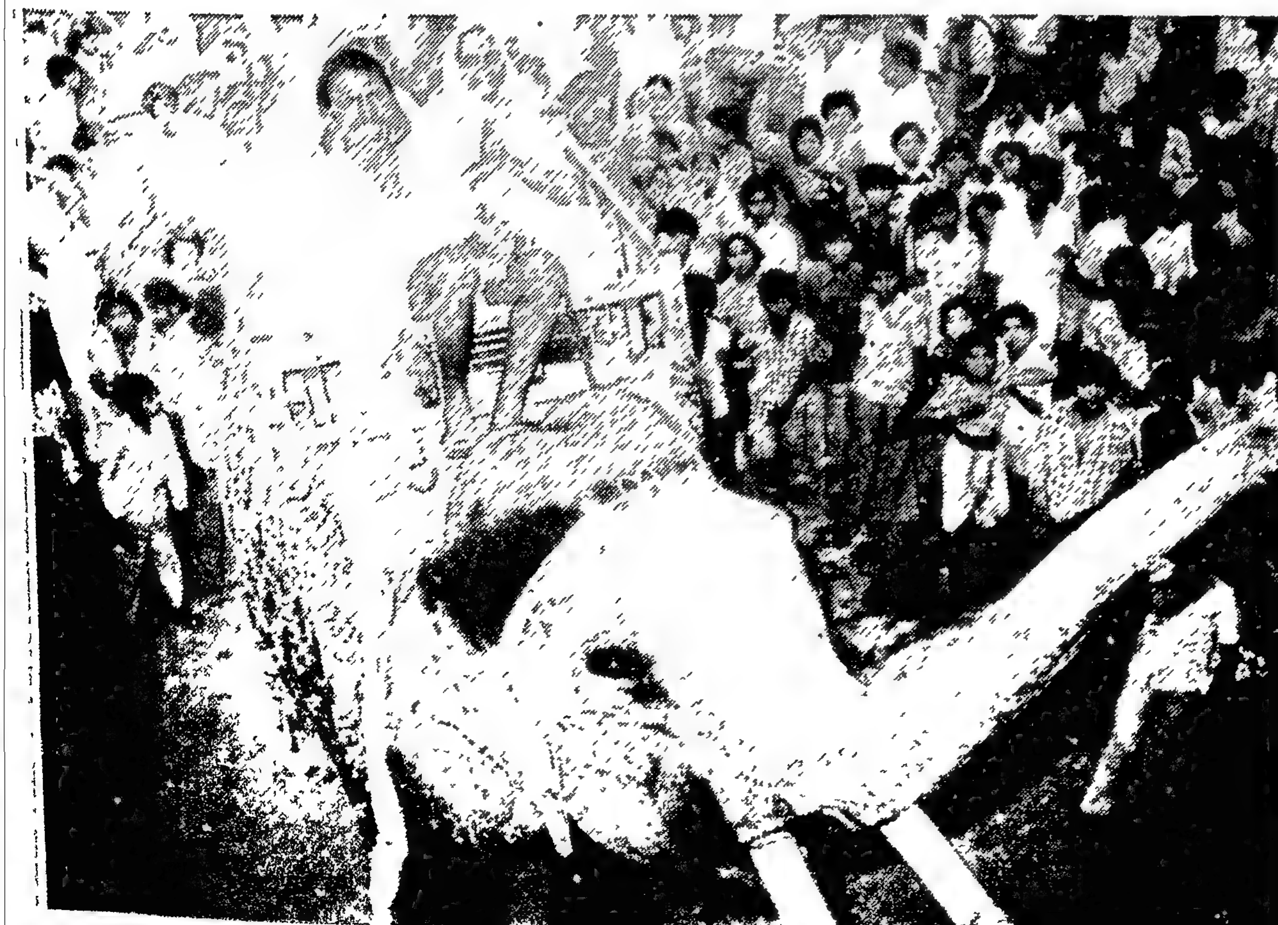
धार्मिकता
का
अवलम्बन

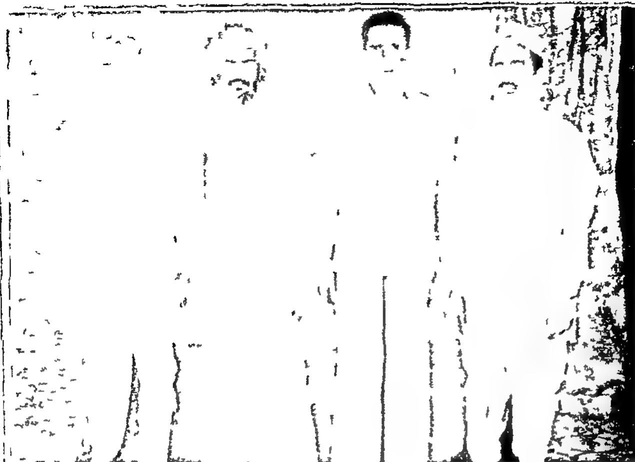
भव्य शिखरयुक्त मन्दिर



जन समूह का आकर्षण–

गजराज द्वारा सूंड उठाकर अभिनन्दन





सघपति श्री भवरलालजी वोहरा सघपति श्री घमचन्दजी छाजड
एव श्री भूरमलजी वाथरा मुनि श्री मणिप्रभसागरजी क सानिध्य मे—



पदयाला महासघ क प्रवश क अवसर पर जुलूस मे
पूज्य गुरुवय श्री—





तीर्थ यात्रा और अनुयोगाचार्यजी

☐ लेखिका : साध्वी मनोहरश्री

श्री तीर्थपान्थ रजसा विरजीभवन्ति,

तीर्थेपु वम्भ्रमणतोन भवे भ्रमन्ति ।

द्रव्य व्ययादिहनरा: स्थिर संपद: स्युः,

पूज्या भवन्ति जगदीशमथार्चयन्त ।।

मानव का जीवन विभिन्न आयामो से होता हुआ आगे की ओर प्रगति चरण बढ़ाता चला जाता है । उसे इस गति मे कहीं तो रंगीनियों की मनमोहक छटा-छबियाँ अपने कमनीय पाश में आबद्ध कर लेती है तो कही वीरानियो की ऊमस् मन मे कचोट पैदा कर देती है । जीवन के इस धूपछाँही आंचल मे मानव अशांति और असंतोष की डरावनी काली घटाओं को विलीन करने हेतु चरण-चरण पर आत्म निरीक्षण-परीक्षण करता हुआ एक सुसस्कृत पथ का संधान करता चला जाता है । तत्पश्चात् "आत्म लाभात् परो लाभो नास्तीति मुनयो विदु:" यह उसका जीवन सूत्र बन जाता है—स्वात्मरूप के प्रागट्य के लिये वीतराग दर्शन अनिवार्य है ठीक उसी प्रकार जैसे रोग से मुक्ति पाने के लिये डॉक्टर की शरण लेनी ही होती है । आत्मत्व के सत्य दर्शन के लिये अन्य आलंबनो की अपेक्षा वीतराग अरिहंत प्रतिमा का आलबन अति उत्तम व बेजोड़ है । इसीलिये ज्ञानियो ने जिनदर्शन, स्तवन, पूजन की खूब ही महत्ता बताई है । उन्ही परमपिता परमेश्वर तीर्थंकर भगवतों के कल्याणकों से पावन बनी हुई तीर्थ भूमियो मे जब यात्रार्थ गमन होता है तब आराधक को अपनी खोई आत्म सपत्ति प्राप्त करने में समय नही लगता । उपरोक्त श्लोक में यही दर्शित हैं—तीर्थ के पवित्र मार्ग की रज से यात्रिक कर्मरज रिक्त बनता है । तीर्थ परिभ्रमण से भवभ्रमण का समाप्तिकरण हो जाता है, तीर्थ मे द्रव्य व्यय करने से आत्मिक-समृद्धि स्थैर्य होती है तथा जगत्वंद्य वीतराग की पूजक अंतत: स्वयं पूज्य बन जाता है ।

तीर्थ भूमियो मे यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रसरित मोक्ष-मूलक धर्म का बल, अधर्म की आसुरी बलयुक्त विराट सेना को अंगुली मात्र से "रुक जाओ" कहने वाली सफल ताकत रखती है । तीर्थो मे भी सर्व-शिरोमणी शत्रुञ्जय जिसके कण-कण मे अनंत सिद्धो की साधना जीवंत है, इस पुनित वसुन्धरा के रजाशो मे ऐसी आध्यात्मिक विद्युत् शक्ति स्फुरित है जिस विशुद्ध व प्रकाशित परमाणु के परिणाम-स्वरूप प्रत्येक गुमराह आत्मा को सच्चे सुख व विश्व शांति की पुनीत राह एव थाह मिल जाती है । आधुनिक विज्ञान इस बात का साक्षी है—अत्यत सूक्ष्म "समय यत्रिका न्यूक्लियर" से पता चला है कि लोहन्यूक्लियस के प्रकम्पन से दस खरब 10 00,00,00,00,000 लहरे (ग्रामारेज) निकलती है । टेलीपैथी प्रयोगो से यह ज्ञात हुआ कि मानसिक तरगों की गति सर्वाधिक तीव्र है । वे तत्क्षण विश्व के छोर को छू लेती है । वैज्ञानिको का यह कथन "जैनफिलॉसफी" मे वर्णित परमाणु की तीव्रतम गति का अक्षरश: समर्थन करता है । आशय यही कि सिद्ध पुरुषो की उत्कृष्ट साधना उदात्त विशाल विचारों से निकसित ग्रामारेज तीर्थ

के कण-कण मे व्याप्त है जिसका इफेक्ट एकदम हृदय पर पडता है। किन्तु स्मरण रहे ।

परमात्मा से उसी का कनेक्शन जुड सकता है जो ससार की निविड ग्रथियो से विमुक्ति चाहता है, जिसके चिंतन, मनन मे निष्ठा व एकलयता के साथ कर्म (क्रिया) की अखड धारा बहती हो। परन्तु आधुनिकता कुछ और ही है। लोगो के चरण तेजी से भौतिकता की ओर बढ रहे हैं।

आज "आस्फाल्ट रोड" तैयार हो रहे हैं, "ताज महल, शाहजहा व ओबेराय" जैसी विराट् होटलें खडी की जा रही हैं। खेत हरे-भरे दिखेंगे, 28 28 मजिल के मकान निर्मित हो रहे हैं। एक तरफ धरा आबाद होकर "अल्ट्रामाडन अमेरिका" मे रूपान्तरित हो रही है तो दूसरी ओर प्रजा (पवित्रता) बरबाद हो रही है। आर्य सस्कृति का गौरव ही नही रहा। सभी को "फारेनमेड" विदेशी बनावट चाहिये। P L 480 का गेहू खा-खा कर तथा पावडरो का दूध पी-पी कर बुद्धि भ्रष्ट हो गई। प्रत्येक की अपनी अलग अलग दुनिया है राह अलग, चाह भी अलग। कुछ वर्ष पूर्व पिता-पुत्र के मध्य "जनरेशनगेप" पाया जाता था। आज दो सगे भाई (2 वर्ष के अतर वाले) के बीच "जनरेशनगेप" प्रादुर्भूत हुआ है। भौतिक ऐय्याशी की क्षुधा ने मानवीय जीवन की सुख-शाति को हराम कर दिया। मानवीय मरण की समाधि का उच्छेदन तथा परलोक मे सद्गति का "रिजर्वेशन" असभव बना दिया।

जीवन का प्रवाह अनादि अनत काल से प्रवहित है, लाखो जन्म भौतिकता की बलिवेदी पर चढा दिये किन्तु अफसोस! हम प्रभु चरणो मे समर्पित होने मे आनाकानी करते हैं। समर्पण करते ही "चट मगनी पट ब्याह" उक्ति को चरितार्थ करना चाहते हैं। दुकान जाते वक्त दौडते दौडते प्रभु दर्शन कर लिया, ऐसे दौडधूप का जिनदर्शन आत्मशाति दिलाने मे कैसे समर्थ हो सकता है।

"अन्यथाशरणनास्ति" की एकाग्र भावना से जिनेश्वर की उपासना की जाय तो आज भी कल्याण हो सकता है। "कलिकाल सर्वज्ञ हेमचद्राचार्य" के शब्द हैं—"नमोस्तु कलये यत्र, त्वं दर्शनमजायत।" अर्थात् इस कलियुग को मैं प्रणमन करता हू जिस युग मे आपके पुनीत दर्शन पा सका हू। कलियुग मे भी साधक अपनी निष्ठात्मक साधना से स्वर्ण युग के दर्शन कर सकता है।

इसी कलियुग मे स्वर्णयुग के दर्शन कराने के महान् उद्देश्य को लेकर "प्रज्ञा पुरुष अनुयोगाचार्य प० पू० श्री कातिसागरजी म० सा० द्वारा सचालित "बाडमेर से पालीताणा पद यात्री सघ" एक विशिष्ट व अद्वितीय आयोजन था। चू कि निज को साधना के अतुल समुद्र में निमग्न कर पराय का साधने वाला महान् है तो स्वमुक्ति के साथ साथ परमुक्ति आकाक्षा को क्रियान्वित करने वाला "सर्व तो महान्"। विचारो का अजस्र प्रवाह चिरकाल से चला आ रहा है, यह सतत् प्रवहण शीला स्रोतस्विनी कभी नहीं सूखी, कभी नहीं रुकी यह बहती गई और अपने मधुर कलरव से जन मानस को आप्लावित करती गई। जिन्होंने इसका पान किया वे धन्य हो गये, नाद सुना वे कृतकृत्य हो गये। इन्ही महापुरुषो की शृ खला मे एक दिव्य पुरुष भी शरीक हैं जिनका परिचय है—बहुमुखी प्रतिभा के धनी पुरातत्वान्वेषक, जैन सस्कृति का शखनाद करने वाले प० पू० अनुयोगाचार्यजी!

आप मे अपूर्व प्रतिभा, अमोघ शक्ति एव सयम का अटूट आत्मबल है। आप मे एक ऐसी सजीवनी एव प्राणवत्ता है जो समाज के नसो मे चैतन्य फूकती है। तीव्र तथा दूरदर्शी आखो से चौतरफ अवलोकन करने वाले प्रभावशील, भव्य व स्मित, हास्य सयुक्त गुरुदेव जिनके मस्तिष्क के परिवेश मे सूक्ष्म भामडल "हलो ऑफ लाइट" जय की सूक्ष्म

किरणें प्रसरित हैं। उस जय मे निडरता, आत्म-श्रद्धा, स्वपराक्रम का समावेश स्वभावतः संनिहित है। जहाँ भय का प्रवेश ही नही हो सकता।

दर असल, एक तेजवलय मनुष्य के आसपास होता है जिसमें विद्युत्करण, चुम्बकत्व, रेडियो, विकिरणादि चेतना युक्त ऊर्जा समाहित होती है। वैज्ञानिक यंत्रों द्वारा इस ऊर्जा शक्ति को देखा और मापा जा सकता है। व्यक्ति के शरीर से उद्भूत ऊर्जा के कारण ही पारस्परिक आकर्षण और विकर्षण होता है। कभी-कभी ये वलय इतने तेजस्वी होते है जो आसपास के क्षेत्रों को प्रभावित करते है। उस सीमा में प्रवेश वाले सभी इस प्रवाह मे बहने लगते है। दूसरे शब्दों मे इस मानवीय चुम्बकत्व को "लीयर वोयेन्स" भी कहा गया है। यह तेजवलय सारे शरीर में होता है जो मस्तक की परिधि मे डेढ़ गुणा बढ़ जाता है। जिसका विस्तार तीन से सात फुट (3 से 7) तक देखने को मिलता है। प्रकाश की गति से सभी परिचित है। ब्रह्माण्ड मे कितने ही तारे जिनके प्रकाश को धरा पर पहुँचते हजारों वर्ष लगते है जबकि प्रकाश की गति एक लाख छयासी हजार (1,86,000) माइल प्रति सैंकिड है। इससे भी अधिक आगे करोडों माइल की रफ्तार से सफर करने वाली एक शक्ति ऐसी है जो एक ही क्षण मे अपने सौर-मंडल की परिक्रमा कर पुनः लौट जाती है। वह है मन की शक्ति! जो अंतरीक्ष व्यापी चुम्बकत्व की शक्तिवत् कर कार्य करती है। ऐसे ही तेजवलय, क्रांति व दृढ़ आत्मबल युक्त यथा नामधारी पू० अनुयोगाचार्यजी का व्यक्तित्व ऐसा अनोखा व बेमिसाल है जिनके सामिप्य से आनन्द की अनुभूति होती है। जिसकी प्रतीति मुझे प्रथम दर्शन से हुई। सचमुच! परम उदार, सहज, सरल, स्वभावतः मृदु विनम्र तथा "बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय" समर्पित व्यक्तित्व आज के युग में हाथ मे चिराग लेकर ढूंढ़ने से भी न मिलेगा।

आपश्री विचक्षण स्मृति संपन्न हैं। आपकी वैचारिक क्रांति को सांप्रदायिकता की लक्ष्मण रेखा में आबद्ध नही किया जा सकता। जिन शासन एवं गच्छ की शान को महत्तो महियान बनाये रखने के लिये आपश्री उपधान, प्रतिष्ठा, दीक्षा, संघ, उद्यापन, स्मृति स्तंभ आदि अनेकों धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक कार्य करते रहे है। इन्हीं कड़ियों में गुरु स्मृति में निर्मित गौरवास्पद "जिनहरिविहार" आपश्री की प्रबल-प्रेरणा, उदारता, समाजसेवा एवं अटूट गुरु भक्ति का अविस्मरणीय तथा सुनहरा इतिहास है। वस्तुतः! पूज्य गुरुदेव अनुयोगाचार्यजी वास्तविक अर्थो में युगदृष्टा, क्रान्तविचारक और युगवीर है। आपको देखकर सहज ही प्रतिभासित हो जाता है कि आपका कर्तृत्व क्या है?

मैं स्वय भाग्यशालिनी रही हूँ कि मुझ आपश्री की कृपा, आशीर्वाद एवं सद्भाव मिला। अप्रत्यक्ष परिचय मे भी आपश्री की अमाप्य कृपा वर्षा होती रही थी और आज भी। पूज्य श्री के महज एक ही शुभ संदेश से छत्तीसगढ़ भूमि को यकायक छोड़कर आज जो हम मंगलमयी वसुधा शत्रुञ्जय के अंचल में परमपिता परमात्मा आदिनाथ की पुनीत छाया तथा पू० गुरुदेव की स्वर्णिम निश्रा मे स्थित है उसका समग्र श्रेय आपश्री को ही है। आपश्री के उपकारों को मैं अपने जीवन से कभी भी विस्मृत नही कर सकूंगी। इस पुण्यमय क्षणों में हृदय के कण-कण से आपके व्यक्तित्व के प्रति आस्था, श्रद्धा और पूर्ण निष्ठा अभिव्यक्त करके स्वयं को धन्य समझती हूँ। साथ ही शासनेश से प्रार्थना करती हूँ कि पू० गुरुदेव चिरायु हों तथा आपश्री का ज्ञानसूर्य अधिकाधिक रश्मियां प्रसारित कर गच्छ एव समाज मे नई चेतना, जागृति, स्फूर्ति व नवीन रोशनी प्रदान करता रहे। यही मेरी मंगल स्पृहा है।

॥ शिवमस्तु सर्वजगतः ॥



नायक के अभाव का वह दिन



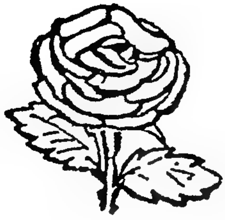
□ आर्या सम्यक् दर्शनाश्री

जिन्दगी घटनाओं से भरी है। अनेक प्रकार की घटनाए जीवन मे घटित होती ही रहती है। जिन्दगी का अपरनाम ही घटना है। कई घटनाए ऐसी जीवन्त होती हैं जिन्हें मानव एक पल के लिये भी भुला नही सकता। हर पल, हर क्षण वह घटना दिल और दिमाग पर छाई रहती है, ऐसी ही एक अविस्मरणीय घटना का वर्णन प्रस्तुत है।

14 फरवरी का वह सूर्योदय था। पद यात्रा-सघ के साथ हम थराद से ढीमा की ओर जाती सडक पर चल रहे थे। यात्रियो की कतार आगे भी थी, पीछे भी थी। यात्री समूह अपनी मस्ती मे भक्ति गीतिकाए गाता हुआ रास्ते को नाप रहा था। कई स्वाध्यायी, सूत्रो का पारायण करते हुए आगे बढ रहे थे, कई युवक ज्ञान-वर्धक विषय पर चर्चा करते हुए कदम पर कदम बढा रहे थे। सभी अपनी अपनी प्रक्रिया मे मस्त थे। उस समय उन यात्रियो को क्या पता था कि ढीमा ग्राम मे पहला कदम रखते ही हमारे श्वासो की धडकन तेज हो जायेगी, सब किंकर्त्तव्यविमूढ बन जायेंगे।

हुआ भी ऐसा ही। बात यो बनी कि थराद से जो ढीमा की ओर सडक जाती है, वह थोडी दूर चलते ही एक मोड लेती है और सीधी सडक वाव जाती है।

प्रातःकाल की सुरीली हवा मे जब सघ ने प्रयाण किया तो सभी ढीमा की ओर मुड चले, क्योकि वहा पथ प्रदर्शक दो सिपाही पहले ही नियुक्त कर दिये थे। किन्तु सयोग था कि पूज्य गुरुदेव जब निकले तो, वहा कोई नही था और पूज्य गुरुदेव भी सीधे वाव की सडक पर चल दिये। पूरा सघ ढीमा पहुँचा और पूज्य गुरुदेव श्री तीन मुनियो के साथ वाव। अजीब स्थिति बन गयी, पूरे सघ मे खलबली मच गयी। पता चलने पर श्री आदमलजी बोहरा, श्री द्वारकादासजी राठी आदि प्रतिनिधि पूज्य गुरुदेव श्री के समीप पहुचे, और सघ की स्थिति सामने रखी। गुरुदेव श्री ने फरमाया, "मैं योगानुयोग से पहुच ही गया हूँ तो तीन दिन शान्ति से ध्यान-साधना मे व्यतीत कर दू गा। और तीन दिन बाद यही से शामिल हो जाऊगा।" लेकिन प्रतिनिधियो की हठ निराली ही थी, उन्होंने कहा, "सचालक के अभाव मे तीन दिन तो क्या, एक दिन भी निकलना दूभर है।" आखिर गुरुदेव श्री दूसरे दिन प्रात विहार कर श्री मोरोल मे सम्मिलित हो गये। पूरे सघ मे उल्लास छा गया।



सांचोर-प्रवेश के दौरान प्रस्तुत गीतिका

☐ मिश्रीमल जैन, M A.

अम आंगणीये पधारो हो राज, थे मोरा मोवेरा मेहमान हो आज,
आया थे शत्रुञ्जय री जात्रा रे काज, थाने पहेराबु सोना रो ताज।
लाया थे मोक्ष रो साज, थारा नायक कान्तीसागरजी महाराज,
थाने लाख-लाख वंदन हो आज, थोरा खड़ा-खड़ा स्वागत करो आज ।।

वार-वार महीनो पेला संघ काढण री भावना कीधी,
छः छः महीनो पेला संघ यात्रा री जे वोलवी दीधी।
सघ काजे कान्तीसागरजी पालीताणा सु विहार करयो,
धन्य वाड़मेर सघ ने कान्तीसागरजी रो सपनो पुरो करेयो ।।

भरत क्षेत्र रा मानवीयों ने सघ मे पधारण रा आमंत्रण दीधा,
जेवा आमंत्रण दीधा ऐवा सकल सघे झेली लीधा।
वाडमेर नगरे सुद 14 ना दिवसे मोटो मेलो जागेयो,
छ.री पालता संघे सुद 15 ना दिवसे मंगल प्रयाण करेयो ।।

पूनम री मंगल प्रभाते, देव-देवियो पण दर्शन माटे तलसेया,
प्रयाण री रणभेरी वाजी ने हैय्या दादा रा दर्शन माटे झंखया।
छःरी पालता संघ री शोभा न्यारी, शोभे गजराज ने शोभे ऊँट री सवारी,
शोभे गजराज ने शोभे मरुधर जहाज ।।

रणभेरी रा रणकार साथे चाले हजारों पाद विहारी,
कान्तीसागरजी वतावे शत्रुञ्जय री महिमा अति भारी।

जेणा ललाटे लखाणा लेख ऐवा संघपतियों ये उपाड़ी आ जिम्मेदारी,
तीर्थो री पग पाला जात्रा करी भवो भवना कर्म खपाववा आया व्रतधारी।
व्रतधारियो ध्यान राखजो ने संघ यात्रा पछीनु पगलु लेजो विचारी,
नक्की करो संघ यात्रा पछी नही रेवु संसारी ।।

साचोर तीर्थ रा श्रावकों सोना रूपा रे फूलडे संघ ने वधावी लेजो,
संघ ने वधावी लेजो ने साचोर थी संघ काढरण रो नक्की करी लेजो।
साचोर तीर्थ ने गजावजो, मलेला पईसा रो सदुपयोग करजो,
हवे शांत बैठता वीतराग थई सको ऐवा काम करजो ।।

छःरी पालता जे शत्रुन्जय जाय पातिक तेना मुक्त थाय,
जेणे भेटेया शत्रुन्जय रा दादा आदिनाथ ने तेनी दुर्गति कदी न थाय।
संघपतियो आप हो महाभाग्यशाली, महाभाग्य वगर आ काम कदी न थाय,
चक्रवर्ती री पदवी पण मली जाय, पण महाभाग वगर संघपति न थवाय ।।

कोटि-कोटि वंदन दादा गुरुदेव को, खरतरगच्छ शिरोमणी कान्तीसागरजी को,
कोटि-कोटि वंदन आपके परिवार को, जैन शासन के महान् समुदाय को।
लाख लाख धन्यवाद महासंघ के पुण्यवान संघपतियों को,
लाख लाख धन्यवाद महासंघ के महा यात्रियों को ।।

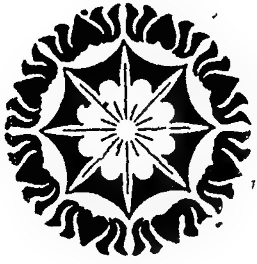
जद आ संघ शत्रुन्जय री तलेटीये पगला करेला,
भरत क्षेत्र मे जैन शासन रो जय-जयकार होवेला।
जद आ संघ पवित्र गिरीराज ऊपर चढारण करेला,
जैन शासन गगने पुष्प वृष्टि होवेला।
जद आ संघ नवटूकों रा मंदिरो रा दर्शन करेला,
तीन हजार धवल मंदिरो री घंटडियों रणकार करेला।
जद आ संघ मोतीसा, जावडसा, जगडूसा, समरसा, वस्तुपाल, तेजापाल रा मंदिरों ने निहालेला,
पृथ्वी ऊपर स्वर्ग देखण रो अनुभव करेला।
जद आ संघ मरुदेवा माता जाया दादा आदिनाथ ने भेटेला,
संघ रा, महायात्रियो रा, भवोभव रा बंध आ पले टूटला।
जद आ संघ रा संघपति तीर्थ माल पहरेला।

(1) सकल संघ अठीखम हाजिर रेवेला,

(2) कान्तीसागरजी रो सपनो पुरो होवेला।

(3) याद राखजो ऐडी घडी फेर नहीं आवेला।





बाड़मेर का ऐतिहासिक पद-यात्री संघ

☐ लूणकरण सिंघवी, बाड़मेर (राज.)

भारत की गौरव भूमि पर कई भव्य महान् आत्माओं, सन्तों एवं महापुरुषों ने जन्म लेकर यहां की माटी को चन्दन का रूप दिया है। राष्ट्रीय, सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों एवं हर क्रियाओं में भारत एक गौरवशाली देश रहा है। अपने-अपने धर्म में कई महापुरुषों ने जन्म लिये है। जिसका नाम आज भी उजागर है। भारत की इस गौरवशाली मरु-भूमि पर जैन-धर्म ने एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रखी है। जैन-धर्म के कई संतों, आचार्यो एवं महापुरुषो ने इस माटी में जन्म लेकर कई कुरीतियों एवं कुकार्यों का अन्त किया है।

वर्तमान युग में ऐसे कई महापुरुष इस मरु-भूमि पर अपने धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु भ्रमण-शील है। हमारे पूज्य गुरुदेव, प्रज्ञा-पुरुष, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, व्याख्यान वाचस्पति, अनुयोगाचार्य श्री श्री 1008 मुनिराज श्री कांतिसागरजी महाराज साहब भी एक वे महापुरुष है जो देश के कौने-कौने मे अपने धर्म के प्रचार-प्रसार मे तल्लीन है। पूज्य गुरुदेव की अमृत-सी वाणी दिल की गहराई तक प्यास बुझाकर शांति फैलाती है। गुरुदेव के चिरस्मरणीय कार्य जो आज भी इतिहास मे स्वर्णाक्षरो से अंकित है। पूज्य गुरुदेव का एक महान्-कार्य, जो बाड़मेर से पालीताणा जी महातीर्थ का पैदल-यात्री सघ है जिसमें गुरुदेव ने उन भटके हुए अन्धकार के राहियों को उस प्रकाशमय रोशनी में पहुंचाया है। गुरुदेव का यह संघ हमेशा चिरस्मरणीय एवं इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों से अंकित होगा।

31 जनवरी, 1980 की वह सुबह हमेशा के लिए ताजी एवं स्मरणीय हो गयी है। सारी बाड़मेर नगरी में खुशी की लहरे दौड़ी। हर गली एवं मोहल्लों के लोगों में खुशी एवं उमंगें समा रही थीं। प्रातः की बेला में संघ के प्रस्थान की शहनाई बज उठी जो जमीन से लेकर अम्बर तक गूंज रही थी। प्रातः 11 बजे पूज्य गुरुदेव श्री कांतिसागरजी महाराज की निश्रा में हाथी, घोड़ों, ऊंटो, रथ, पालकी एवं कई बैण्डों की मधुर ध्वनियों के बीच जैन न्याति नोहरे से लगभग 1000 यात्रियों एवं अन्य जैन-अजैनों के हजारो समूहों द्वारा संघ का प्रस्थान हुआ। संघ प्रस्थान-जुलूस मे हजारो नर-नारी संघ को विदाई देने हेतु शामिल हुए। स्थानीय चुंगी-चौकी के प्रांगण में संघ विदाई-समारोह मनाया गया जिसकी अध्यक्षता माननीय श्री देवेन्द्रराज जी मेहता ने की एवं मुख्य अतिथि बाड़मेर नगर के जिलाधीश श्री फतहसिह चारण, पुलिस अधीक्षक श्री राम-जीवन मीणा एवं दिल्ली से पधारे माननीय सेठ मणिलाल जी डोसी थे। संघ विदाई-समारोह मे समस्त वक्ताओ ने संघ-यात्रियो की यात्रा सफल, सुखमय एवं आनन्दमय होने की कामनाये की। तथा स्थानीय जैन मण्डलो द्वारा संघ विदाई गीत भी गाये गये। समारोह के सम्पन्न होने के तुरन्त

बाद सघ अपनी मजिल की की ओर बढा। सघ का प्रथम प्रवेश स्थल पर सघ साय छ बजे पहुँचा जिसमे सघ यात्रियो के अलावा कई अन्य सज्जन भी पधारे। जिनके भोजन आदि की पूरी व्यवस्था बाडमेर के जैन मण्डलो ने की। इस तरह धीरे-धीरे सघ अपने लक्ष्य की ओर बढता गया। कई स्थानो पर सघ के स्वधर्मीवात्सल्य भी हुए तथा कई स्थानो पर सघ के भव्य स्वागत हुए। धीरे-धीरे सघ ने राजस्थान की सीमा को पार करके गुजरात राज्य मे प्रवेश किया। गुजरात के हर गाव मे सघ के बडे ही शानदार स्वागत हुए। जहा जहा सघ का पडाव पडता, वहा पर नवीन नगरी बस जाती। गुजरात मे जहा भी सघ का पडाव होता वहा पर रात्रि को लोग आस-पास से सघ को देखने आते थे। सघ का हाथी सघ का आकर्षण बना हुआ था जिसको देखने गावो के लोग दूर-दूर से भी आते थे। इस तरह चलते-चलते सघ सौराष्ट्र की सीमा मे पहुँचा। वहा भी सघ के शानदार स्वागत हुए।

सघ मे बिजली, पानी, अस्पताल, पोस्ट-आफिस, पुलिस आदि की समुचित व्यवस्था थी। दैनिक कार्यक्रमानुसार सघ मे प्रात प्रतिक्रमण करके सघ का विहार होता। जो लगभग आठ बजे अपनी मजिल पर पहुँच लेता, वहा पर नाश्ता होने के बाद पूजा-पाठ आदि का कार्यक्रम होता, उसके बाद दोपहर को खाना तथा बाद मे प्रवचन होता उसके बाद थके हुए यात्रियो को आराम तथा फिर शाम को खाना खाने के बाद शाम को प्रतिक्रमण होता तथा उसके बाद रात्रि म भजन-मण्डलिया एव भक्ति-भावना का कार्यक्रम होता और फिर वही प्रात ।

इस तरह पूज्य गुरुदेव श्री कातिसागर जी महाराज की पावन निश्रा मे सघ दिन-प्रतिदिन अपने पथ की ओर बढता जा रहा था। इस तरह धीरे धीरे 23 मार्च का दिन नजदीक आ रहा था। यात्रियो के मन खुशी के मारे फूले नही समा रहे थे। यात्रियो के मन खुशी से नाच रहे थे। आखिर 23 माच 1980 का दिन आया। पालीताणा तीर्थ पर हजारो नर-नारी देश के कोने-कोने से सघ के स्वागत हेतु पधारे। प्रात की शुभ वेला मे गुरुदेव सहित सघ ने पालीताना की पावन भूमि पर प्रवेश किया। हजारो नर-नारी सघ के स्वागत हेतु आगे बढ रहे थे। 23 माच के शुभ दिन सघ ने अपनी अतिम मजिल पा ली और चैन की साम ली। इस दिन यात्री विश्राम एव परिजनो से मिल रहे थे तथा आपस में सम्पन्न यात्रा की शुभकामनायें ले रहे थे। 24 माच के शुभ दिन सघ यात्री दादा श्री आदिश्वरजी के दरबार मे प्रवेश के लिए चढने लगे। वहा पर उन्होने दर्शनादि करके खुशियो से झूम रहे थे। वहा के प्रागण मे सघ का समापन समारोह मनाया गया जिसकी आज भी साक्षात् फिल्म बनी है। सघ का समापन समारोह बडी धूम धाम से मनाया गया। नील गगन के इन्द्र-देव भी आज प्रसन्न चित्त थे।

धन्य हैं ऐसे पूज्य गुरुदेव को जो एक ऐसा महान् काय करके अपना नाम उजागर करें। पूज्य गुरुदेव श्री श्री 1008 श्री कातिसागरजी महाराज के इस पैदल सघ का नेतृत्व बाडमेर के समाज सेवी सेठ श्री भवरलालजी बोहरा तथा सचालन बाडमेर के जैन मण्डलो ने किया।

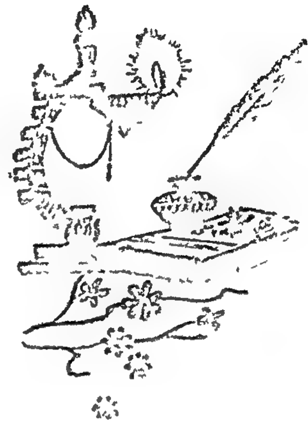
"जय गुरुदेव।" 'जय महावीर'

"धन्य हो सघ यात्री"





पूज्य गुरुदेव अपने मुख्य शिष्य मुनि श्री मणिप्रभ सागरजी के साथ मंतणा करते हुये ।





संघपति श्री मणिलालजी डोसी क्रिया करते हुये ।
मुनि मणिप्रभसागरजी निर्देश देते हुये ।



विशिष्ट मुद्राओं द्वारा चावलों को अभिमन्त्रित करते हुये पूज्य गुरुदेव श्री



श्री शान्तिलालजी पारख द्वारा साफा पहनाते हुये संघपति श्री मणिलालजी डोसी हास्य की मुद्रा पलों में ।



अ भा स महासघ क उपाध्यक्ष श्री सुमतिचदजी बाथरा सघपति श्री भवरलालजी बाहरा का स्वागत करत हुय ।



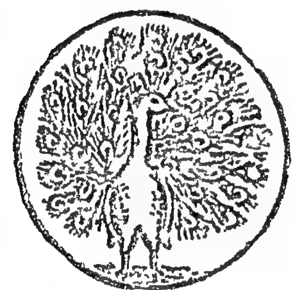
फूलमाला स लद सघपति श्री मणिलालजी डोसी प्रसन्न मुद्रा मे



दान की जड़ सदा हरी



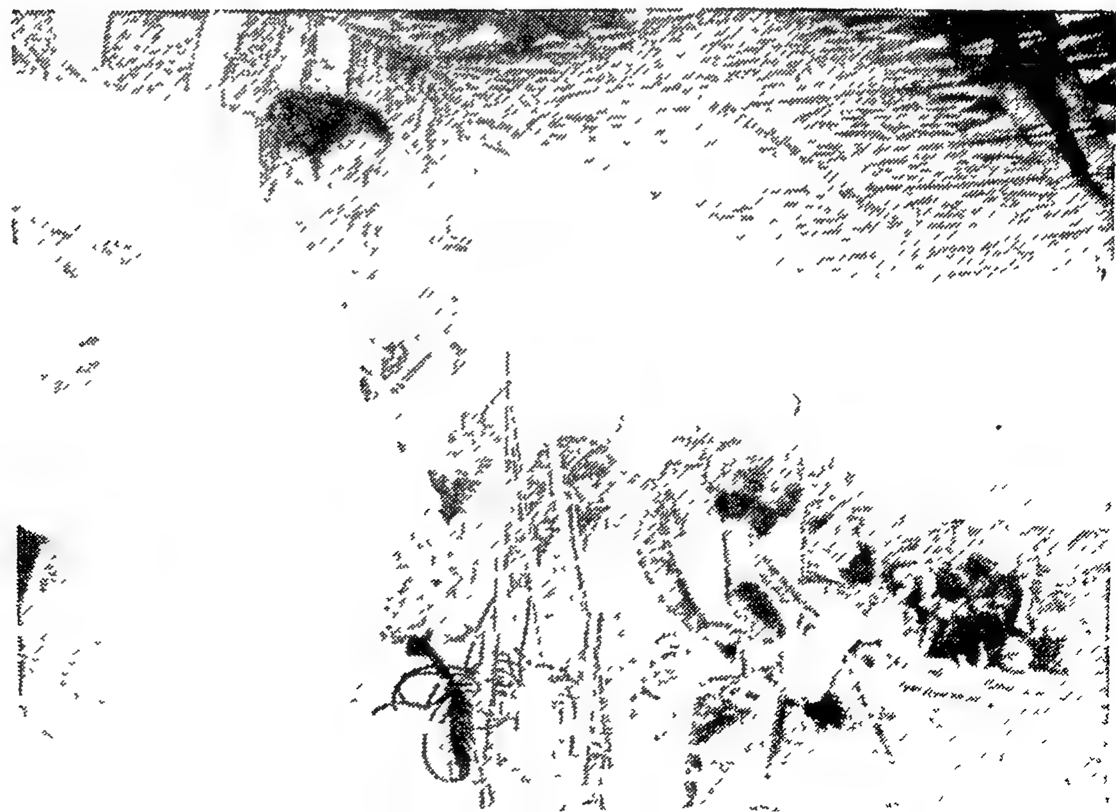
वाड़मेर से प्रस्थान के समय दान की घोषणा
करते हुये श्री मणिलालजी डोसी



लगन और निष्ठा

वाडमेर से प्रस्थान के समय जिलाधीश श्री फतहसिह चारण विदाई देते हुये ।

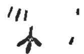






पदयात्री सघ में सवाये दे वाल श्री आदिश्वर जैन मण्डल क
कायकता एव पदाधिकारी





दादा कल्याण जैन मण्डल, बाडमेर



छःरि पालित यात्रा संघ के अन्तिम क्षण

☐ लेखक : मुनि मणिप्रभसागर

वक्तव्य का शीर्षक तय करना जितना सरल है, शीर्षक के विषय से सम्बन्धित लिखना, उतना सरल नही जान पड़ता।

आदत है मेरी कि लेख लिखने के पूर्व विषय का चयन करता हूँ फिर अन्तःस्तल की गहराइयों मे शीर्षक खोजता हूँ और फिर "क्या लिखना है ?" इसका पूर्णतया विचार करने के बाद, उन विचारों को मानसिक रूप से दृढ करने के बाद कलम हाथ मे लेकर लिखने बैठ जाता हूँ !

किन्तु स्वयं की हरकत पर मुझे आश्चर्य हो आया उस समय जब बिना अधिक सोचे, शीघ्र एक पन्ने पर शीर्षक लिखा और लिखता चला गया।

बात यो बनीं—

ता० 17-6-1980 की डाक देखी तो सुविज्ञ पत्रकार श्री रावलमलजी जैन "मणि" का लेख पढने को मिला। शीर्षक देखा और अन्तःस्तल मे हलचल मची ! शीर्षक था—

"छ रि पालित यात्रा संघ
तैयारी के प्रारंभिक क्षण"

सोचा, श्री मणिजी ने स्मारिका के लिये प्रारभिक क्षणो के सम्बन्ध मे आलेख का प्रस्तुतीकरण किया है, तो मैं "अन्तिम" क्षणो के लिये क्यो न लिखूं ?

लेकिन फिर समझ में आया कि "यात्रा सघ के अन्तिम क्षण" ये क्षण कौन-से हो सकते है ? यह तो सोचा ही नही, इस पर तो गौर किया ही नही ?

क्या पालीताणा प्रवेश के क्षण-अन्तिम क्षण हो सकते है ?

नहीं, क्योकि दूसरे दिन भी सभी यात्री, कार्यकर्त्ता साथ ही थे !

तो वे क्षण अन्तिम हो सकते है जिन क्षणों में यात्रियों ने पालीताणा तीर्थ का शारीरिक त्याग किया ! अर्थात् अपने-अपने स्थान पर जाने के लिये अनेक प्रकार के वाहनों में विराजे !

लेकिन वे क्षण "यात्रा-सघ के अन्तिम क्षण कैसे हो सकते है ? क्योकि यात्रा संघ ने तो उन सभी यात्रियों के हृदय पर गहरा प्रभाव छोड़ा है, जो मिटाये नही मिट सकता है, हटाये हट नहीं सकता, जलाये जल नही सकता, उड़ाये उड़ नहीं सकता।

फिर वे तो केवल शारीरिक रूप से ही पद यात्रा संघ से बिदाई ले रहे थे, किन्तु मन-हृदय-आत्मा, वह तो उस क्षण तक पद यात्रा संघ में रमण करता रहेगा, जिस क्षण तक श्वासोच्छ्वास की क्रिया चलती रहेगी, विचार-प्रवाह बहता रहेगा !

फिर ! फिर मैं पद यात्रा संघ के अन्तिम क्षण किन क्षणों को मानूं ?

फिर मैं पद यात्रा संघ के
अन्तिम क्षण
किन क्षणों को मानूं ?

बाड़मेर से पालीताना पैदल यात्रा संघ के लिये साधु-साध्वी समुदाय को आमन्त्रित करने हेतु गये प्रतिनिधि मंडल की रिपोर्ट

चार सदस्यों यथा श्री नैनमल मसाली, भगवानदास सेठिया, चिन्तामनदास सखलेचा एवं आसूलाल धारीवाल का एक प्रतिनिधि मंडल श्री नैनमल मसाली मंत्री चौमासा कमेटी एवं ट्रस्टी खरतरगच्छ बाड़मेर के प्रतिनिधित्व में बाड़मेर से अहमदाबाद, बड़ोदरा, बम्बई, अमलनेर, रायपुर, धमतरी, नया पारा, राजीम, जबलपुर एवं जयपुर हेतु दिनांक 7-10-79 को बाड़मेर से रवाना हुआ तथा दिनांक 15-10-79 को वापिस बाड़मेर लौट आया। प्रतिनिधि मंडल द्वारा की गई विनती एवं तत्सम्बन्धी स्वीकृति का ब्यौरा स्थानवार निम्न रहा —

अहमदाबाद

दिनांक 8-10-79 को अहमदाबाद में मुनि श्री कल्याणसागरजी एवं श्री कैलाशसागरजी से विनती की गई, जिसे उन्होंने स्वीकारा। स्वीकारने पर भगवान् की जय-जयकार कर प्रतिनिधि मंडल ने बड़ोदरा के लिए प्रस्थान किया।

बड़ोदरा

दिनांक 8 10 79 को बड़ोदरा में साध्वी श्री पवित्र श्रीजी आदि ठाणा 7 से विनती की गई जिसे उन्होंने स्वीकारते हुए 3 ठाणा पैदल संघ में भेजने हेतु वांछित आश्वासन दिया। इसके बाद प्रतिनिधि मंडल ने बम्बई की तरफ कूच किया। वहाँ के बड़ोदरा के प्रमुख श्रावक श्री शांतीलालजी पारिख ने भी संघ की सफलता की पूर्ण कामना करते हुए उसमें शामिल होने की प्रबल भावना दिखायी। प्रतिनिधि मंडल बम्बई से अमलनेर के लिये सायं सवा सात बजे की गाड़ी से रवाना हुआ।

बम्बई

दिनांक 9-10-79 को बम्बई में अञ्चलगच्छीय आचार्य श्री गुणसागरजी म० सा० से विनती की गई, जिस पर आचार्य श्री ने फरमाया कि वे फाल्गुन माह में अञ्चलगच्छ के अखिल भारतीय अधिवेशन में व्यस्त रहेंगे अतः उनके लिये इसमें आना सम्भव नहीं होगा। बाड़मेर स्थित चार ठाणों के लिये उन्होंने कहा कि वे उन्हें पैदल संघ में शामिल होने हेतु अलग से पत्र लिख देंगे। ये चार ठाणा लोद्रवाजी की यात्रा समाप्त कर संघ में शामिल हो जावेंगे। इसके अतिरिक्त यदि कोई और ठाणे शामिल होना चाहें तो वे उन्हें इस हेतु स्वीकृति दे देंगे, ताकि वे रास्ते में कहीं पर भी इसमें शामिल हो सकें। वहां पर प्रातः व्याख्यान में उपस्थित श्रावकों एवं श्राविकाओं में भी संघ में शामिल होने की प्रबल भावना दिखलायी पड़ी। बम्बई में श्री निपूणा श्रीजी आदि ठाणा 5 ने

भी विनती को स्विकारा तथा उनके गुरुआनी श्री जिन श्रीजी की स्वीकृति आते ही संघ के लिये प्रस्थान करने का आश्वासन दिया।

अमलनेर :

दिनांक 10-10-79 को प्रतिनिधि मडल अमलनेर पहुँचा जहाँ पर साध्वी श्री जिन श्रीजी आदि ठाणा 7 विराजते हैं, जिनसे विनती करने पर उन्होने फरमाया कि वे अति वृद्ध एवं बीमार होने से संघ में पैदल चलने मे शारीरिक दृष्टि से अशक्त हैं, लेकिन उनकी दो शिष्याओं को छोड़ शेष सभी शिष्यायें संघ में शामिल होने के लिये पूर्णतः स्वतंत्र रहेंगी तथा उन्हें भेजने हेतु पूर्ण प्रयास करेंगी। श्री निपूणा श्रीजी को वांछित स्वीकृति भेज दी जावेगी। वहाँ के प्रमुख श्रावक श्री खेतमलजी ने भी संघ की सफलता की पूर्ण कामना करते हुए उसमे शामिल होने की प्रवल भावना दिखायी।

अमलनेर से रात्रि की ट्रेन से बैठकर दिनांक 11-10-79 को दोपहर चार वजे रायपुर पहुँचे, जहाँ से वस द्वारा सायं 7 बजे धमतरी पहुँचे।

धमतरी :

दिनांक 11-10-79 को प्रतिनिधि मडल अमलनेर से धमतरी पहुँचा, जहाँ पर साध्वी श्री मनोहरश्रीजी आदि ठाणा 9 विराजते है, जिनसे विनती करने पर उन्होंने अपने कुल 16 ठाणो के साथ सघ में शामिल होने की वांछित स्वीकृति सहर्ष प्रदान कर दी तथा अविलम्ब बाहर विराजमान ठाणों को पत्रादि भी लिखा दिये। पूज्य अनुयोगाचार्य कान्तीसागरजी म० सा० के नाम भी संघ में आने की स्वीकृति बावत पत्र प्रतिनिधि मंडल को दिया। रात्रि को जैन समाज के गणमान्य व्यक्तियो की एक बैठक हुई जिसमें साध्वी श्री ने प्रतिनिधि मंडल द्वारा व्यक्त भावनाओं की सराहना करते हुए धमतरी सघ को भी इसमे शामिल होने की प्रेरणा दी, जिसे उन्होंने स्वीकारा। प्रातः व्याख्यान मे भी संघ में शामिल होने की भावना प्रवल रही। दिनांक 12-10-79 को प्रातः 10 वजे प्रतिनिधि मडल ने नया पारा राजीन के लिये प्रस्थान किया। धमंतरी में प्राप्त सहर्ष स्वीकृति एवं लोगों के उत्साह से प्रतिनिधि मंडल वहुत प्रभावित हुआ जिससे उसने अपनी सभी थकान को भुला दिया।

नयापारा राजीन :

दिनांक 12-10-79 को दोपहर एक वजे यहाँ पर पहुँचे। यहाँ पर साध्वी श्री रमा श्रीजी आदि ठांणा 2 विराजते है। बाड़मेर संघ की विनती की उन्होंने सराहना की। लेकिन स्वास्थ्य मे अशक्त होने के कारण संघ में शामिल होने मे अपनी असमर्थता व्यक्त की। लेकिन श्रावको के एक दल को प्रेरणा से भेजने का आश्वासन दिया। प्रमुख श्रावको ने भी एकत्रित मीटिंग मे इसकी पुष्टि की।

रायपुर :

प्रतिनिधि मंडल दिनांक 12-10-79 को दौपहर 4 वजे रायपुर पहुँचा, जहाँ पर श्री कीर्ति श्रीजी आदि ठांणा 3 बिराजते है, जिन्होने बताया कि उन्हें उनकी गुरुआनी श्री मनोहर श्रीजी का संदेश मिल चुका है तथा वे कार्तिक पूर्णिमा को इस हेतु प्रयाण कर देगी। प्रमुख श्रावकों की एक बैठक में भी उन्होने उन्हें पैदल संघ में शामिल होने की प्रेरणा दी। दिनांक 12-10-79 को रायपुर से रात्रि की वस से दिनांक 13-10-79 को प्रातः 7 वजे जवलपुर पहुँचे।

जवलपुर :

यहाँ पर खरतरगच्छ गणाधीश 1008

श्री उदयसागरजी म० सा० आदि ठाणा 4 विराजते हैं। बाडमेर सघ की विनती की उन्होने सराहना की। उन्होंने बताया कि दो ठाणा अस्पताल मे भर्ती हैं, अत उनके वाछित ऑपरेशन एव कुशल होने के बाद ही वे सघ मे शामिल हो सकेंगे। यदि उनकी अस्वस्थता बनी रही तो उनका शामिल होना कठिन होगा। उन्होंने इसकी सफलता की पूर्ण कामना की। दोपहर पौने पाच बजे की कुतुब एक्सप्रेस से आगरे के लिये प्रस्थान किया, वहां दिनाक 14-10-79 को प्रात पहुचे जहां से सीधा बस में बैठकर दोपहर दो बजे जयपुर पहुचे।

जयपुर

यहा पर साध्वी श्री विचक्षण श्रीजी आदि ठाणा 40 विराजते हैं। विनती को स्वीकारते हुए साध्वी श्री ने साध्वी समुदाय एव श्रावक समुदाय को पैदल सघ मे शामिल होने हेतु प्रति बोध दिया। स्वय कैंसर की बिमारी से पीडित होने के कारण अपना आना गुरुदेव की इच्छा पर बतलाया। श्रावको के नाम भी इस दिन लिखने प्रारम्भ कर दिये गये। जयपुर के प्रमुख श्रावको एव श्राविकाओ को भी व्यक्तिगत विनती की गई, जिसे उन्होंने स्वीकारा। रात्रि को 8 30 बजे की बस मे बैठकर प्रतिनिधि मडल दिनाक 15-10-79 को प्रात 11 बजे बाडमेर पहुचा। साढे सात दिन की अवधि मे प्रतिनिधि मडल ने करीब 5500 किलोमीटर की यात्रा की तथा इस दौरान सिर्फ धमतरी में एक बार रात्रि विश्राम किया। गुरुदेव की अनुकम्पा से प्रतिनिधि मडल अपने लक्ष्य की पूर्ति कर वापिस बाडमेर लौटा, जिसे सभी ने सराहा।

☐ नैनमल जैन, मत्री पॉ0 कमेटी जैन श्री सघ, बाडमेर





पूज्य गुरुदेव पन्नापुरुषश्री एक दार्शनिक मुद्रा में

नवदीक्षित मुनि श्री ऋषिप्रभसागरजी
को चद्दर ओढाते हुए — श्री रतनचन्दजी जैन अनूपशहर



विदुषी आर्या श्री सज्जन श्रीजी म



श्री दौलतसिंहजी जैन दिल्ली



श्री पालीताणा में संघ प्रवेश के दिन फले-चुन्दड़ी

☐ लेखक व इसके संयोजक : **श्री मिलापचंद गोलेछा**
नया माधुपुरा, अहमदाबाद

"फले-चुन्दड़ी" यह एक प्यारा, मीठा, सुनने मे कान को मधुर लगने वाला मारवाड़ी शब्द है। इसी को गुजराती मे "जाफे चोखा" कहते है। इसका नाम लेते ही मारवाड़ मे आदमी मे एकदम उत्साह आ जाता है। मारवाड़ मे तो कोई बडा पवित्र धार्मिक प्रसग होने पर इसका खास आयोजन किया जाता है। गाम के गाम धुवाड़ा बद करके बड़े प्रेम व उत्साह से जीमने को आते है। सिर्फ "फले-चुन्दडी करनी है" ऐसा नक्की होने पर तो बोलियो की भरमार हो जाती है। व बाजे-बाजे तो दो पार्टियो के आपस मे जीद पर तो इसकी सिर्फ आदेश की बोलियाँ हजारो लाखो रुपयो पर चली जाती है व उसके भोजन आयोजन का खर्च तो अलग रहता है।

फले-चुन्दडी का महत्त्व खास कर मारवाड़ी जैन समाज मे है। फिर भी इसके आयोजन का नक्की होने पर व इसका निमन्त्रण अन्य सभी न्याति के आगेवानो व गाम मे टहल पड़वा कर कहने पर जैन समाज के अलावा पुरे गाम मे एक उत्साह की लहर दौड़ जाती है मानो लोगो को निमन्त्रण के साथ ही शुद्ध घी से बनी मिठाई की खुशबु आने लगती है। लोग इसमे सहयोग दे कर इसे सफल बनाने मे उमड़ पड़ते है।

इस फले-चुन्दड़ी का प्रसग तो बड़े अनूठे ढग से पड़ा। इसका आदेश प्राप्त करने वाले महानुभाव व पूज्य महाराज श्री में से किसी को इस बात का कोई ख्याल ही नही था कि पूज्य महाराज श्री इसका आदेश मुझे फरमावेगे और मै उसी समय सहर्ष उसे स्वीकार करूँगा। और इतने बड़े इस प्रसग का मुझे आदेश मिलेगा।

बात यो बनी कि बाडमेर मे अखिल भारतीय श्री श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासंघ की मीटिंग रखी गई। महासंघ के प्रमुख महामंत्री व कार्यकारिणी के सदस्य काफी सख्या मे आए हुये थे। पूज्य महाराज श्री को वन्दनार्थ सब कोई बैठे थे। बातो मे ही पूज्य श्री ने फरमाया कि बाड़मेर से छ. पालित पालीताणा का पैदल सघ नीकाल रहे है। बहुत बड़ा प्रसंग है सो आपकी तरफ से फले-चुन्दड़ी धुमाडा बद सघ प्रवेश के दिन होगी। यह आदेश पाकर वे बड़े प्रसन्न हुये और उसी समय बोले—"पूज्यवर आपकी आज्ञा सिरोधार्य करता हूँ मगर इसकी पूरी व्यवस्था आप श्री को करानी होगी मै तो टाइमसर हाजर हो जाऊँगा" आधा घटा इसके बाबत और बातचीत होकर श्रीमान् की तरफ से फले-चुन्दड़ी होगी यह बात जाहिर कर दी गई। बस इतनी सी टाइम मे इतने बड़े प्रसंग

का आयोजन नकी हो गया और काम श्री जिन-हरि विहार के ट्रस्टियों को सौंप दिया गया।

पालीताणा मे जिन हरिविहार के ट्रस्टियो की मिटिंग मिली और वे इसके आयोजन का नकी करने व व्यवस्था के लिए पालीताणा के नगर सेठ के घर गए। नगर सेठ श्री दलीचद भाई की तबीयत ठीक न होने पर भी उनका उत्साह इतना था कि उन्होंने उमी समय नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलाया और थोडी चर्चा विचारणा के बाद रूपरेखा तैयार कर दी। माल सामान अहमदाबाद से लाने का मेरे जिम्मे रख दिया गया। माल सामान की लिस्ट वजन उतरा दिया गया। शुद्ध घी के बुदी के लड्डू सेव, चावल, चणाका साग व दाल बनाने का नकी हुवा।

वहाँ से श्री आनदजी कल्याणजी की पेढी मे मैनेजर साहब श्री भट्ट साहेब से मिल कर सामान व वडे मे सामान तैयार करने का व पहाड पर श्री आदेश्वर भगवान् की पूजा व पूज्य दादा गुरुदेव की बडी पूजा, माला आदि के आदेश की व्यवस्था करने की अरजी कर दी गई। वह बहुत जल्दी प्राप्त भी हो गई।

इधर कुछ दिन बाद ऐसा मालूम पडा कि पहले फले-चुदडी मे बहुत झगडा व वातावरण खराब हुवा था सो इस टाइम नहीं हो सकेगी। इस पर वहा के श्रीमत सेठ स्व० श्री हीरा भाई मोदी ने निष्ठा व हिम्मत से कहा कि अगर आप धीरज, खर्च में बडा दिल व दिमाग पर काबू रखेंगे तो यह फले-चुन्दडी बडी शानदार व लोग देखते रहेंगे वैसी होगी। पहले भी झगडा सामान लेनदेन बाबत हुवा था। सो यह विचार हो तो यह काम शानदार होगा। और स्वर्गीय सेठ श्री हीराभाई के कहने व उनके मार्ग-दर्शन मे यह काम बडा शानदार ढग से निपटा। योगानुयोग इसके एक महीने बाद ही सेठ श्री हीराभाई मोदी का हाट अटक से स्वगवास हो गया। यह काम उन्हीं के आभार से परिपूर्ण हुवा।

सघ के पहुँचने के एक महीना पहले वहाँ इसकी व्यवस्था, नोता देना, लिस्ट तयार करना, न्याति वार लिस्ट वगैरा का काम श्रीयुत् सेठ साहब हीराभाई मोदी व श्री बाबुभाई ब्रह्मभट्ट व श्री बाबुभाई ब्रह्मभट्ट को सौंप दिया गया। मुझे ता० 16 3-80 तक सामान लेकर पालीताणा पहुँचने का कहा गया। हम 3-4 व्यक्ति इस काम के लिए नकी हुवे। उसी मुताबिक सब सामान व रसोईया वगैरा लेकर मै पालीताणा पहुँच गया मगर दूसरा कोई वहाँ नहीं आया। इस टाइम कम था सामान तैयार कराना था, भट्टियाँ खोदानी थी वह सब काम मेरे अकेले पर पड गया, मैंने काम शुरू करा दिया माल सामान ता० 20-3-80 तक तैयार हो गया। ता० 21 व 22 को वह सामान न्याति वार आगेवानो को बुला कर प्रेम पूर्वक सम्मान के साथ उन्हें सौंपा गया तब मुझे वहाँ ऐसा अनुभव हुवा कि फले चुदडी धुमाडा बद का अकेले मारवाड ही नही गुजरात मे भी बहुत बडा महत्व है। जैन समाज सिवाय अन्य न्याति म भी इसके प्रति कितनी श्रद्धा व उत्साह है। आपको क्या बतावें अन्य जाति वाले के उत्साह की बात —

1 सामान लेने आने वाले मुखिया, आगेवान बडी नम्रता व प्रेम से पेश आते थे।
2 सामान ले जाने को अपने बैलगाडी व लारियाँ सजा सजा कर ले जाते थे।
3 माल ले जाते समय पूरे नगर मे इसकी इतनी प्रशसा करते कि न पूछो बात।
4 मुस्लिम भाइयो ने अपने कत्लखाने बद रखे।
5 जैनेतर जाति के करीब-करीब सब जातियो ने सघपति व फले-चुदडी वाले सेठ श्री को हार फूल तोरा बाजो से बधाया।
6 मास बेचने वाले भाइयो ने अपनी दुकाने बिलकुल बद रखी।
7 जीमने के बाद बढा हुवा सामान वापिस ला-लाकर दिया।

8. समस्त ब्राह्मण समाज ने इकट्ठे होकर एक जगह भोजन किया ।

9. गरीबो को जिमाने वाली संस्था मंदिर जो कि किसी के वहाँ का खाना नहीं लेते उनको प्रेम के साथ कहने पर सहर्ष सामान उसी समय स्वीकार करना ।

10. फले-चुन्दड़ी निपटने के बाद शुभकामना देने हेतु पूज्य महाराज श्री के पास आना ।

11. प्रशंसा करते हुये कहना कि पूज्य महाराज साहब हमें तो इतना सामान मिला कि आपकी दया से 3-3 दिन तक हमने खाया ।

12. बाहरे वाह फले-चुदन्ड़ी हो तो ऐसी हो ।

हाँ तो ता० 22-3-80 को पूरे भोजन की तैयारी हो गई व पूज्य महाराज श्री ने जिमाने का जिमा श्री विमल जैन मण्डल श्री आहोर, श्री जिनदत्त सुरी सेवा मण्डल श्री मद्रास व अन्य बाड़मेर वाले सज्जनो को सौपा । आहोर मण्डल के अध्यक्ष ने मुझसे कहा कि हम जुलूस के पूर्ण होने के बाद 1½ घटा आराम करके आ जायेंगे । श्रीमान् जसराजजी लूणिया मन्त्री श्री जिनदत्त सूरि सेवा मण्डल श्री मद्रास ने कहा कि हम 20 आदमी तो 11 बजे वहाँ हाजिर हो जाएँगे ।

ता० 23-3-80 को सुबह शानदार ढंग से पूज्य आचार्य भगवन्तो, मुनि मण्डलो, एक सरखे ड्रेस वाली 108 बेड़े वाली बहिनो व अन्य न्याति ज्ञाति जाति के आगेवांनो के ढोल, बैंड, त्रांस व फूलमाला हारातोरा व जयनादो की आवाज के साथ व नगर के प्रतिष्ठित मुख्य पुरुषो व सघपतियो, संघयात्रिको के साथ फले-चुन्दडी वाले सेठ व और भी हजारो की मानव मेदनी के साथ खरतरगच्छ भूषण पूज्य गुरुदेव अनुयोगाचार्य श्री कान्तीसागरजी म० सा० का जुलूस गुहलियाँ करते व दरवाजो से सजाए हुवे नगर के मुख्य-मुख्य सडको से गुजरता हुवा श्री जिनहरि विहार मे करीब 10½ बजे पहुँचा ।

इधर जीमन का टाइम होने पर पुरसने वालों के 12 बजे तक न आने पर दूसरी व्यवस्था करनी पड़ी सो तुरन्त व्यवस्था पूरे ढंग से न होने पर जीमने वालों को कुछ परेशानी हुई । माल सामान के पूरी तरह से तैयारी होने पर भी एक घटा भर जीमने वालो को परेशान होना पड़ा । पीछे संघपति श्रीयुत् द्वारकादासजी राठी ने बड़े सुन्दर ढंग से व्यवस्था की । तब 2½ बजे श्री विमल मण्डल आहोर वाले आए । शांति के साथ जीमन शाम पड़ते तक चलता रहा ?

नगर मे बस–रेल्वे से आने वाले व अकेले विना न्याति वाले झौपडों वगैरा में रहने वाले, घूमते फिरते रहने वाली जाति वाले भाई वहिनों के जीमने की व्यवस्था अलग तैयार सामान भेजकर अनाथाश्रम मे की गई ।

जिन-जिन जाति वालों को सामान कम पड़ा प्रेम से उन्हें लारियां भर-भर कर पहुँचाया गया ।

पालीताणा मे खरतरगच्छ की तरफ से तो यह पहली फले-चुन्दडी, घुमाडा वंद जाफे-चोखा था । ऐसे वहाँ 25 साल बाद यह मौका आया था । इसके पहले दो बार वहाँ फले-चुन्दडी हुई । मगर यह फले-चुन्दड़ी दोनों से वड़ी शानदार, उत्साह के साथ व अलग ढग की हुई । इसलिए यह अपना अलग ही महत्त्व रखती है ।

इस फले-चुन्दड़ी ने पालीताणा तो क्या पूरे गुजरात मे खरतरगच्छ की शोभा मे चार चांद लगा दिये हैं ।



उपरीयाली का विख्यात जैन तीर्थ

☐ भूरचन्द जैन, बाडमेर

धार्मिक, साहित्य एव सस्कृति की रक्षक एव पोषक गुजरात की भूमि सदियो से प्रसिद्ध रही है। इस भूमि मे सभी धर्मों को मानने वाले देश के विख्यात धार्मिक स्थल आज भी भक्ति एव श्रद्धा के केन्द्र बिन्दु बने हुए हैं जिनके दर्शनार्थ प्रति वर्ष देश एव विदेशो से हजारो यात्री यहा यात्रा करने का गौरव प्राप्त करते हैं। जैन धर्मावलम्बियो के लिये यह सदैव सर्वोत्तम पूजनीय भूमि रही है। इस धरती की गोद मे जैन प्रचारको मे जैनाचार्यों, साधु-साध्विया, आचार्य भगवतो एव यहा तक कि कई तीर्थंकरो ने यहाँ की यात्रा की है और यहा पर जैन शास्त्रो, आगमो आदि की रचना भी की है। जिनकी स्मृति मे गुजरात के कोने-कोने मे जैन मन्दिरो की भरमार है। भारत के अनेको जैन तीर्थों मे सर्वाधिक एव सर्वोपरि तीर्थ पालीताणा, गिरनार, शखेश्वर पार्श्वनाथ आदि गुजरात म होने का गौरव प्राप्त किये हुए है। गुजरात के जैन तीर्थों की कडी मे उपरीयाली जैन तीर्थ को भी प्रमुखता की पक्ति मे गिनते हैं।

उपरीयाली प्राचीन जैन तीर्थ है जो वीरमगाव से अठारह किलोमीटर पश्चिम दिशा मे आया हुआ है। इस तीर्थ तक पहुँचने के लिये पाटडी, माडल मे एव वीरमगाव से पक्की सडक से जोडा गया है। वीरमगाव से खाराघोडा रेलवे लाइन पर उपरीयाली हाल्ट रेलवे स्टेशन बना हुआ है जहा से उपरीयाली मन्दिर एक किलोमीटर दूर उपरीयाली गाव मे स्थित है। जिसे प्राचीन 14वी शताब्दी मे उपल्लिया असरी, 16वी शताब्दी मे उपलीयासर, 19वी शताब्दी मे उपरीयाली के नाम से सम्बोधित किया जाता था। आजकल यह उपरीयाली जैन तीर्थ के नाम से परिचायक बना हुआ है।

उपरीयाली गाव मे जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान् का सुन्दर पाषाण एव काँच की कलात्मक चित्रकारी के लिये विख्यात जैन मन्दिर बना हुआ है जिसे जैन तीर्थ के रूप मे सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। जिसके दो प्रवेश द्वार दक्षिणाभिमुख हैं। जबकि मूल मन्दिर का मुख द्वार पूर्वाभिमुख है। मन्दिर आगे से खुला है। मन्दिर मे प्रवेश हेतु नव-सीढिया बनी हुई हैं। जिस पर चार खम्भो पर जैसलमेर मन्दिरो के शिखरो की भाति शिल्पकला का छोटा गुम्बज बना हुआ है। जिस पर पद्मावती एव चक्रेश्वरी की दोनो बाजू सुन्दर प्रतिमायें बनी हुई हैं। इन चारो खम्भो के बीच मे शिल्पकला कृतिया लिये जैन तोरण भी बने हुए हैं।

मन्दिर के प्रवेश द्वार के चार खम्भो एव पीछे मुल गम्भारे तक चारो ओर चार चार खम्भे बने हुए हैं। जो एक दूसरे से सुन्दर शिल्पकला कृतिया लिये तोरणो से जुडे हुए हैं। पश्चिम दिशा के चार खम्भो के बीच जिन श्री आदेश्वर प्रभु का जिन मन्दिर का सभा मण्डप आया हुआ है। मूल मन्दिर के द्वार के आजूबाजू एक-एक सभा मण्डप म प्रवेश करने हेतु द्वार बने हुए है। इस चौक को शृगार मण्डप कहते हैं जिसकी प्राचीरो एव खम्भो

पर शिल्प कलाकृतियों के साथ-साथ कांच की रंग-विरंगी जड़त की हुई है। सम्पूर्ण छत में कांच की सुन्दर रंग-बिरंगी जड़त मे स्वास्तिक के अनेको आकार, भगवान् नेमीनाथ प्रभु की बरात और छत के बीच में गुजरात का विख्यात गरवा नृत्य भी दृष्टिगोचर होता है। नीचे का फर्श सुन्दर रूप लिये संगमरमर का बना हुआ है।

शृंगार मण्डप मे बने सभा मण्डप के तीन प्रवेश द्वार पर संगीन काच की जड़त के द्वारपालो की आकृति देखते ही मन मयूर नाच उठता है। सभा मण्डप के गोल गुम्बज में विविध वाद्ययंत्रो सहित नृत्य करती चौवीस नारियों की काच के टुकड़ों को जोड़-जोड़ कर आकृतियां बनाई गई है। जिनमें एक नारी अन्यों से छोटी है। इस सभा मण्डप की प्राचीरों पर अत्यन्त सुन्दर आकृतियों मे चित्रकार ने भगवान् महावीर, चडकौशिक, गजसुकुमाल सौमिल के सिर पर अग्नि, मैतार्यमुनि सौमीना ज्वाला, नभिरार्षि दृष्ट कसौटी, खदक मुनि के शरीर पर से चमडी उधेड़ने एवं सुदर्शन सेठ व अर्जुन माली आदि के चित्र बना दिये है। जितनी सुन्दर सभा मण्डप की प्राचीरों को प्राचीन धार्मिक कथाओ से अलंकृत किया गया है उतना ही इस सभा मण्डप के सुन्दर संगमरमर के फर्श पर बैठकर सामने मूल गम्भारे में प्रतिष्ठित श्री आदिनाथ स्वामी की महान् चमत्कारी एव प्रभाविक प्रतिमा के दर्शन लाभ होते है।

मन्दिर के मूल गम्भारे के तीन द्वार है। बीच मे मूलनायक श्री ऋषभदेव की एव उसके आजू-बाजू श्री शान्तिनाथ प्रभु एवं श्री पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमाये विराजमान हैं। ये तीनो प्रतिमाये पीले पाषाण की होने से अत्यन्त ही सुन्दर एव आकर्षक लगती है। मूल गम्भारे के दोनो बाजू छोटी-छोटी श्री चक्रेश्वरी एव श्री गरुड़ यक्ष की प्रतिमाये तीर्थ रक्षक के रूप मे विराजमान है। इसी प्रकार सभा मण्डप मे से दोनो ओर दो दरवाजे बने हुए है। इन मन्दिरों पर विशाल शिखर एव गुम्वज भी बने हुए है। मूल मन्दिर के अतिरिक्त उसके साथ जुड़े एक मन्दिर मे भी श्री नेमीनाथ प्रभु की काले पाषाण की प्रतिमा विराजमान है। पास के एक आले मे श्री अजीतनाथ प्रभु की सफेद प्रतिमा के दर्शन होते है। वहां दूसरी बाजू बने मन्दिर मे मूलनायक के रूप मे श्री महावीर स्वामी की चाकलेटी कलर की प्रतिमा विराजमान है जिसके पास बने एक आले मे श्री वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा बिराजमान है।

मूल मन्दिर के पीछे भमती है। भमती आरम्भ होने से पहले एक छोटा गुरु मन्दिर बना हुआ है जिसमे आचार्य देव श्री विजयभक्तिसूरीश्वर जी म. सा. की प्रतिमा बिराजमान की हुई है। उसके आगे की भमती में गिरनार का सुन्दर पट्ट, भगवान् श्री आदिनाथ के भवो के चार चित्र, फिर श्री शखेश्वर पार्श्वनाथ की प्रतिमा, फिर चार चित्र, श्री शत्रुञ्जय का सफेद पट्ट, भवों के छः चित्र, श्री मल्लीनाथ प्रभु की प्रतिमा, भवो के छः चित्र, श्री सिद्धिशिला का पट्ट, भवो के चार चित्र, श्री मनमोहन पार्श्वनाथ प्रतिमा, भवों के चार चित्र, सम्मेतशिखर का पट्ट और आगे ठीक गुरु मन्दिर के सामने श्री शान्तिनाथ प्रभु के अधिष्टायक देव विराजमान है।

उपरियाली का यह मन्दिर एक विशाल ऊची-ऊची दीवारो के बीच 42-44 के क्षेत्र मे बना हुआ है। दक्षिण की तरफ मन्दिर के दो प्रवेश द्वार है। मूल द्वार नया बना हुआ है जिस पर धरणेन्द्र, पद्मावती, धर्मचक्र आदि की प्रतिमायें बनी हुई है। नीचे दोनो तरफ हाथी की विशाल प्रतिमायें बनाई हुई है। प्रवेश द्वार के सुन्दर तोरण पर शिल्प कलाकृतियां कोरी गई है। इस द्वार की दीवार मे भी आगे एक छोटा प्रवेश द्वार बना हुआ है।

वर्तमान मे श्री आदिनाथ उपरीयाली तीर्थ की स्थिति है वहा वि म 1492 मे यह श्री आदिनाथ प्रभु का मन्दिर होने के सकेत मिले हैं। जिसका उल्लेख जय सागर उपाध्याय द्वारा रचित परिपाटी मे उपलियाग्रसरी के नाम से किया गया है। वि स 1525 मे भी इस मन्दिर के होने के सकेत मिले हैं। बताया जाता है कि 17वी शताब्दी के 1703 के आस-पास मे इस मन्दिर पर औरगजेब के सैनिको ने आक्रमण किया उस समय मूर्तियो को जमीन मे भण्डार कर जनमानस अपनी जान बचाने हेतु अन्यत्र चला गया। फिर वहाँ वि स 1919 वैशाख सुदी 15 की रतना नटमी कुम्भार को माटी खोदते प्रतिमायें मिली। कुछ समय वि स 1920 कार्तिक सुदी 15 को जैन समाज द्वारा एक ओरडी बनाकर इन प्रतिमाओ को प्रतिष्ठित किया। वि स 1944 की माघ सुदी 13 शनिवार तक आधुनिक रूप लिये नया मन्दिर बन गया और प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

गुजरात के इस महान् धार्मिक एव पवित्र तीर्थ पर आवास हेतु सुन्दर धर्मशाला एव यात्रियों के खाने पीने हेतु आधुनिक भोजनशाला की उत्तम व्यवस्था भी है। यहा प्रतिवर्ष माघ सुदी 13 एव फागण सुदी अष्टमी को विशाल पैमाने पर मेलों का आयोजन होता है। जिसमें हजारो दर्शनार्थी, यात्री श्रद्धा एव भक्ति के साथ यहा आकर श्री आदेश्वर प्रभु के दर्शन, पूजा, आराधना करते हैं।



खरतरगच्छ की देन

लेखक—**सोहनराज भंसाली, जोधपुर**

पाटन मे दुर्लभराज की राज्य सभा में चैत्यवासियों से शास्त्रार्थ मे विजय प्राप्त करने पर दुर्लभराज ने जिनेश्वरसूरि को "खरतर विरुद" दिया। फलत: सं. 1066 मे खरतरगच्छ का प्रादुर्भाव हुआ। इसके बाद धीरे-धीरे जिनेश्वरसूरि की परम्परा के सुविहित विधि (पक्ष) मार्ग के समस्त साधु समुदाय खरतरगच्छ हो गया और इसी नाम से प्रसिद्ध हुआ।

चैत्यवासियों से शास्त्रार्थ मे विजय प्राप्त करने से आचार्य जिनेश्वरसूरि का नाम पाटन मे ही नहीं सारे गुजरात, मारवाड़, मेवाड़, मालवा, सिंध आदि प्रदेशो में प्रख्यात हो गया। अब तो अनेक चैत्यवासी यतिजनों ने चैत्यवास को त्याग कर क्रियोद्धार किया। वे सयमी और त्यागी साधु बन आपके शिष्य हो गये। सैकड़ो लोग आपके व्यक्तित्व एवं उपदेशो से प्रतिबोध पाकर जैन बने। मन्दिरो की व्यवस्था मे पूजा पद्धतियो मे शास्त्रानुकूल परिवर्तन हुए। सचमुच उस समय जैन धर्म को पतन के गर्त से बचाने तथा प्राचीन श्रमण सस्कृति एव परम्परा के आचार की प्रतिष्ठापना करने का प्रभावशाली कार्य करने के लिए आचार्य जिनेश्वरसूरि का चैत्यवासियो से लोहा लेना कितना साहसिक कार्य था। वह तात्कालिक स्थिति व वातावरण का अध्ययन करने पर ही अनुभव किया जा सकता है।[1]

आचार्य जिनेश्वरसूरि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए मुनि श्री जिनविजयजी ने "कथा कोप प्रकरण" मे लिखा है कि—

"जिनेश्वरसूरि के प्रबल पांडित्य और उत्कृष्ट चरित्र का प्रभाव न केवल उनके शिष्य समूह मे ही प्रचलित हुआ अपितु तत्कालीन अन्यान्य गच्छ एव यति समुदाय के भी व्यक्तियो ने इनके अनुसरण मे क्रियोद्धार और ज्ञानोपासना आदि की विशिष्ट प्रवृत्ति का बड़े उत्साह के साथ उत्तम अनुसरण किया। जिनेश्वरसूरि के जीवन कार्य से इस युग परिवर्तन को सुनिश्चित स्वरूप दिया। तब से लेकर पिछले नव सौ वर्षो मे इस पश्चिम भारत में जैन धर्म का जो साम्प्रदायिक स्वरूप प्रवाहित रहा, उसके मूल में जिनेश्वर सूरि का जीवन सब से अधिक विशिष्ट प्रभाव रखता है। इस दृष्टि से जिनेश्वरसूरि को जो उनके पिछले शिष्यों ने युग प्रधान पद से सम्बोधित किया है वह सर्वथा ही सत्य वस्तु का निर्देशक है।"

निस्सन्देह जिनेश्वरसूरि और उनके शिष्य समुदाय ने चैत्यवासी परम्परा का उन्मूलन कर नये विधि चैत्यों की स्थापना करके श्वेताम्बर जैन समाज में एक नये युग का प्रारम्भ किया। यदि वे उस समय ऐसा नही करते तो आज हमारे ये जैन मन्दिर भोग विलास के मठ और महल बन

1. कुवलयमाला प्रशस्ति व प्रभाविक चरित्र आदि प्रवन्ध ग्रथों के अध्ययन से पता चलता है कि उस समय चैत्यवासियो का वर्चस्व कैसा था।

जाते। ये जैन साधु अन्य धर्म के साधुओं की भाँति मंदिरों के मठाधीश होते। ये धम स्थान, धम साधना के स्थान न रहकर भ्रष्टाचार के गढ हो जाते। मन्दिरो की आय और अन्य करोडो रुपयो की सम्पत्ति इन मठाधीशो के सुख सुविधा और भोग विलास मे खच होती। सचमुच खरतरगच्छ के आचार्यों ने उस समय नये युग का प्रारम्भ कर जैन धम और जैन सस्कृति की महान् सेवा की।

आज श्वेताम्बर जैन सघ मे जो परम्पराएँ और प्रणालिकाएँ प्रचलित हैं उसका बहुत कुछ श्रेय इन खरतरगच्छीय आचार्यों और मुनियो को ही प्राप्त है। इस सम्बन्ध म मुनि जिनविजयजी पट्टावली[1] सग्रह के सम्पादकीय मे लिखते है—

"श्वेताम्बर जैन सघ जिस स्वरूप मे आज विद्यमान है। उस स्वरूप के निर्माण मे खरतरगच्छ के आचाय, मुनि, यति और श्रावक समूह का बहुत बडा हिस्सा है। एक तपागच्छ को छोडकर कोई भी दूसरा गच्छ इसके गौरव की बराबरी नही कर सकता। कई बातो मे तो इस गच्छ का प्रभाव तपागच्छ से भी विशेष गौरवान्वित है। भारत के प्राचीन गौरव को अक्षुण्ण रखने वाली राजपुताने की वीर भूमि का पिछले एक हजार वर्ष का इतिहास ओसवाल जाति के शौर्य, औदाय, बुद्धि चातुय और वाणिज्य आदि महद गुणो से प्रदीप्त है और उन गुणो का जो विकास इस जाति मे इस प्रकार हुआ, वह मुख्यतया खरतरगच्छ के प्रभावान्वित मूल पुरुषो के सदुपदेश तथा शुभाशीर्वाद का ही फल है। इसलिए खरतरगच्छ का उज्ज्वल इतिहास यह केवल जैन सघ के इतिहास का ही एक महत्त्व पूर्ण प्रकरण नही है बल्कि समग्र राजपुताने के इतिहास का एक विशेष प्रकरण है।"

ओसवाल जाति का विकास एव जिनेश्वरसूरि और उनकी शिष्य परम्परा —

जिनेश्वरसूरि की महान् सेवाओ पर विचार करने के साथ-साथ यह समीचीन होगा कि जिनेश्वर सूरि के गुरु वद्धमान सूरि और उनकी शिष्य परम्परा के जिनचन्द्र सूरि, नवागी टीकाकार अभयदेव सूरि, जिनवल्लभ सूरि जिनदत्तसूरि, मणिधारी जिनचन्द्र सूरि, षटत्रिंशद वाद विजेता युगप्रवरागम जिनपति सूरि, जिनकुशल सूरि, जिनभद्र सूरि, जिनचन्द्र सूरिआदि कुछ विद्वान् और प्रभाविक आचार्यों के सम्बन्ध मे कुछ प्रकाश डाला जाय। कारण इन आचार्यों ने भी चैत्यवासी विकृतियो को दूर करके जैन श्रमण सस्था को सयमशील बनाने मे तथा नये नये जैन बनाकर ओसवाल, श्रीमाल, महितमयाण आदि जैन जातियो के विकास मे उल्लेखनीय योगदान दिया है।

इन्होंने ब्राह्मण, क्षत्रिय, महेश्वरी, कायस्थ आदि जाति के लोगो को प्रतिबोध देकर जैन धम मे सम्मिलित कर उनका परस्पर रोटी बेटी व्यवहार प्रारम्भ कराया जो जैन धर्म के लिए ही नही बल्कि भारत देश के लिए भी एक अद्भुत एव अनुकरणीय काय था।

वद्धमान सूरि—आपका समय लगभग स 1000 से लेकर 1088 तक माना जाता है। आपका प्रतिमालेख कटि ग्राम मे स 1045 का मिला है। आप खरतर विरुद प्राप्तकर्ता आचाय जिनेश्वर सूरि के गुरू थे। आपने स० 1026 मे मचेती 1072 मे लोढा और पीपाडा गोत्र की स्थापना की।

जिनेश्वर सूरि—आपका समय स० 1051 से 1111 तक माना जाता है। आपने 1066/74 मे खरतर विरुद प्राप्त किया। तभी से आपकी परम्परा के सुविहित विधि पक्ष के समस्त साधु समुदाय खरतरगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके पूव आपका गच्छ चन्द्र गच्छ था। आपने

1 पट्टावली सग्रह—मुनि जिनविजय।

श्रीपति ढढा, तिलौरा, चील महता (भणसाली) आदि गोत्रो की स्थापना की।

आपने हरिभद्र सूरि कृत अष्टक वृत्ति, प्रभा-लक्ष्य सवृति, कथा कोष, षट स्थानक प्रकरण आदि की रचना की।

जिनचन्द्र सूरि—आप जिनेश्वर सूरि के पट्ट पर थे। आपने सं. 1125 में अठारह हजार श्लोक परिमित संवेग रंगशाला की रचना की। आपने महिलयाण और श्रीमाल जाति को पुनः प्रतिबोध दे जैन बनाया। आपके पट्ट पर आपके गुरुभाई नवांगी टीकाकार अभयदेव सूरि बैठे।

अभयदेव सूरि—आप आचार्य जिनचन्द्र सूरि के पट्ट पर हुए। आपका जन्म स. 1072, आचार्य पद स 1088 और स्वर्गवास सं. 1135 मे हुआ। आप आगमज्ञ और धुरन्धर विद्वान् थे। आपकी लिखी नवांगी टीकाओं को सभी गच्छ और पक्ष के लोग स्वीकार करते है। आपने नये जैन बनाकर खेतसी, पगारिया और मेड़तवाल गोत्रों की स्थापना[1] की। आपने दुबड़ों को प्रतिबोध देकर जैन बनाया।[2]

जिनवल्लभ सूरि—आप नवांगी टीकाकार अभयदेव के पट्ट पर मनोनीत किये गये। आपने भी अनेक स्थानो पर विधि चैत्यों की स्थापना की। आपकी विशेप आवश्यक टीका संघ पट्टक आदि पचासों प्राकृत व संस्कृत में लिखी रचनाएं प्राप्त हैं। बागड[3] क्षेत्र मे विचरण कर आपने अनेक लोगों को प्रतिबोध देकर जैन बनाया। सं. 1142 में कांकरिया सं. 1156 मे चोपड़ा, बड़ेर, साँड स. 1164 मे सिंघी तथा 1167 में बंठिया, लाल-वानी, बरमेचा, हरखावत, मल्लावत, साह, सोलंकी गोत्रों की स्थापना की।

जिनदत्त सूरि—आपको सं. 1169 में जिन-वल्लभ सूरि के पट्ट पर बिठाया गया। आप में एक असाधारण संगठन और निर्माण शक्ति थी। उत्कृष्ट चरित्र, विशिष्ठ ज्ञान, प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं अद्भुत चमत्कारों के प्रभाव से आपने एक लाख तीस हजार नूतन जैन बनाए। आपके बनाए स्तोत्र स्तव आदि द्वारा भूत, प्रेत, विष, रोग आदि दूर हो जाते थे! आप आज भी एक चमत्कारी पुरुप के रूप में पूजे जाते है। देश के हर क्षेत्र के नगरों और गाँवों मे आपकी स्मृति को ताजी रखने के लिए दादाबाड़ियों का निर्माण किया गया है जहां आपकी मूर्तियां व चरणपादुकाएँ पूजी जाती है। जो आपके प्रति अपूर्व श्रद्धा व कृतज्ञता के प्रतीक है। कुछ एक कट्टरपथी व्यक्तियों को छोड़ सभी गच्छ और सम्प्रदाय के लोग आपके प्रति पूर्ण श्रद्धा और भक्ति रखते हैं। आपने मारवाड़, सिंध पंजाब आदि प्रदेशों में विहार कर भिन्न-भिन्न समय भिन्न-भिन्न गोत्रो[4] की स्थापना की जिसका ब्योरा इस प्रकार है—

सं. 1165 में धाड़ेवा, पाटेवा, टाटिया, कोठारी
सं. 1175 में बोरड, खीमसरा, समदरिया
सं. 1176 में कटोतिया
सं. 1181 में रत्नपुरा कटारिया, ललवानी, डागा, मालू, भाभू आदि कई गोत्र
सं. 1185 में सेठी. सेठिया, राका, धोका, बांका
सं. 1187 में शेखलेचा, पुगलिया, राखेचा
सं. 1192 में चोरड़िया. सावनसुखा, गोलेछा, लूणिया आदि
सं. 1197 ये सोनी, पीतलिया, वोहित्थरा आदि
सं. 1198 में आयरिया, लूनावत, बापना आदि
सं. 1196 में भंसालिया, चंडालिया

---

1. ओसवाल जाति के इतिहास से।
2. ओसवाल जाति के इतिहास से।
3. वागड़ क्षेत्र डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ व पिलानी के आसपास का क्षेत्र भी कहलाता था।
4. ओसवाल जाति के इतिहास से।

स 1201 में आवेडा, खटोल
स 1202 मे गडवाणी, भडगतिया, पोकरण आदि

मणिधारी जिनचन्द्र सूरि—

स 1211 मे आप आचाय जिनदत्त सूरि के पट्ट पर मनोनीत किए गए। आप भी एक चमत्कारी पुरुष के रूप मे दूसरे दादा साहब के नाम से पूजे जाते हैं। ओसवाल जाति के विस्तार मे आपका भी बडा योगदान रहा। आपने निम्न गोत्रों की स्थापना का।[1]

स 1214 मे आघरिया
स 1215 मे छाजेड
स 1215 मे मिनी, खजाची, मू गडी, श्री श्रीमाल
स 1217 में सालेचा, दूगड-सूगड, शेखाणी कोठारी, आलावत, पालावत आदि।

जिनकुशल सूरि—

मारवाड के सिवाना मे छाजेड कुल में स 1330 मे आपका जन्म हुआ। स 1377 में आप आचाय बने। आप तीसरे प्रकट प्रभावी दादा साहब के नाम से प्रसिद्ध हैं। आप ने जिनदत्त सूरि कृत चैत्यवन्दन कुलक नामक 27 गाथा की लघु रचना पर चार हजार श्लोक परिमित टीका की रचना की जो आपकी विद्वता की परिचायक है। आपने पाटन में साह, तेजपाल से नन्दी महोत्सव कराया जिसमें 2400 साधु साध्वी आपके साथ थे। स 1380 में साह तेजपाल ने शत्रुञ्जय का सघ आपके सानिध्य में निकाला। इसमे 1305 साधु-साध्वी थे। आपने प्रतिबोध देकर 50,000 नूतन जैन बनाए। आप द्वारा स्थापित निम्न गोत्र[2] हैं —

वावेला, सघवी, जड़िया, डागा आदि 21 शाखाए।

जिनप्रभ सूरि—आपने मोहम्मद तुगलक को प्रभावत किया। आपने भी प्रतिबोध देकर नए जैन बनाये। आपने कल्पसूत्र की सर्वप्रथम टीका रची। आपकी भव्य मूर्ति शत्रुञ्जय पर खरतर वसहि में स्थापित है।

जिनभद्र सूरि—

आपने जैसलमेर, कर्णावती, खभात, नागोर पाटन, जालोर, मांडवगढ आदि अनेक स्थानों पर ज्ञान भडारो कीस्थापना की। जैसलमेर का जिनभद्र सूरि ज्ञान भडार आज भी देश-विदेश के विद्वानो का आकर्पण केन्द्र है। आपके उपदेश से गिरनार चित्तौड, मडोर, जैसलमेर आदि अनेक स्थानो पर मन्दिरो का निर्माण हुआ। आपने सैकडो जिन बिम्बो की अजनशलाका और उनकी प्रतिष्ठाएँ कराई।

जिनचन्द्र सूरि—

आपका जन्म स 1595 में ओसिया के पास खेतासर नामक गाव में ओसवाल वश के रीहड गोत्र मे हुआ था। आप वादशाह अकवर प्रतिबोधक के रूप में प्रसिद्ध हैं। आपको वादशाह अकवर ने युग प्रधान पद प्रदान किया था।[3] आपसे वादशाह अकवर इतना अधिक प्रभावित था कि उसने अपनी पोती (जहागीर की पुत्री) का जन्म मूल नक्षत्र मे होने के कारण उसे अनिष्टकारक मान इस दोप की शाति के लिए जैन विधि से अष्टोत्तरी स्नात्र करने की आज्ञा दी। सम्राट की आज्ञानुसार लाहोर के सुपार्श्वनाथजी के मन्दिर मे यह शातिस्नात्र महोत्सव मन्त्री कमचन्द ने सम्पन्न कराया। मगलदीप और आरती के समय स्वय सम्राट अकवर का पुत्र सलीम (जहांगीर) अनेक सेवको के साथ उपस्थित हुआ। दस हजार रुपये भगवान के सम्मुख भेंट किए। भगवान के स्नात्र

1 ओसवाल जाति व महाजन वश मुक्तावली से।
2 ओसवाल जाति व महाजन वश मुक्तावली से।
3 देखो मन्त्री कमचद वश प्रबन्ध वृत्ति स 1650 मे लिखित तथा जय सोमजी कृत प्रश्नोत्तर ग्रथ मे।

जल को अपने दोनों नेत्रों पर लगाया। अन्तःपुर में भी उस स्नात्र जल को भेजा।

मुसलमान होते हुए भी जैन विधि से जैनाचार्यो के सान्निध्य मे शांति स्नात्र कराना अकबर का आचार्य जिनचन्द्र सूरि एवं जैन धर्म के प्रति अनुराग एवं भक्ति का प्रतीक है।[1]

आपके उपदेश से अकबर ने जीव हिंसा रोकने व तीर्थ रक्षा हेतु कई फरमान निकाले जो फारसी[2] मे है। ये सरस्वती पत्रिका के स. 1912 जून मास के अक में प्रकाशित हो चुके है।

सं. 1617 मे आपका चतुर्मास पाटन में था। इस चतुर्मास मे आपने तपागच्छीय उ० धर्मसागरजी द्वारा लिखित प्रवचन परीक्षा कुमति मत कुदाल, तत्वतरंगिणी ग्रंथों के विरुद्ध जनमत तैयार किया। इसके फलस्वरूप सभी गच्छों के आचार्यो ने इन ग्रंथों को जल शरण कराया।[3] धर्मसागरजी को उत्सूत्र प्ररूपणा के कारण सघ से बहिष्कृत किया। अन्त में धर्मसागरजी ने क्षमा याचना की। देखिये उनका स्वयं का लिखा पत्र जो जैन युग वर्ष 5 पृष्ठ 483 में छपा है धर्मसागरजी द्वारा लिखित मिच्छामि दुक्कड़म पत्र—[4]

स्वस्ती श्री शांती जिन प्रणम्य तिरवाड़ा नगरतः परम गुरू श्री विजयदान सूरि सेवी उ० धर्मसागर गणि लिखति। समस्त नगर साधु साध्वी श्रावक-श्राविका योग्य म ।। आज पछी अमे पांच निन्हव न कहउ पांच निन्हव कह्या हुई ते मिच्छामि दुक्कड़म उत्सूत्र कंद कुदाल ग्रंथ न सद्हउ पूर्वइ सद्ह्यउ हुई ते मिच्छामि दुक्कडम। षटपर्ती चतु· पर्वी आश्री जिम श्री पूज्य आसि (आदेश) ते प्रमाण ।।छ।। चतुर्विध संघनी आसातना कीधी हुई ते मिच्छामि दुक्कड़म्। आज पछी पांचना चैत्य वांधवा ।। तिरवाड़ा माहि श्री पूज्य परम गुरू श्री विजयदान सूरि नई "मिच्छामि दुक्कडम्" ।। दीघउ छई संघ समक्ष ए वोले आ श्री जीणई खोटो सद्ह्यउ, हवई ते मिच्छामि दुक्कड़म्" देज्यो ।। छ ।।

इस प्रकार आचार्य जिनचन्द्र सूरि के प्रभावशाली महान व्यक्तित्व का ही प्रभाव था कि सभी गच्छ के आचार्यो ने प्रस्ताव स्वीकार कर धर्मसागरजी के मिथ्या प्रलापी घासलेटी रचनाओं को जलशरण कराया। उनके संघ से बहिष्कृत कर अन्त में उनसे मिच्छामि दुक्कडम् का पत्र लिखवाकर उनसे क्षमा याचना कराई। यह कार्य कर आचार्य जिनचन्द्र सूरि ने खरतरगच्छ ही नहीं वरन् अन्यान्य सभी गच्छों की अमूल्य सेवा की है।

इस प्रकार जिनेश्वर सूरि की परम्परा के खरतर गच्छीय आचार्यो ने उस समय जैन समाज में प्रचलित बुराइयों एवं शीतलाचार के विरुद्ध बडी दृढता के साथ आंदोलन का संचालन किया। उन्होने गांव-गांव मे विहार कर अपने उच्च त्याग कठोर तप, प्रभावशाली प्रवचनों और चमत्कारों के माध्यम से समस्त जैन समाज को अपनी ओर आकृष्ट किया। उन्होंने गाँव और नगर, राजा और प्रजा, गरीव और अमीर सभी वर्ग के लोगों में जैन धर्म के सच्चे स्वरूप के प्रति चेतना जागृत की।

---

1. देखो युग प्रधान जिनचन्द्र सूरि प्रतिबोध रास व कवि ऋषभदास कृत हीर विजय सूरि रास।
2. ये फरमान फारसी में हैं जिनका अनुवाद मुंशी देवीप्रसाद जोधपुर निवासी ने किया है। फरमान की मूल प्रति लखनऊ के खरतरगच्छ भंडार मे मौजूद है।
3. उस समय जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ उसके नीचे 32 गच्छों के प्रतिनिधि आचार्यो व साधुओं के हस्ताक्षर है।
4. यह पत्र मुनि श्री दर्शनविजयजी द्वारा संपादित पट्टावली समुचय से उद्धृत किया गया है।

बाड़मेर से पालीताणा पैदल यात्रा संघ

कार्यक्रम – 31 जनवरी, 80 से 24 मार्च, 1980

(माह सुद पूर्णिमा 2036 से चैत्र सुद अष्टमी 2036 तक)

क्रम स०	तारीख	मिती		वार	कहा से कहा तक	कि०मी०	स्थान
1	31–1–80	माह सुदी	15	गुरुवार	बाड़मेर से खेतजी प्याऊ	14	खेतजी प्याऊ के पास
2	1–2–80	फागण बदी	1	शुक्रवार	खेतजी प्याऊ से सनावडा	14	स्कूल के सामने
3	2–2–80	"	1	शनिवार	सनावडा से वाघडाऊ	11	स्कूल के पीछे
4	3–2–80	"	2	रविवार	वाघडाऊ से खतरियो की बेरी	14	स्कूल व कुए के पास
5	4–2–80	"	3	सोमवार	खतरियों की बेरी से धोरीमन्ना	12	प्रा पाठशाला के पास
6	5–2–80	"	4	मगलवार	धोरीमन्ना से कोठाला	14	बावे की झूपी के सामने
7	6–2–80	"	5	बुधवार	कोठाला से रामजी गोल	11	पारसमल जैन दुकान
8	7–2–80	"	6	गुरुवार	रामजी गोल से गाधव	11	नारा सिंधी/भवरलाल पुगलिया का पट्रोल पम्प
9	8–2–80	"	7	शुक्रवार	गाधव से झोटडा	15	स्कूल के पास
10	9–2–80	"	8	शनिवार	झोटडा से साचोर	15	हाईस्कूल मैदान
11	10–2–80	"	9	रविवार	साचोर से खोडा	11	कलबी उमा का खेत
12	11–2–80	"	10	सोमवार	खोडा से पीलूडा	13	स्कूल का मैदान
13	12–2–80	"	11	मगलवार	पीलूडा से दूधवा	9	गाव के कुए के पास
14	13–2–80	"	12	बुधवार	दूधवा से थराद	14	राजेन्द्रसूरी सोसायटी
15	14–2–80	"	13	गुरुवार	थराद से ढीमा	12	हाईस्कूल मैदान
16	15–2–80	"	14	शुक्रवार	ढीमा से भोरोल	11	गाव के पास मैदान
17	16–2–80	"	15	शनिवार	भोरोल से ढीमा	11	हाईस्कूल मैदान
18	17–2–80	फागण सुदी	1	रविवार	ढीमा से वाव	11	जैनवाडी में
19	18–2–80	"	2	सोमवार	वाव से भाटवर	13	प्रजापति मोती का खेत
20	19–2–80	"	4	मगलवार	भाटवर से सुईगाव	17	भाभर सडक पर
21	20–2–80	"	5	बुधवार	सुईगाव से उचोसर	12	रमजान खा बाबू का खेत
22	21–2–80	"	6	गुरुवार	उचोसर से भाभर	15	जैन बोडिंग जैन सोसायटी
23	22–2–80	"	7	शुक्रवार	भाभर से देव	16	माताजी मन्दिर के पास
24	23–2–80	"	8	शनिवार	देव से राधनपुर	14	मसाली चेरि ट्रस्ट मैदान
25	24–2–80	"	9	रविवार	राधनपुर से बास्या	14	डाक बगले के सामने
26	25–2–80	"	10	सोमवार	बास्या से समी	10	अब्दुल मलावकम फैक्ट्री

26-2-80	फागण सुदी 11	मंगलवार	समी से चन्दूर	10	सरपंच लक्ष्मणभाई रामसिह का खेत
27-2-80	.... ,, ... 12	बुधवार	चन्दूर से शंखेश्वर	11	वस स्टेण्ड के सामने
28-2-80	.... ,, ... 13	गुरुवार	शंखेश्वर तीर्थ दर्शन	—	—
29-2-80	.... " 14	शुक्रवार	शंखेश्वर		—
1-3-80	.... " 15	शनिवार	शंखेश्वर से दसाड़ा	14	—
2-3-80	चैत्र वदी 1	रविवार	दसाड़ा से पाटरी	15	कच्चा हाईस्कूल मैदान
3-3-80	.... ,, ... 2	सोमवार	पाटरी से उपरियाली	15	जैन धर्मशाला
4-3-80	.... ,, ... 3	मंगलवार	उपरियाली से फूलकी	11	गाव के वाहर
5-3-80	.... ,, ... 3	बुधवार	फूलकी से वीरमगांव	12	हाईस्कूल मैदान
6-3-80	.... " 4	गुरुवार	वीरमगाव से वीठलपारा	16	सड़क के जीवने
7-3-80	.... " 5	शुक्रवार	वीठलपारा से ओलक	16	ओलक से पहले
8-3-80	.... ,, ... 6	शनिवार	ओलक से कोठारिया	14	सड़क के किनारे
9-3-80	.... " 7	रविवार	कोठारिया से लखतर	14	सियाणी दरवाजा जैन सोसायटी मैदान
10-3-80	.... " 8	सोमवार	लखतर से देवलिया	10	सडक किनारे तालाव के पास
11-3-80	.... " 9	मंगलवार	देवलिया से सियाणी	14	गांव के किनारे
12-3-80	.... " 10	बुधवार	सियाणी से लीम्वड़ी	15	जगतनाथ स्वामी आश्रम के पास
13-3-80	.... " 11	गुरुवार	लीम्वड़ी से चांचाणा	16	धधूका 15 कि. मी. वोर्ड
14-3-80	.... " 13	शुक्रवार	चांचाणा से धधूका	15	गनी भाई का खेत
15-3-80	.... " 14	शनिवार	धंधूका से भीमनाथ	17	डाक वगले के सामने
16-3-80	.... " ....अमावस	रविवार	भीमनाथ से वरवाल	14	वरवाल से आगे चूनाभटा
17-3-80	चैत्र सुदी 1	सोमवार	वरवाल से मूलधराई	13	नरसीभाई जीवाभाई खेत
18-3-80	.... ,, ... 2	मंगलवार	मूलधराई से वल्लभीपुर	14	सड़क पर जैन मन्दिर
19-3-80	.... " 3	वुधवार	वल्लभीपुर से धांधली	15	स्कूल के पास पटेल वच्चूभा का खेत
20-3-80	.... " 4	गुरुवार	घावली से सिहोर	7	गांव के वाहर मैदान जैन वोर्डिग
21-3-80	.... " 5	शुक्रवार	सिहोर से पालीताणा मार्ग खेत	11	कुए व खेत के पास
22-3-80	.... " 6	शनिवार	पालीताणा खेत से पालीताणा	12	पालीताणा गुरुकुल
23-3-80	.... ,, ... 7	रविवार	पालीताणा गुरुकुल से पालीताणा नगर प्रवेश		
24-3-80	.... " 8	सोमवार	पालीताणा शिखर यात्रा		शिखर यात्रा एवं संघपति माल महोत्सव

Jainism and Modern Jainies

□ Arya Vishalprabha Shree

"O I most merciful Bhagwan Mahavir,
Thou art universal light
Who illuminated the world on,
What is wrong and right ?"

The Jainism is the most ancient religion in the world and Jainism is developed by Bhagwan Mahavir There are the social virtue and secular value in the Jainism Take great principle of Ahimsa which means non-violence is not a negative virtue but positive doctrine of universal love and peace Peace is ever beautiful A man who is really brave man can possess this excellent virtue or this doctrine of non violence is the symbol of the brave man The non violence is a principle of universal love for the single purpose of transforming human nature from the animal plane into the spiritual plane

Lord Mahavir did not come in the world as a creator but indicator

We always worship Lord Mahavir as the free man from the errors victor of internal enemies, opener of vision of immense know-ledge teacher of doctrine of liberty and perfect man of all the virtues

Bhagwan Mahavir preached us that conquer- the internal enemies like anger, pride delusion, greed and materialism to obtain forgiveness, humility, frankness and contentment If you want to fight fight with your-self or internal enemies Why do you fight the external foes ?

Now-a-days many of us have forgotten the rich and true inheritance that we are born with as the followers of Lord Mahavir May we venture to introduce ourselves as true and real Jainies ? It is a critical question in front of us During the daily life many of us pray that

"I forgive all creatures, let all creatures forgive me; I have affection for all (moving and unmoving) living being and enemity towards none."

Without realization, nobody may be free from errors. Really, success comes to those who dare and act, but it goes seldom to timid. It is true that,

"A man of words and not of deeds,
Is like a garden full of weeds."

A long life may not be enough, but a good life may be enough. So it is our first duty to make the good use of our life. We must dip into the ocean of Jainism and true knowledge. It is a tragedy that we are fond of pictures and novels so we are careless of good literature.

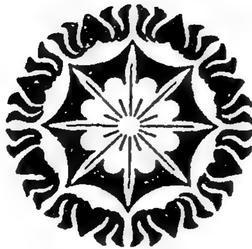
It is true........as

"Like seed, Like fruit (similarly)
Like reading, Like life."

Let us follow the practical path which is shown to us by Bhagwan Mahavir and make ourselves worthy of his true inheritance or make ourselves to call the real and true Jainies. Let us try to spread the flag of non-violence and truth among the people.

In last I heartly pray........

O ! God teach to me to be peaceful.
O ! God teach to me to be bearable;
O ! God teach to me to be merciful,
O ! God teach to me to be servicable........





श्रावक के ग्यारह कर्तव्य
एव
छै.री पालित यात्रा सघ

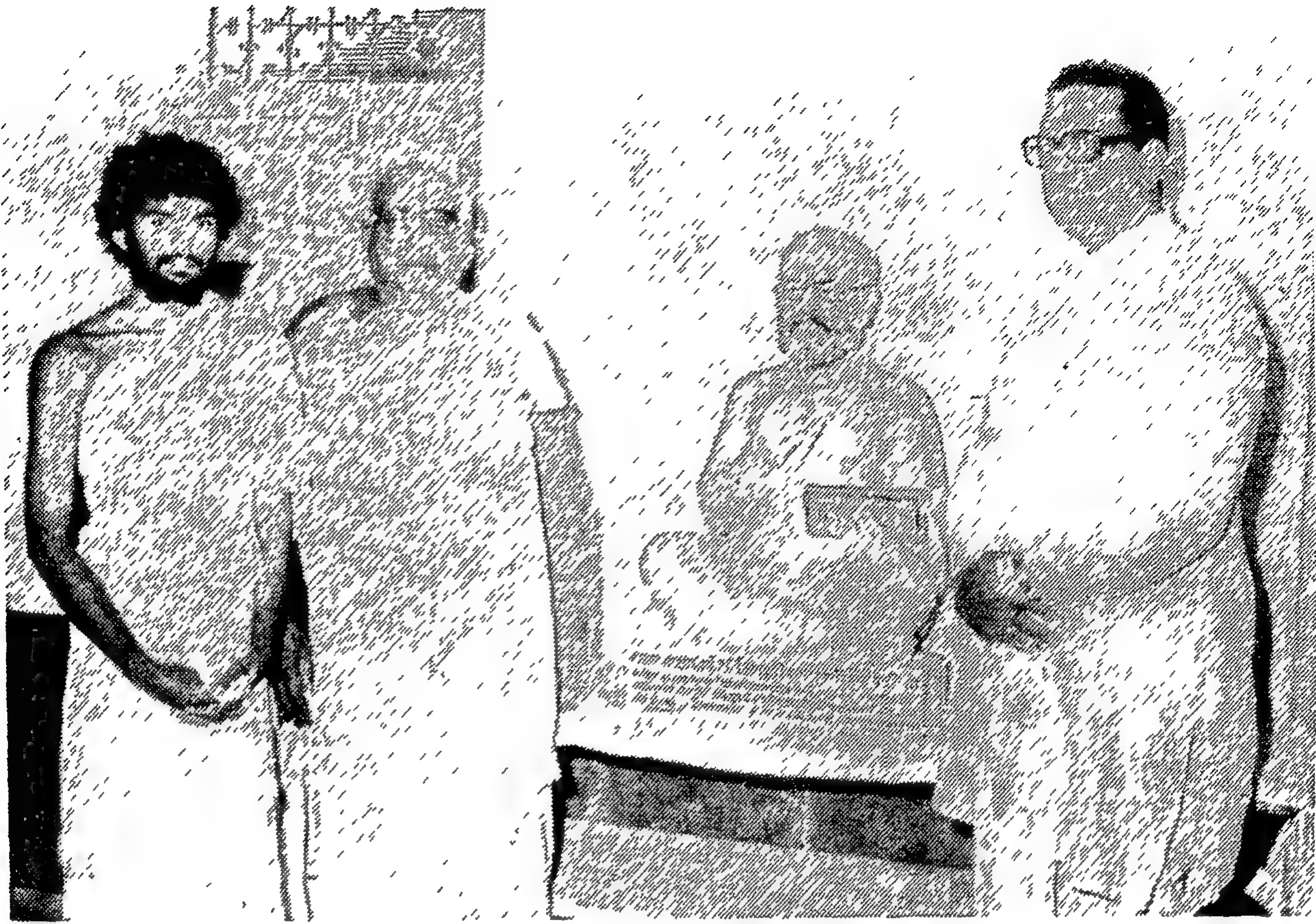
—ले० हीराचन्द बैद, जयपुर

जैन शासन मे पर्वाधिराज पयुपण का अत्यधिक महत्व है। वप के बाकी दिनों जो व्यक्ति आराधना न कर सकें वे भी पर्व के आठ दिनों मे अवश्य ही धममय जीवन जीने की भावना रखते हैं। पर्व के प्रारम्भिक व्याख्यानो मे श्रावक के ग्यारह आवश्यक कतव्यो का विवेचन होता है। उन प्रत्येक कतव्यो का पालन श्रावक को वप मे कम से कम एक बार अवश्यमव करना ही चाहिये। यदि पव की आराधना शुद्ध भाव से की जावे तो वे पव आशीर्वाद रूप बन जाते हैं। इन ग्यारह कतव्या का बोध होने पर हरेक को करने की भावना तो होती है पर जैसे ही पव के आयोजन समाप्त होते हैं वह फिर ससार की भूल भूलैया मे अपने इन कतव्यों को विस्मृत कर देता है। फिर भी उसकी यह भावना रहती है कि यदि थोडे समय में एक साथ इन कतव्यों का पालन कर सकू तो ठीक रहे। ज्ञानी भगवतो ने हर प्रश्न और परिस्थिति का समाधान किया है। तीसरा कतव्य बतलाया है तीथ यात्रा और यदि श्रावक चाहे तो इस कतव्य के पालन मे बाकी के १० कर्तव्यो को समाहित कर सकता है। तीथ यात्रा कैसी हो? यह विचारणीय प्रश्न है। इन कतव्यो का उल्लेख करते वक्त शायद आज सदृश साधन उपलब्ध नही थे। उस युग मे अकेले या अपने परिवार सहित यात्रा करना सुगम नहीं था। अत सम्पन्न व भावना शील व्यक्ति स्वय यात्रा करने का भाव होने पर छै री पालित सघ यात्राओं का आयोजन करते थे। हजारो की सख्या में यात्रिक इन मे जुडते थे, ज्ञानी गुरु भगवतों की निश्रा प्राप्त होती थी। जिनेश्वर भगवत की प्रतिमायें भव्य रथो मे विराजमान होती थी। जहां सघ ठहरता, वहां नगर बस जाता था। माग के स्थानीय सघो को भक्ति का पुनीत अवसर प्राप्त होता था। यात्रा में आने वाले देवस्थानो, उपाश्रयो की स्थिति ठीक न होने पर उनके जीर्णोद्धार का लक्ष्य रहता था, इससे शासन की बडी प्रभावना होती थी। इस तरह की सघ यात्रा छै री पालित यात्रा कही जाती है क्योंकि इसमे शामिल होने वाले प्रत्येक यात्री को छै री का पालन करना आवश्यक है। ६ नियमो का पालन जिनका अन्तिम शब्द री' है के कारण यह छै री पालित कहा जाता है।

१ भूमिसथारी —प्रत्येक यात्री को भूमि पर अपना सथारा बिछा कर ही शयन करना होता है।

२ नारी सग परिहारी —यात्रा मे स्व नारी का सग भी निषेध होता है अत ब्रह्मचर्य का पालन होता है।

३ सचित परिहारी —जीव युक्त वस्तु के उपयोग का त्याग किया जाता है। वनस्पति आदि का अग्नि से परिपक्व बनाकर ही उपयोग किया जाता है। फलादि का रस भी ४८ मिनिट के बाद अचित होने पर ही लिया जा सकता है। इसमें



आचार्य श्री जिनहरिसागर सूरीश्वरजी की मुँह बोलती प्रतिमा के पास पूज्य गुरुदेव, मुनि मणिप्रभसागरजी व जयपुर के श्री हीराचन्द वैद





पूज्य गुरुदेव श्री मन्दिर में भगवान के ऊपर अभिमन्त्रित वासक्षेप डाल रहे हैं।

श्री शांति विजय ज्ञानपीठ के श्री मूलचन्दजी बाथरा
संघपति श्री भंवरलालजी बाहरा का
अभिनन्दन-पत्र भेट करते हुये–

श्री विमलनाथ जैन सेवा मण्डल
आहोर (राजस्थान)

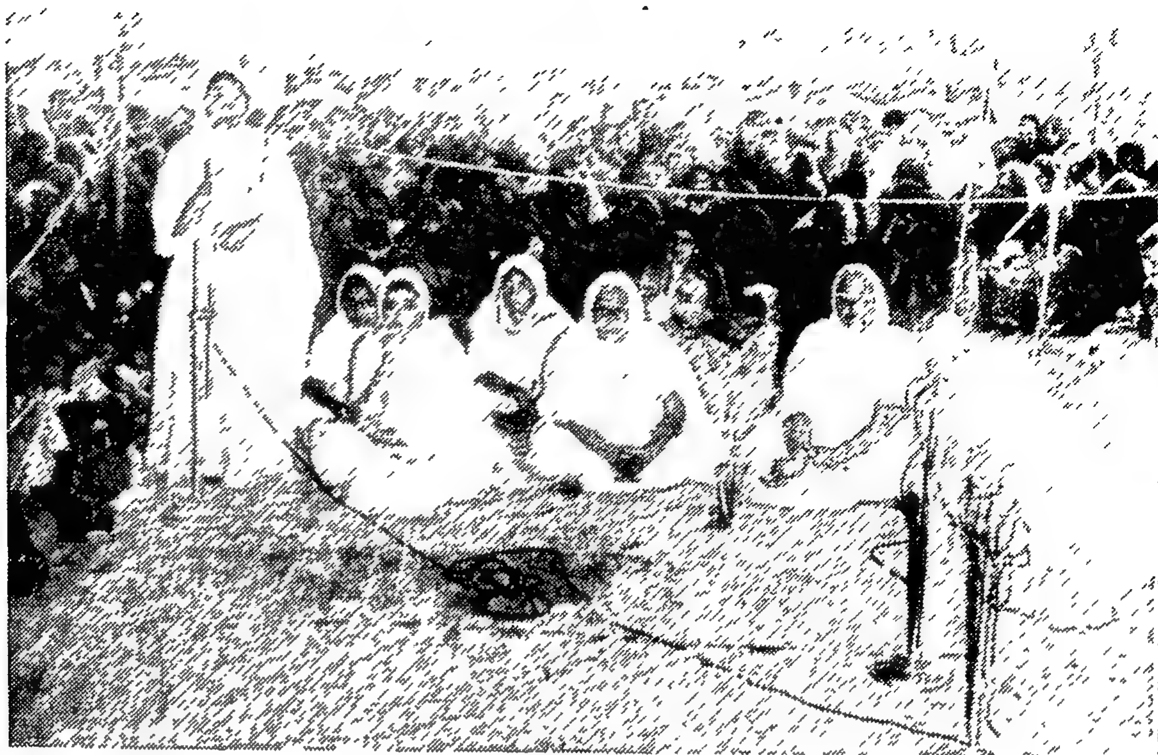


ध्यान

एकाग्रता

व

चिंतन





विशाल जन समुदाय के समक्ष प्रवचन करते हुये—

आर्या श्री विद्युत प्रभा श्रीजी

पूज्य गुरुदेव

मुनिमण्डल के साथ—

सेवा

अनुभूति

एवं

कर्तव्य-निष्ठा





पालीताना प्रवज्ञ पर पूज्य गुरुदय
साहित्य कला प्रमी पूज्य आचाय दव
श्री विजय यशोदय सूरीश्वरजी म के साथ



नाकोडा उपधान तप स्मारिका भेंट क
सम्पादक श्री हीराचन्द बैद, जयपु



संघपति श्री कमलसिंहजी दुधोड़िया का पुष्पाहार पहिनात हुय-
हीर विहार क मानद मंत्री श्री शान्तिलालजी पारख

स्वाद त्याग व हिंसा त्याग का भाव जागृत होता है। अतः यात्रा काल में सचित वस्तु का त्याग होता है।

४. **एकल आहारी :**—एक वक्त भोजन यानी, ऐकासना, गरम पानी का उपयोग तो करना ही होगा। उनोदरी तप का भी लाभ मिलेगा ही। इससे धर्म आराधना में विशेष स्फूर्ति रहती है।

५. **पादचारी :**— वाहन का उपयोग किये वगैर पैदल चलना आवश्यक है। पैदल चलते वक्त अपनी दृष्टि सड़क पर साढे तीन हाथ तक रखनी ही चाहिये जिससे जीवों की जयणा हो सके।

६. **आवश्यकारी :**—श्रावक के आवश्यक कर्तव्यों का पालन करना जरूरी है। दोनों समय प्रतिक्रमण दिन भर मे हुई गलतियों का परिमार्जन्। प्रभु की पूजा आदि कर्तव्यों का पालन करने से चित्त में प्रसन्नता व्याप्त रहती है।

इस प्रकार छै री का पालन करते हुये संघ या यात्रायें की जाती है। यह प्रथा आज भी चालू है। यद्यपि आवागमन के साधन अत्यधिक सुलभ हो गये है, फिर भी जैन शासन की बलिहारी है कि आज भी छै:री पालित संघों के भव्य आयोजन कर पुण्यशाली जैन शासन की महिमा को बढ़ा रहे हैं, अपनी लक्ष्मी का सद्व्यय कर रहे है तथा साधर्मिकों को धर्म मार्ग मे जोड़ कर लाभान्वित हो रहे है।

हम पुनः अपने मूल विषय पर आवे कि इस तीर्थ यात्रा के माध्यम से हम श्रावक के पु:नीत ११ कर्तव्यों का पालन एक साथ कर सकते है।

प्रथम कर्तव्य है संघ सत्कार :—यह सघ उपकारी है. संसार से तरने का साधन है। सघ भी उपेक्षा को तीर्थंकरों की उपेक्षा कहा गया है। तीर्थंकर भी संघ को नमस्कार करते है, साधना का आधार साधर्मी को मानते है तथा आसन पर बैठते वक्त 'नमोतिथ्थस' कहते है। वस्तूपाल तेज-पाल की संघ भक्ति कौन नहीं जानता ? नेपाल में विराजित भद्रबाहु को पाटलीपुत्र के संघ के आदेश की अवहेलना का प्रायश्चित करना पड़ा, संघ को पूजनीय बतलाया। यात्रा संघ के समय इस कर्तव्य का पालन सहज है। अपनी भावना और स्थिति के अनुकूल ऐसे तपस्वी संघ का बहुमान कर प्रथम कर्तव्य का पालन किया जा सकता है।

दूसरा कर्तव्य साधर्मी भक्ति :—साधर्मी जैन शासन का 'डेम' है। यदि वह समृद्ध है तो सातो क्षेत्र समृद्ध बनेंगे। साधनहीन साधर्मी अपने को जागृत करता है यह भावना हमारे दिल में आनी चाहिये। हेमचद्राचार्य ने कुमारपाल को साधर्मी भक्ति के लिये अनूठी प्रेरणा दी। उन्होने वतलाया भूख मानव की सबसे बडी पीडा है। भू-पृथ्वी और ख-आकाश, अर्थात् आकाश पाताल एक हो जावे उसी का नाम भूख है। और साधर्मी इस भूख की पीडा से व्यथित रहे तो मानों हमसे ज्यादा कर्तव्यच्युत कोई है नही। साधर्मी भक्ति से ही तीर्थंकर व गणधर गोत्र बाधा जाता है। प्रसन्नता से की गई साधर्मिक भक्ति का दान गुणाकार बन जाता है एव दान देकर दु:खित होने पर भागाकार बन जाता है। पैसा पाप का मूल है पर भाव पूर्वक उदारता से व्यय करने पर वह पुण्य सर्जन का निमित्त बन जाता है। तीर्थ यात्रा मे साधर्मी भक्ति का अनूठा लाभ प्राप्त हो सकता है। यात्रा में साथ चलने वाले श्रावक श्राविकाओं की भक्ति के साथ मार्ग में आने वाले स्थानों मे रहने वाले साधन-हीन भाई-बहिनों की भक्ति का महान् लाभ अर्जित किया जा सकता है।

तीसरा कर्तव्य तीर्थ यात्रा :—तीर्थ यात्रा यदि पिकनिक न बने तो प्रभु तक पहुँचने का सरलाति-सरल मार्ग है। स्थान-स्थान पर स्थित तीर्थों-मदिरो के दर्शन से महान् लाभ, जगह-जगह के संघो व सार्धमिको की भक्ति का सु-अवसर, मार्ग के स्थानो पर विराजने वाले श्रमण भगवंतों के दर्शन, यात्रा के नियमो को पालकर संयम मार्ग पर चलने की भव्य प्रेरणा, और फिर तीर्थ यात्रा के माध्यम से

श्रावक के ग्यारह कर्तव्यो के पालन का सुयोग।

चौथा कर्तव्य अभिषेक —जिन मदिर की शुद्धि के लिये अट्ठार अभिषेक-शान्ति स्नात्र व अन्य वृहद् पूजाओ को कराना श्रावक के लिये आवश्यक बतलाया है। तीर्थ यात्रा में सहज ही ऐसे अवसर उपलब्ध हो जाते हैं। यात्रा का मूल ध्येय आराधना होता है अत इस समय मे चित्त बाहरी विक्षेपो से निवृत्त बन कर प्रभु भक्ति मे लीन बनता है। मार्ग के बड़े नगरो मे या जहाँ भी अवसर मिले यह लाभ लिया जा सकता है—इससे स्वय के साथ औरो को भी प्रेरणा प्राप्त होगी और लोग प्रभु भक्ति मे जुटेंगे।

पाचवाँ कर्तव्य जिन द्रव्य वृद्धि —मुझे इस भव मे जो लक्ष्मी मिली है वह पूर्व भवो मे मेरी आत्मा द्वारा की गई प्रभु भक्ति के कारण है अत मेरी कृतज्ञता यह है कि मैं उस प्राप्त लक्ष्मी को प्रभु भक्ति मे समर्पित करू। आज स्त्री राग व बाल राग जितना है उसका कुछ अश भी प्रभु राग मे परिवर्तित हो जावे तो आत्मा का कल्याण हो सके। यदि विचारो मे दुष्काल है तो लक्ष्मी का सुकाल कैसे आवेगा। हाँ शक्ति के अनुसार भक्ति हो पर विचारो मे उदारता तो होनी ही चाहिये। आज जिन गावो मे प्रतिष्ठा महोत्सव आदि पर देवद्रव्य की आय उल्लास पूर्वक हुई वहाँ उसी उल्लास से सम्पन्नता भी आ गई। राणकपुर की प्रतिष्ठा के बाद सादडी तथा पाली, तखतगढ आदि के उदाहरण सामने हैं ही। परमात्मा को द्रव्य अर्पण करने पर गरीबी रहती नहीं। हम व्यापार विश्वास से करते हैं तो प्रभु भक्ति मे भी विश्वास का स्थान दीजिये, अवश्य ही पुण्य प्रभाव प्रकट होगा। देव द्रव्य व्यवस्था के परिणामस्वरूप ही जैन तीर्थों व मदिरो की स्थिति हजारो हजार वर्ष से सुदृढ है। देव-द्रव्य के सम्बन्ध मे कठोर नियम हैं। देव के निमित्त बोली हुई बोली का द्रव्य स्वय या परिवार के उपयोग मे लेवें उसे अनन्त दुर्भागी बताया है। देव द्रव्य भक्षण करने वाले के यहाँ से साधु को गोचरी लेना भी नही कल्पता। परमात्मा को अर्पित किये हुये द्रव्य पर आपका अधिकार ही नहीं। उस पर ममत्व रखना तो डूबने का निमित्त ही बनेगा। इस तरह के देव द्रव्य की अभिवृद्धि करना भी कर्तव्य कहा है। तीर्थ यात्रा मे तो अपनी शक्ति अनुसार द्रव्य खर्चो का सुनहरी अवसर प्राप्त होता है। सघ के साथ प्रभुजी का रथ रहता है। रोज पूजा सेवा आरती मे लाभ लिया जा सकता है। मार्ग म आने वाले देरासरो के जीर्णोद्धार मे भी योगदान किया जा सकता है। सघमाल आदि के द्वारा भी देव द्रव्य वृद्धि का अवसर प्राप्त होता ही है।

छठा कर्तव्य धर्म जागरण —सासारिक भावनाओ से परे रहकर अपनी दिनचर्या को धर्ममय ही बनाये रखने की सर्वांग सुन्दर राह है तीर्थ यात्रा। और यह भी सार्धमिक तपस्वी भाई-बहिनो के साथ। पर्वों या पर्व तिथियों पर रात्रि को भी धर्म जागरण का लाभ मिल जावे तो सोने मे सुहागे सदृश्य है। हाँ आशातनाओ से बचने का पूरा ध्यान रखना चाहिये। यात्रा मे इस छठे कर्तव्य का पालन बहुत सुगमता से हो जाता है।

सातवाँ कर्तव्य श्रुत पूजा —'विषम काल जिन बिम्ब जिनागम, भविजन को आधारा' ऐसे महान् आधार श्रुत ज्ञान की पूजा का लाभ तो तीर्थ यात्रा मे मिल ही जाता है। साधु भगवतो के पास खाली हाथ कैसे जाया जावे ज्ञान पूजा तो करनी ही है। ज्ञान की सुरक्षा हमारा परम कर्तव्य है। हजारो लाखो ग्रथो को जलाकर छ ■ माह पानी गरम कर एव रसोई बनाकर जैन आगम विरोधियो ने कितना नुकसान किया पर सात क्षेत्रो मे ज्ञान को तृतीय स्थान देकर हमारे उपकारियो ने जो भावोल्लास प्रदान किया उसी कारण आज हमारा श्रुत साहित्य इतना समृद्ध है। देव द्रव्य के समान ज्ञान द्रव्य की अभिवृद्धि भी आवश्यक कर्तव्य है। आज तो इस द्रव्य की ओर भी अधिक आवश्यकता है। आज यदि जैन साहित्य और धर्म यथा-ईसाई आर्य व मुस्लिम

की तरह जन-जन तक पहुँचाना है तो यही मार्ग है। ज्ञान द्रव्य की वृद्धि करें साथ ही करें उस द्रव्य का सदुपयोग। यह समझलें आज जैन से अधिक जैनेतर विशेष कर विदेशियो को भूख है जैन साहित्य की। यात्रा में उपयोगी स्थानों पर श्रुत पूजा के द्वारा ज्ञान द्रव्य की अभिवृद्धि की जा सकती है।

आठवां कर्तव्य है महा पूजा :— आज तो ऐसी महा पूजाओं मे काफी अभिवृद्धि हुई है। शान्ति स्नात्र पूजा, अर्हन पूजा, नमिऊण पूजा, भक्तामर महापूजा आदि। इन पूजाओं से भाव वृद्धि होगी। नई पीढी को संस्कार मिलेगे, प्रभु के प्रति समर्पण का भाव आवेगा। संघ यात्रा मे बड़े शहरों में इस तरह की पूजा का आयोजन किया जावे तो स्थानीय संघ भी लाभान्वित होगा और नई दृष्टि प्राप्त करेगा। साधु भगवंतो का तो संघ मे योग रहता ही है। अपने गांव मे तो स्थानिक लोग ही लाभ ले सकेगे पर यात्रा मे तो जगह-जगह के अधिक लाभ लेगे और इस सुकृत की सुवास सब ओर व्याप्त होगी। अत छ:री पालित संघ मे ऐसी महा पूजनो की व्यवस्था आठवे कर्तव्य के पालन मे सहाय भूत बनेगी।

नवमां कर्तव्य उद्यापन :—उद्यापन कहें या उजमणा, तपस्या निमित्त, या मांगलिक प्रसंगों के निमित्त उद्यापन करने की प्रथा मंदिर पर कलश चढाने सदृश्य है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र के उपकरणो का अर्पण कर महा महोत्सव का आयोजन करना सुन्दर सुकृत में गिना गया है। ज्ञान व दर्शन के लिये तो समपर्ण के अनेक अवसर प्रस्तुत होते है पर चारित्र धर्म तो जीवन मे आना इतना शक्य नही है। मैं यद्यपि निर्मल चारित्र धर्म की आराधना कर पाने मे सक्षम नही हूँ फिर भी चारित्र के इन उपकरणो के माध्यम से इस मार्ग पर चलने वाले सुविहित श्रमण भगवंतों की भक्ति कर यह भावना भाता हूँ कि मैं भी इस मार्ग पर चलने के योग्य बनं। छ:री पालित संघ मे साथ चल कर मैं संयम मार्ग की ओर बढ़ने का प्रयास कर रहा हूं साथ ही उद्यापन में सहयोगी बन, मैं इस यात्रा को और भी सफल बना रहा हूँ। इस निमित्त से मेरा अहोभाग्य है जो दर्शन ज्ञान और चारित्र के उपकरण समर्पित करने का अवसर मुझे मिला है।

दसवां कर्तव्य है तीर्थ प्रभावना :—तीर्थ यात्रा स्वयं ही तीर्थ प्रभावना की निमित्त है। संघ यात्रियो की भावना, संघपति का समर्पण जितना अधिक होगा तीर्थ की प्रभावना भी उतनी ही होगी और तीर्थ की ऐसी प्रभावना हमारे पापों का क्षय कर पुण्य अर्जन मे सहायक होगी ही पर जो भी इस प्रसंग को देखेगे या सुनेगे वे भी कल्याण मार्ग के पथिक बनेगे। उनका भी तीर्थ यात्रा का भाव जागेगा। हमारे द्वारा सर्जन की भावना तीर्थ के विकास का निमित्त बनेगी। आज यदि पुराने इतिहास को देखे, पढे तो हमें ज्ञात होगा कि प्रभु व तीर्थ के प्रति कैसा समर्पण पूर्वजो ने किया है। विक्रमादित्य महाराजा, कुमारपाल महाराजा एवं महामंत्री पेथड शाह के संघों के विवरण यदि हम पढ़े तो अवश्य ही हमारे दिल मे प्रभु भक्ति व तीर्थ भक्ति का फव्वारा छूटे बगैर रहे नही। वस्तूपाल तेजपाल द्वारा निकाले गये संघ की व्यवस्था के कुछ आंकड़े हमारे हृदय व नेत्र पटल को खोलने में काफी होगे। आज कुछ लोग जो तीर्थ यात्रा मे आडम्बर देखते है उनके लिये ये आंकड़े हृदय परिवर्तन रूप बनेगे। हजार आठसौ वर्ष पूर्व वस्तूपाल के संघ मे निम्न व्यवस्था थी। भगवान के २४ रथ, ५०० पालकी, ४००० बैलगाड़ी, २००० अतिरिक्त बैल, ४५०० सेवक, ७०० सुखासन तपस्वियो के लिये, २२०० श्वेताम्बर साधु, ११०० दिगम्बर साधु, ४०० ऊँट, ४५० भोजक, ३३०० भाट चारण, १३५० कुम्हार, ४००० घोड़े, ५०० खाती, १०० लुहार ५०० सिंहासन व सात लाख यात्रिक गण। ऐसे बड़े १२।। संघ वस्तूपाल ने अपने जीवन में निकाले थे। उसका सबसे बड़ा

लाभ यह हुआ कि जीण शीण देरासरो का जिर्णोद्धार हुआ और अनेको नये मन्दिर बने। सारे जगत् मे तीर्थो की प्रभावना हुई। सम्पन्न व्यक्ति अपने धन का सदुपयोग कर तीर्थ प्रभावना मे सहायक हो सकते हैं और तीर्थ यात्रा के माध्यम से सघमाल आदि के द्वारा तीर्थ द्रव्य को बढ़ाकर महान् पुण्य का सजन कर सकते हैं।

ग्यारहवाँ कर्तव्य गुरु आलोयणा है —जीवन मे निरतर पाप होते ही रहते हैं। वास्तव मे तो यह कतव्य सम्वतसरी पव से सम्बधित है। सम्वत सरी प्रतिक्रमण से पूव आत्म शुद्धि आवश्यक कही गई है वरना प्रतिक्रमण पूर्ण नहीं बनेगा। वस्तुत पाप के शमन के लिये प्रतिक्रमण प्रायश्चित है। मेडता मे उपा श्री धम सागर जी महाराज। (जगद् गुरु श्री हरी विजय सूरी जी के काल मे) से एक श्रावक नाराज हो गया और रोज उपाश्रय आने वाले इस श्रावक ने उपाश्रय नही जाने का तय कर लिया। सम्वत-सरी प्रतिक्रमण का समय आया। गुरुवय श्रावक के घर गये पर श्रावक ने अन्दर से किवाड बद कर लिये। काफी देर गुरु देव बाहर कडकडाती धूप मे खडे रहे। लोगो ने कहा, जब श्राविका ने किवाड खोले तो भी श्रावक मुहँ फेर कर खडा हो गया। गुरुदेव ने हाथ जोड कर कहा मैं छदमस्त हूँ गलती स्वाभाविक है यदि क्लेश सहित प्रतिक्रमण करू तो निष्फल होगा। अतर्हृदय से क्षमापना करता हूँ। फिर श्रावक को उपाश्रय मे लाकर साथ बैठाकर प्रतिक्रमण कराया। सारा वातावरण गद्गद् हो गया। क्षमापना से बडो में महानता आती है। जहाँ हृदय की पवित्रता नहीं वहाँ जीवन निष्फल।

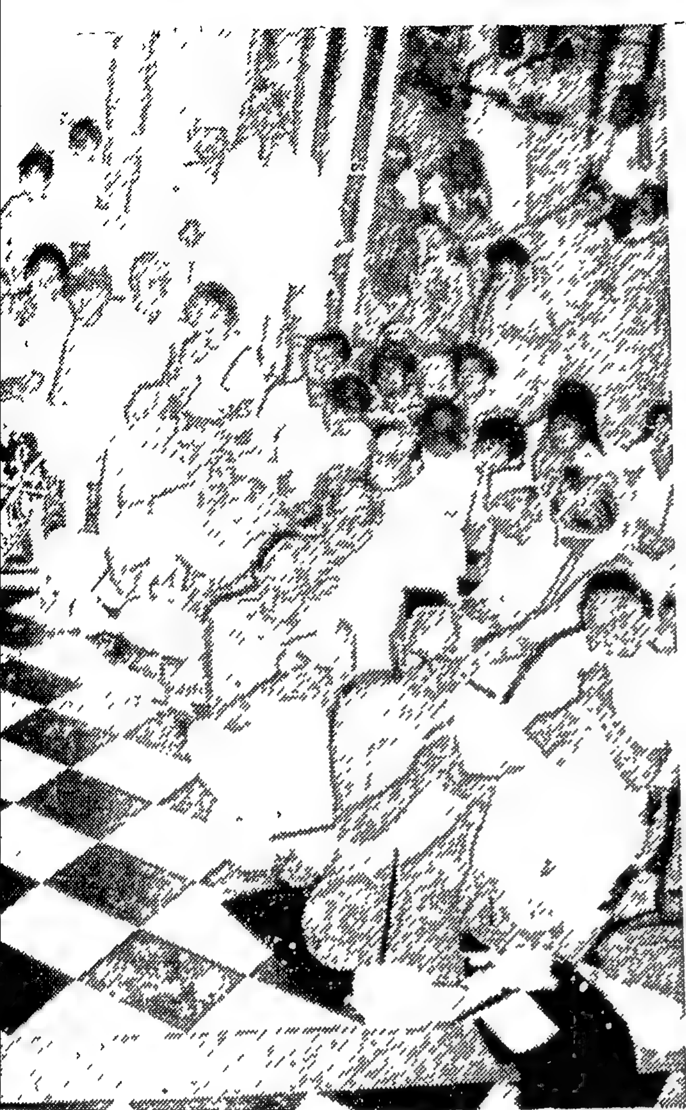
अत सघ यात्रा मे गुरु साक्षी से दिल खोलकर अपने पापो की आलोयणा लेने का महान् अवसर मिलता है। जिनेश्वर भगवत, गुरु भगवत एव सार्धामिक के प्रति किसी भी परिस्थिति में आये अपने प्रभाव के लिये आलोयणा लेकर आत्म कल्याण करे वह महा बड भागी होता है।

इस तरह श्रावक के ग्यारह कतव्यो की पालना करने का सुअवसर एक साथ तीथ यात्रा मे अनायास ही मिल जाता है। धन्य है वे भाग्यशाली जिनको तीथ यात्रा कराने का ऐसा अवसर मिलता है और वे यात्री तो और भी धन्य हैं जो इन यात्राओ मे अपने कतव्यो का पालन कर स्वय की आत्मा के तारक बन जाते हैं साथ ही औरों के लिये प्रेरणा स्वरूप बनते हैं।

छ री पालित सघ और श्रावक के ग्यारह कतर्व्यों का विचार हमने किया है। यद्यपि बाडमेर से प्रस्थित छ री पालित सघ के उपसहार रूप यह स्मारिका प्रकाशित हो रही है पर सघो के आयोजन तो होते ही रहते हैं। भविष्य मे यात्रियो को यह विवेचन उपयोगी बने इसी भावना से इसे स्मारिका मे समावेश किया जा रहा है।

तीर्थ यात्रा के प्रति उत्साह जागृत हो, भावोल्लास बढे और यह प्रवृत्ति धममय बन सके तो ही सुकृत की सही अनुमोदना बन सके।

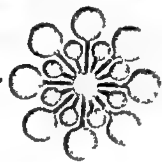




मालारोपण की क्रिया करते हुये सघपति



श्री देवेन्द्रराज मेहता का अभिनन्दन करते हुये
श्री जवाहरलालजी राक्यान

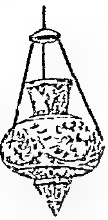


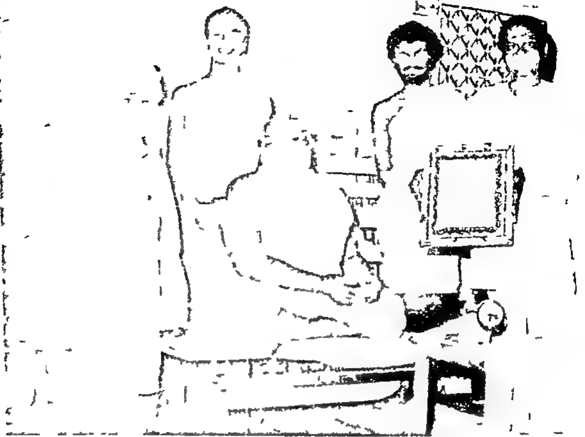
उदारमना श्री केवलचन्दजी खटोड को
आशीर्वाद प्रदान करते हुये गुरुदेव



सघपति श्री वोहराजी का स्वागत करते हुये
श्री चम्पालालजी राका







श्री शांति विजय ज्ञानपीठ की ओर से पूज्य गुरुदेव श्री जी का
अभिनन्दन-पत्र समर्पित करते हुये श्री मूलचन्दजी बाथरा



पूज्य गुरुदेव श्री एवं श्री भूरचन्दजी जैन
मंत्रणा करते हुये —



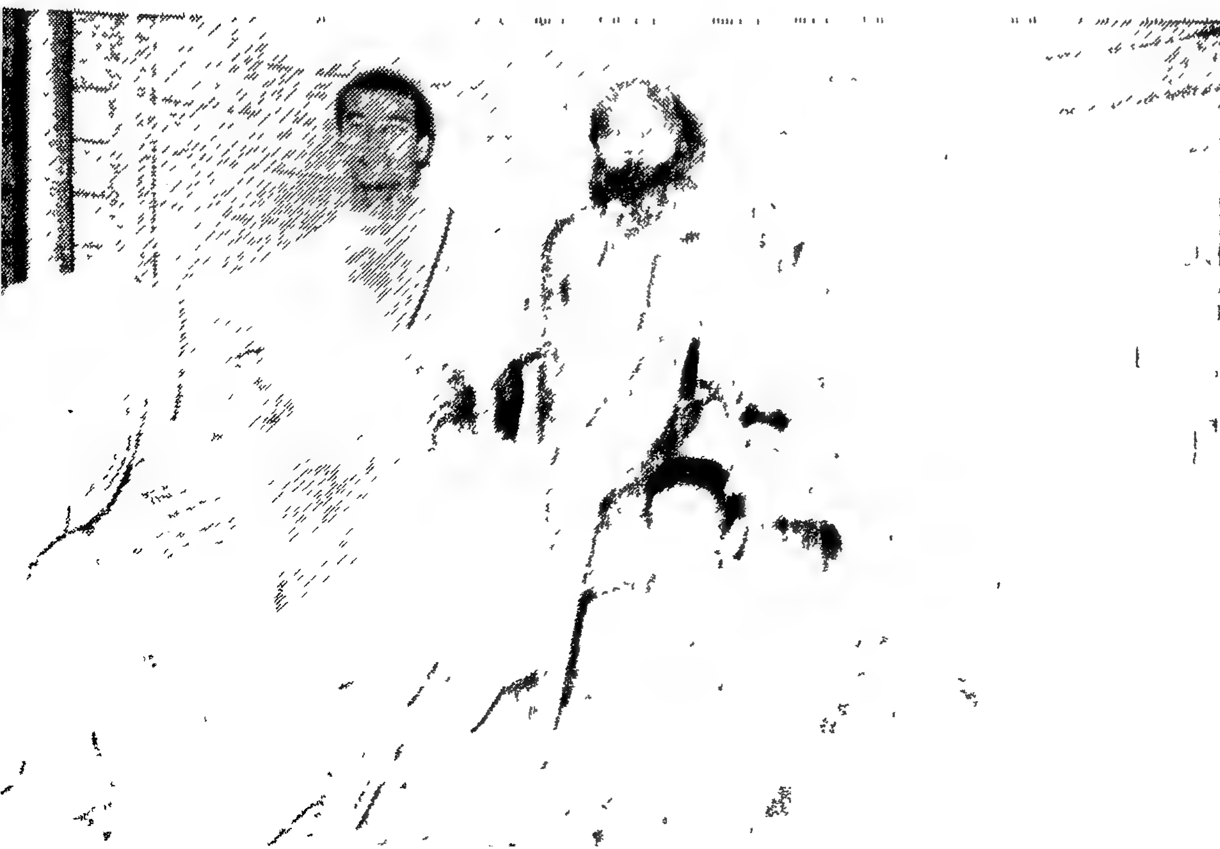


चिन्तन के क्षण



गहन चर्चा में संलग्न :—
पूज्य गुरुदेव एव श्री कालूरामजी वाफना

श्री मणिलालजी डोसी एव श्री आहमलजी बोहरा को
मुक्त–हास्य के साथ आशीर्वाद देते हुये पूज्य गुरुदेव श्री





पदयात्रा संघ में सम्मिलित —

आर्या समुदाय



पूज्य गुरुदेव श्री मुनि मण्डल, आर्यावृन्द एवं
श्रावक-गणों के साथ शत्रुंजय पर्वत पर —





जीवन को नई दिशा देने वाले निर्णायक क्षरण

ले० मुनि श्री मरिणप्रभ सागरजी म०

मंद, सुगंध समीर के झोको से हिलते हुए वृक्षो के पत्तों की छनछनाहट आवाज उद्घोष कर रही थी, संत मनीपी, प्रज्ञापुरुष के मानसिक विचार भी कल्याणी भावना का उद्घोप कर रहे थे और विचारो के चरम मथन मे एक स्फुरण स्फुरायमान हुई और उस स्फुरणा पर सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन सिंहावलोकन किया एवं संकल्प कर लिया उस स्फुरणा को कार्य रूप मे परिणित करने के लिये कृतसकल्पी हो गये।

उस कल्याणी स्फुरणा—भावना को साकार रूप देने के लिये सतमनीषी ने एक व्यक्ति को चुना— श्री भवरलालजी बोहरा।

गुरुदेव के आदेश की अवहेलना वे स्वप्न में भी नहीं कर सकते थे। गुरुदेव के प्रति उनके मन मे रही पूर्ण निष्ठा, पूर्ण भक्ति, पूर्ण समर्पण, प्रतिपल हर पल टपकता रहता है।

और उस शुभ घडी ने मानव जीवन में प्रवेश किया, जिस पावन घड़ी मे स्फुरणा स्व–लक्ष्य की ओर गति वढाने में प्रथम कदम रख रही थी। माघ सुद १५ के दिन प्रातकालीन शुभ मुहूर्त्त मे "वाडमेर से पालीताणा पद यात्रा सघ" का जैन न्याति नोहरा, वाडमेर से प्रस्थान हुआ। नगर के वाहर विदाई समारोह का भव्य आयोजन ३०,००० जनता के मध्य हुआ, जिसकी अध्यक्षता बाड़मेर जिलाधीश श्री फतहसिहजी चारण ने की एव मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान के कमिश्नर श्री देवेन्द्रराजजी मेहता पधारे थे। पुलिस अधीक्षक डी. आई जी. आई टी. ओ. आदि एवं वाहर से पधारे अन्य कई महानुभाव आदि गणमान्य व्यक्तियो के मध्य हुआ विदाई समारोह नगर के लिये अति आकर्पक एव अभूतपूर्व था। हाथी, घोड़े, ऊट, निशान, नगारे, शिखरबद्ध जिनालय, मागलिक वाद्ययंत्र आदि अनेक शोभा सामग्री से सुसज्जित श्री सघ ने प्रयाण किया। और नियमित रूप से नियत मजिले तय करता हुआ क्रमश. लक्ष्यपूर्ति की ओर अग्रसर होने लगा।

पद यात्रा सघ अपने आप मे गंभीर महत्त्व रखता है। केवल धार्मिक जीवन मे ही नही अपितु सामाजिक, शारीरिक एव आध्यात्मिक जीवन मे भी अपना स्वतत्र दृष्टिकोण रखता है। धर्मशास्त्रों मे जहाँ तहाँ पद यात्रा सघ की अनिवार्यता को उद्घोषित किया गया है।

जीवन मे कुछ घड़ियां ऐसी भी आती है, जो हमारे सपूर्ण जीवन को नई दिशा प्रदान कर देती है, ऐसे निर्णायक क्षण जो संपूर्ण जीवन के लिये रोशन मीनार का काम दे जाते है। हमारे जीवन मे नई रोशनी एवं खुशियाँ आ जाती है, प्रसन्नता के झरने हमारे जीवन मे झरने लगते है, आल्हाद-कता की नई कृषि हमारे जीवन मे लहलहा उठती है। हमे निर्णय करना है कि वे निर्णायक घड़ियां कौनसी है। शास्त्रकार फरमाते है कि पूज्य गुरुदेवों के पावन श्री चरणों मे व्यतीत चन्द क्षण भी

हमारे जीवन की दिशा का निर्धारण करने मे सक्षम हैं, और ये घडिया, ये क्षण, ये जीवन निर्णायक पल, जीवन उन्नायक पल, पद यात्रा सघ मे हमें सुलभता से प्राप्त होते हैं।

एक बार सही दिशा की सम्यक् सप्राप्ति होने के पश्चात् फिर जीवन मे ज्वारभाटा नही रहता, जीवन मे भटकावो की इतिश्री हो जाती है और भटकन समाप्त हुई कि जीवन गहरी ऊचाइयो की ओर अग्रसर हो जाता है, और होता ही रहता है तब तक, जब तक आत्मा परमात्मा नही बन जाती, ससारी मुक्त नही बन जाता।

और सही दिशा प्रबुद्धो के सानिध्यता के अभाव मे सप्राप्त होना दुष्कर है।

हमे गर्व है कि इस पदयात्रा सघ को जिन्होंने अपनी निश्रा प्रदान की, वे प्रबुद्ध गुरुदेव श्री कान्तिसागरजी महाराज साहब गहरी सरलता से स्थान-स्थान पर ज्ञानपिपासुओ को सही दिशा प्रदान करने मे सक्षम रहें।

एक अन्य दृष्टिकोण से यह पदयात्रा सघ जैन धर्म के तत्त्वों के प्रचार प्रसार के लिये सिद्ध साधन परिलक्षित हुआ। मार्ग मे आये प्रत्येक छोटे बडे, ग्राम, शहर के अनेक जैन जैनेतरो के मध्य प्रतिदिन प्रवचन होता था और उसमे तत्त्वो का विश्लेषण सरल भाषा मे होता था।

जैनत्व के प्रति, जिनेश्वर के प्रति जैनियो के प्रति, जैन धर्म के प्रति, जैन मदिरो के प्रति, जैन सस्कृति के प्रति, जैनेतरो के मस्तिष्क नत हो उठते थे, सघ का अवलोकन करने पर, उसके कार्यकलापो को देखकर, उनकी प्रभु तन्मयता के दृष्टिगोचर करने पर। यह सघ जिस मार्ग से निकला, वहा के निवासियो के हृदय मे गहरी छाप छोडता आया।

पूज्य गुरुदेव श्री की दूरगामी दीर्घदृष्टि एव शासन प्रभावना की अनुपम भावना ने पदयात्री सघ आयोजक एव प्रवर्तक मडल को मार्गदर्शन दिया, फलस्वरूप सर्वथा नवीन मार्ग एव क्षेत्र का चयन कर ऐसे छोटे-छोटे ग्राम, नगरो को मार्ग मे लाभ देने का निश्चय किया गया जो कि अब तक इस लाभ से सर्वथा वचित रहे हैं। उन छोटे-छोटे ग्राम-नगरो की भक्ति, गुरुदेव के प्रति अगाध श्रद्धा स्वामीजनो के सत्कार मे तत्परता आदि देखकर सघ के यात्रियो की थकान लोप होने लगी।

विकट मार्ग से पसार होता हुआ, प्रतिदिन नवीन अपरिचित जगलो मे उतरता हुआ पद यात्रा सघ क्रमश स्वगति मे प्रगति करता हुआ गलेश्वर, भोरोल, साचोर, उपरियालाजी आदि मार्ग मे आये अनेक तीर्थों की सम्यक् प्रकारेण यात्रा करता हुआ अपने स्वान्त को निर्मल बनाता हुआ, कर्मों का आवरण क्षीण करता हुआ, क्रमश पाद लिप्तपुर महातीर्थ पर पहुचा।

मार्ग मे आये वरवाला नगर मे पू वि नेमिसूरिजी म के समुदाय के वयोवृद्ध आचार्य श्री वि यशोभद्र-सूरिजी म जो सघ प्रेरणा दाता गुरुदेव के अनन्य प्रेमी हैं विराजमान थे। समन्वयता के प्रतीक गुरुदेव श्री ने सघ मे पधारने की विनती की जिसे स्वीकार कर आचार्य श्री ने सम्मिलित होकर अपने ऐक्य स्वभाव को उद्घोषित कर दिया।

पालीताणा महातीर्थ पर भव्य प्रवेश

प्रात काल की सुरीली हवा के मध्य सुरीले वाद्ययत्रो की झनझनाहट ने प्रत्येक मानव को पालीताणा स्टेशन के समीप यशोविजय जैन गुरुकुल की ओर जो आकर्षित कर दिया।

सूर्योदय के कुछ ही क्षणो के पश्चात् जुलूस के रूप मे मानव मेदिनी चल पडी। सबसे आगे काष्ठ का हाथी था, उसके पीछे इन्द्रध्वजा, अपनी ध्वजा फहराती हुई सघ प्रवेश को उद्घोषित कर रही थी। उसके पीछे घोडे ऊट और बाद में स्थानिक बालाश्रम एव गुरुकुल के ३०० बालक ३-३ की

लाईनो में सुव्यवस्थित ढग से कदम मिलाते हुए वढ़ रहे थे । उसके वाद स्थानिक बैंड और तत्पश्चात् जन-जन को अपनी ओर आकर्षित करता हुआ हाथी अपनी मस्त चाल से गतिमान था। उसके पीछे अहमदाबाद का प्रसिद्ध जिया वैंड अपनी भक्ति धुनो से भक्ति रसिक मानव मन को भक्ति से ओत-प्रोत कर रहा था। और उनके बाद ८ फुट ऊँची विशाल डोली में विराजमान हजारों मनुष्यो के केन्द्र बिन्दु, पुज्य गुरुदेव, श्रमण शिरोमणि, जैन जगत् के प्रकाश स्तम्भ, नई चेतना के ऊर्ध्वारोहक–प्रेरणा स्रोत सीमाओं से परे विशाल व्यक्तित्ववान् समन्वयता के प्रतीक प्रज्ञा-पुरुष, अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी महाराज साहब जन समूह को आशीर्वाद प्रदान करते हुए पधार रहे थे। उनके साथ पूज्य आचार्य श्री यशोभद्रसूरिजी म. श्री रेवतसूरिजी म, श्री लब्धिचन्द्रसूरिजी म., श्री शान्तिविमलसूरिजी म., श्री यशोदेवसूरिजी म., श्री अरिहतसिद्धसूरिजी म., श्री भानुचन्द्रसूरिजी म., श्री जयचन्द्रसूरिजी म., पन्यास श्री हेमप्रभविजयजी म., गणिवर्य श्री हेमप्रभविजयजी म., आदि मुनि मंडल जुलूस की शोभा में अभिवृद्धि कर रहा था। तत्पश्चात् मालाओं से लदे सघपतियों की चाल तो देखने जैसी थी। उसके वाद विशाल मानव समूह चल रहा था। चारो ओर मानव ही मानव नजर आ रहे थे। उनके पीछे भव्य शिखरबद्ध जिनालय शोभा को दुगुनी कर रहा था। उनके पीछे बीजापुर का प्रसिद्ध वैंड आकाश गुंजारव कर रहा था। फिर शताधिक आर्या मडल और फिर सन्नारियें। दो मील लम्बा ऐसा वरघोड़ा पालीताणा की प्रथम एवं ऐतिहासिक घटना है। जिलाधीश, नगरपालीका के चीफ आफिसर, पुलिस अधीक्षक, कस्टम आफीसर, आई. टी. ओ. आदि शताधिक सरकारी अफसरो ने पूज्य गुरुदेव को नमन कर जुलूस की अगुआनी की।

पद यात्रा संघ, पालीताणा महातीर्थ पर प्रतिवर्ष ३–४ आते ही रहते है, लेकिन ऐसा आज तक नहीं हुआ जब नगर की ६८ जातियों ने पृथक्-पृथक् रूप से पूज्य गुरुदेव को वंदन किया हो एवं सघपतियो को पुष्पहार पहनाकर उनका अभिनन्दन किया हो।

नगर के प्रत्येक मकान के ऊपर देखो, पेड़ों पर देखो, छतों पर देखो, जहाँ देखो वहाँ मानव ही मानव। शहर का चौड़ा पथ भी संकीर्ण बन गया था।

राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री के पदार्पण पर मानव जिस प्रकार उलटता है उसी प्रकार पूज्य गुरुदेव एवं सघ के नगर प्रवेश को देखने मानव मेदिनी उलट पड़ी थी। स्थान-स्थान पर कृत गहुंलियो ने नगर की धार्मिक प्रवृत्ति को उद्बोधित किया।

आणदजी कल्याणजी की पेढी, मोतिसुखिया, ब्रह्मचर्याश्रम, हरिविहार, माहेश्वरी समाज, मुस्लिम समाज, आदि पालीताणा इकाई की सभी जातियों ने संघपतियों को पुष्पहार पहनाकर हर्ष प्रकट किया। पुरनारियाँ स्थान-स्थान पर पुष्पवर्षा द्वारा स्वयं के उल्लासों को प्रकट कर रही थी। सब से महत्त्व की बात तो यह थी कि उस दिन कसाईयों ने स्वेच्छा से कसाईखाना वन्द रखा, और जुलूस मे भाग लेकर अपनी धार्मिक भावना का उद्बोधन किया।

माधवलाल जिन मन्दिर के दर्शन के पश्चात् हरि विहार में पदार्पण हुआ। वहाँ नवनिर्मित जिन हरिसागरसूरि ज्ञानभण्डार का उद्घाटन दानवीर श्री केवलचन्दजी खटोड़ ने किया और मांगलिक प्रवचन के पश्चात् सभा विसर्जित की गई।

और उसी दिन फलेचुनड़ी का आयोजन हुआ, जिसका सारा श्रेय संघपति सेठ श्री मणिलालजी डोशी को है। ऐसा आयोजन गत ३०० वर्षों में

नहीं हुआ था। इस आयोजन मे सक्रिय कार्य करने वाले श्री मिलापचन्दजी गोलेछा को अनेक धन्यवाद है। पालीताणा निवासी श्री हीरा-लाल भाई आदि ने इस कार्य को सफल एव सश्रेय बनाने मे जो उत्साह व तन्मयता बनाई उसका दूसरा उदाहरण मिलना मुश्किल है। उसी दिन अ०भा०ग० महासघ का स्नेह सम्मेलन था जिसमे कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये गये।

द्वितीय दिन मालमहोत्सव विविध कार्यक्रमो के साथ सुसपन्न हुआ। बोली बोलकर प्रथम सघपति श्रीमान् कमलसिंहजी दुधेडिया, कलकत्ता को श्रीमान् धर्मूमलजी राका ब्यावर वाला ने माला पहनाई। दोपहर को ऊपर मूल टुक मे दादासाहब श्री भव्य पूजा पढाई गई।

इस प्रकार पूरे भारत मे यशस्वी बना पदयात्रा सघ एक ऐतिहासिक एव अभूतपूर्व घटना बनी, जो इतिहास मे अविस्मरणीय रहेगी।

—मुनि श्री मणिप्रभसागरजी

सहिष्णुता

'प्रयत्ने प्रति वसति सिद्धि'। हम कम से कम किसी के दो शब्द सुनने की क्षमता तो पैदा करें, किसी के दो कटु शब्द पचाने की कोशिश तो करें। आज दो शब्द सुनेंगे तो कल दो गाली भी सुन सकेंगे— दो प्रहार भी सहन कर सकेंगे। इस प्रकार सहते-सहते हममे भी सहिष्णुता का गुण जागृत होकर व्याप्त हो जायेगा, फलत हम भी कभी समभाव के साधक हो जावेंगे और चरम उपलब्धि प्राप्त कर सकेंगे।

—साध्वी श्री मणिप्रभा श्रीजी

स्वप्न

—उपाध्याय अमर मुनि

गहराती निद्रा में सपने,
यदि देखे, तो क्या देखे ?
चमत्कार है जब जागृत में,
नभ-चुम्बो सपने देखें ॥

व्यक्ति, जाति, परिवार वही है,
वही राष्ट्र गौरवशाली ।
जिसका मन-मस्तिष्क कभी भी,
सपनों से ना हो खाली ॥

एक दिवस मानव ने सपना,
देखा था कुछ होने का ।
अपना यह ससार बनाया,
उसने अद्भुत सोने का ॥

अपने ज्ञान-कर्म के बल पर,
धरती को स्वर्गलोक बनाया ।
जीते-जी मानव जीवन में,
देवों-सा शुभ सुख पाया ॥

आत्मा से परमात्मा बनकर,
कहलाया त्रिभुवन स्वामी ।
पूर्ण पुरुष हो गया निरंजन,
अणुभर भी न रही खामी ॥

अध:पतन की अन्ध रात्रि के,
नहीं कभी भी स्वप्न देखना ।
एक-एक से उच्च-उच्चतर,
सुप्रभात के स्वप्न देखना ॥

साचोर (सत्यपुर) महातीर्थ यात्रा
हेतु सादर आमंत्रण

☐ २५०० वर्ष से भी अधिक प्राचीन तीर्थ सत्यपुर आज का साचोर। पुरातत्व के अवशेष १२-१२ मील तक मिलते हैं।

☐ यह लोकोक्ति है कि यहा स्वय महावीर प्रभु विचरे थे तथा उनके बड़े भाई नन्दीवर्धन ने प्रभु महावीर की जीवित अवस्था मे प्रतिमा स्थापित की थी।

☐ गौतम स्वामी ने जगचिन्तामणी चैत्यवदन मे इस तीर्थ का २५०० वर्ष पूर्व वदन किया है।

☐ प्रात काल राई प्रतिक्रमण करते हरेक साधु, साध्वी, श्रावक-श्राविका 'जयऊ वीर सच्च उरि मण्डण' से तीर्थ को वदन करते हैं।

☐ वि० स० ६७० मे नाहड राजा ने यहा बावन जिनालय युक्त विशाल देरासर बनवाया व भूगर्भ मे निकली प्रतिमा की प्रतिष्ठा की।

☐ वि० स० १०८१ मे जैन महाकवि धनपाल, राजा भोज की धारा नगरी को त्याग कर यहा आया और 'महा वीरोत्साह' मे यहा का वर्णन किया है।

☐ वि० स० १२८८ मे मत्रीश्वर वस्तुपाल-तेजपाल ने शत्रुजय महा तीर्थ पर "सत्यपुरी अवतार" मदिर की स्थापना कर यहा का महत्त्व बढाया।

☐ वि० स० १३७० मे खरतरगच्छाचार्य मोहम्मद तुगलक प्रतिबोधक श्री जिनप्रभ सूरीश्वरजी ने तीर्थ कल्प मे विस्तृत विवरण किया है।

☐ महामहोपाध्याय श्री समयसुन्दरजी तथा भावविजयजी गणिवर्य जैसे प्रभावक महापुरुषो की यह जन्म भूमि है।

☐ साचोर तीर्थ के तीर्थ पति भगवान् महावीर परमात्मा की प्रतिमा सम्प्रति महाराजा द्वारा भराई हुई है अत २२०० वर्ष पुरानी है।

☐ यात्रियो के लिये धर्मशाला, भोजनशाला, आयम्बिलशाला की सुन्दर व्यवस्था है। नगर मे पाच देरासर हैं।

☐ साचोर के लिये अहमदाबाद, पालनपुर, थराद जोधपुर, बाडमेर, जालोर, आबू रोड रानीवाडा एव बालोतरा से सीधे बस की व्यवस्था है।

विनीत

श्री जैन सघ
साचोर-३४३०४१
जिला-जालोर (राजस्थान)

प्यारा खरतर चमक गया



☐ ले० श्री मनोहर श्रीजी म०

वन्दन—

वन्दन पदपद्मे प्रभु, शत्रु ंजय के नाथ
चौरासी गच्छाधिपति, दत्तकुशल गुरुहाथ 1

सन्दर्भ—

स्वर्णाङ्कित इतिहास पुस्तिका, खुली नवीन अध्याय जुड़ा
छरिपालता संघ सिद्धिगिरि यात्रार्थ कान्ति भाव उमडा 2
भव्यभाव का वेग थामने, दृढ संकल्पी भंवरजी बने
आद्योपान्त मनोहर वर्णन, लगे स्वतः क्रमशः उभरने 3

पू० गुरुदेव ! पालोताणा में—

सिद्धक्षेत्र की पावन भूमि, तीर्थपति प्रभुऋषभ जिणंद
प्रतिमानगरी गिरि छाया मे, वर्तित है अहोनिश आनंद 4
रोड तलहटी मध्यस्थली, गुरुभक्ति स्मृति का है प्रतीक
विश्रुत् हरिविहार नाम प्रतिदिन, आते हैं यात्री धार्मिक 5
पटस्थित प्रसन्नवदन गुरुवर, अनुयोगाचार्यश्री थे ध्यानस्थ
मम भावों का साकाररूप, श्रद्धेय ! प्रतिष्ठित हो प्राणस्थ 6
सागर की गहराई अनन्त, कर्तव्य उमग वेग अवरुद्ध
प्राची लाली छिटकाव किया, चितनधारा मे बहे प्रबुद्ध 7
शब्दातीत उपकार सदा ही तीर्थंकर भगवन्तों का
पुण्यशाली शासन सेवाकर जन्म कृतार्थ करे निज का 8
मस्तिष्क पटल की छाया मे हुई ऐतिहासिक घटना चित्रित
संघ सह पैदल यात्रा करने बस हृदयावाज किया प्रेरित 9
मन ही नही आत्मा है खोई, यात्रा के पुनीत विचारों में
घंटो वीते इन ख्वावों मे, सुनहले स्वप्न सितारों में 10

वदन गुरुदेव ! शब्द सुनकर उद्घाटित किया नयन द्वारो
नतमस्तक खडे भवर बोहरा, धर्मलाभ शब्द गुरु उच्चारी 11
प्रथम कुशलपृच्छा सह पूज्यवर, धर्मप्रेमी जन लिया सभाल
प्रेषित उत्तर बोहराजी का था, इस अर्जी सुनिये फिलहाल 12
आशा दीप प्रज्वलित यह, तव कृपादृष्टि स्नेह पाकर
मनमयूर भी नाच उठा, इच्छित अमृत वर्षा पर 13
करबद्ध मस्तक पूज्य पदतलधर, बोले सुन लेना स्वामी
पवित्र करो भूमि मरधर की, चातुर्मास हो आगामी 14
पूवकार्य उपधान तपस्या मे, नेतृत्व अपेक्षित है
तीर्थ नाकोडा पधारेंगे, स्वीकृति पर ध्यान ये केन्द्रित है 15
बडे ध्यान से श्रवण किये पर पूव विचार न विसराये
बोहराजी सन्मुख गुरुवर अब निजी भावना दर्शाये 16
पैदल यात्री सघ साथ मे लिये प्रभु आदीश्वर को नमन करे
तन मन धन अर्पित भक्ति मे, अध्यात्मन् सिद्धि सहज वरे 17
हृदयस्पर्शी सक्षिप्तसार सुन बोल उठे मम हृदयहार
आदेश सभी स्वीकृत होगा तेरी वाणी मेरे विचार 18
जय घोष मे नभमडल गूजा, थी उभय विचारो की सिद्धि
परस्पर मजुरी लेकर वे खुश मिल गई हो समृद्धि 19

पालीताणा से विहार

दो हजार छत्तीस विक्रम सवत् कृष्णाष्टमी मिगसर
पालीताणा मे प्रस्थान किया प्रात शुभ वेला मे गुरुवर 20
नूतन लघुवयी मुनिवृन्द सग, विचरण अरु धर्म प्रचार किया
अहमदाबाद की जनता ने गुरु उपदेशामृत लाभ लिया 21
त्रिदिवसीय वाणी की वर्षा, लाखों लोगा का दिल हर्षा
क्रमश साचोर मे उद्बोधन कर अन्य क्षेत्रो को भी स्पर्शा 22

प्रथम उपधान—

प्रतीमा मग्न भँवरजी थे खुशियो का पारावार नही
नाकोडा निकट पधार रहे, श्रद्धेय ! शासन शृगार सही 23
शुभ लग्न पोष कृष्णा षष्ठी, नाकोडा तीर्थ प्रवेश किया
सभी प्रांतों के तपप्रेमी को आमत्रण पत्रिका भेज दिया 24
उपधानपति बोहराजी है, अनुयोगाचार्य कान्तिसागर
जिनकी पावन निश्रा मे, स्थित हुए तपस्वीजन आकर 25

प्रारम्भ हुई उपधान विधि, दिन माघ वदि द्वितिया का था
चौरासी ऊपर चार शतक तप जप उपधान वहन कर्ता 26

साधना ग्रहोनिश शतार्धं एक, संयमी जीवन परिपालन
तज भौतिक सुख ग्रंतर्मुखी हो करे ग्रशुभ भावो का परिमार्जन 27

वैज्ञानिक शोधित ग्रणुशक्ति ने जीवन का संहार किया
जिन प्ररुपित तप की शक्ति, ग्रात्मशुद्धि स्वविकास किया 28

प्रतिदिन जिनवाणी सार श्रवण, ग्रप्रमत्त रहन सत्संगमिलन
ग्रात्मशाति की ग्रनुभूति ग्ररु रत्नत्रयी का ग्राराधन 29

साधनाकाल समापन भव्य मालोत्सव कार्यक्रम ग्रायोजित
दर्शक जन समूह ग्रपार मध्य विधिवत् संपन्न क्रिया निर्णीत 30

गुरुदेव ! ग्रापकी निश्रा में बीते क्षण भूल न पायेंगे
तव महर नजर प्रेरक प्रवचन, जीवन्त स्मृतिपट छायेंगे 31

उदार हृदयी संघपतिजी कृत सेवा तन मन धन ग्रनुपम
ग्रब बिछुड़ रहे ग्राज सभी स्वीकारो हार्दिक ग्रनुमोदन 32

दर्शक यात्री तपस्वीजन, संघपति स्वगृह की ग्रोर चले
नामानुरूप गुण कान्ति ही कर्त्तव्य क्षेत्र में सदा ढले 33

नाकोड़ाजी से बिहार : ग्राहोर प्रतिष्ठा

शासन प्रभावना करते हुए, ग्राहोर संघ के ग्राग्रह पर
त्रयोदशी शुल्क बैसाखी, प्रतिष्ठित किये कुशल गुरुवर 34

ताराबहन दीक्षा—

ग्रति प्रशंसनीय रहा सघ का हर्षोल्लास सह हुग्रा काज
ताराबहन को दीक्षित कर शासनप्रभा नामकरण सरताज 35

स्वर्गस्थ दर्शन—

पुनः विनती हुई पधारो बालोतरा सघ की ग्रावाज
विहार किया मोकलसर पहुँचे, स्वर्गस्थ गुरु दर्शन मुनिराज 36

विभिन्न प्रान्त के लोगों ने ग्रंतिम यात्रा मे भाग लिया
बाडमेर सघ बोली लेकर मुनिश्री का दाह संस्कार किया 37

सुप्रसिद्ध न्याय व्याकरण तीर्थं साहित्य शास्त्री दर्शन थे
पर ग्रहंभावका ग्रंश नहीं, गुरुदेव भक्ति में समर्पित थे 38

ग्रस्वस्थ रहे कई वर्षों तक ग्रन्त [illegible] किया
नश्वर जगति में ग्रमरत्व का दिया बो[illegible] [illegible]र किया 39

बालोतरा प्रतिष्ठा—

मोकलसर से विहार हुआ बालोतरा पधारे मृदुभाषी
गुरुभक्त मनोरथ पूर्ण हुआ, प्रतिष्ठा म खर्चे बहुराशी 40

प्रवर्तिनीजी से मिलन—

प्रतिष्ठा कार्य हुआ सत्वर, प्रस्थान किया जयपुर की ओर
मणि मुक्ति सुयश विमल सगमे, विद्वद् मुनिजन तप है कठोर 41
प्रवर्तिनीजी विचक्षण श्रीजी की वेदना से चिंतित थे सभी
सुखपृच्छा दे दर्शन पूज्यवर, द्विदिवसीय स्थिरता किया तभी 42

बाडमेर का ऐतिहासिक चातुर्मास

बाडमेर प्रवेशोत्सव—

पूर्व निर्णय को ध्यान मे रख, अति तीव्र गति से विहार किया
बाडमेर प्रवेशपूर्व सेवासदन मे पूज्यश्रीने विश्राम लिया 43
उदधितरंगवत् भक्ति लहर, उत्साह अपूर्व मध छाया
अनुयोगाचार्य के स्वागत मे बाडमेर स्वर्गसा सजाया 44
सन्मानद्वार बहुरंगी ध्वजा, दर्शनीय लगा कान्ति मेला
श्रीफल प्रभावना वितरण का द्विदिवसीय लाभ भवर झेला 45
आषाढ शुक्ल तेरस प्रभात, बधाने आये सभी नरनारी
सेवासदन से प्रारभ जुलूस सकीर्ण मार्ग हुआ उस वारी 46
अशोक बैंड जयपुर का था महावीर पार्श्व बैंड मधुरध्वनि
जनता सारी मत्रमुग्ध बनी, सुनते खिल रही हृदयकनी 47
लाखो नजरो की प्यास बुझी दर्शन कर विरल विभूति के
व्याख्यानहॉल मे प्रवेश किया, अब चातुर्मास वर्णन आगे 48

चातुर्मासिक कार्यक्रम—

सावन की रिमझिम वर्षाने प्रकृतिको सुदर रूप दिया
व्याख्यानवाचस्पति की वाणी, प्रवृत्ति शोधन बोध किया 49

परमेष्ठिपद जाप—

स्वाइलैब के खतरे से, भयग्रस्त बनी जनता सारी
पचदिवसीय परमेष्ठीपद विश्वशान्ति जप हुआ भारी 50

बाढपीडित सहायता—

द्वितीय सकट था हृदयभेदी लूणी नदी मे प्रवाह बढा
बाडमेर नगर के गाव नगर सैकडो पर आफत आन पडा 51

करुणासागर ! दयनीय स्थिति का संघ को भान कराया
आत्मवत् सर्वभूतेषु, महावीर सन्देश सुनाया 52
महत्त्वपूर्ण यह कार्य संघ का संतप्त शाति पहुँचाना
खाद्य सामग्री वस्त्रादि बाढ़पीड़ित किया प्रदाना 53

भगवती सूत्रवाचन—

श्रुतभक्ति हेतु भव्य जुलूस, भगवती सन्मान बढ़ाया
श्रीसंघ के आग्रह पर प्रबुद्ध, भगवती सूत्र सुनाया 54
शंकराचार्य कृत प्रश्नोत्तरी पे प्रवचन किया प्रारंभ
जैन जैनेतर श्रोतागण, संख्यातीत करते अचंभ 55

सार्वजनिक प्रवचन—

रक्षाबन्धन पर सार्वजनिक प्रवचन जन मानस भाया
जनता के आग्रह से गुरुवर द्वितीय प्रोग्राम बनाया 56
पन्द्रह अगस्त जन्माष्टमी को, छात्रावास मे उद्बोधन
"मानवधर्म को कृष्ण की देन" जनप्रिय विषय का शोधन 57
जिलाधीश गणमान्य व्यक्ति, धाराप्रवाह रसपान किया
जैन जैनेतर बड़ी संख्या में, गुरुदेव का गुणगान किया 58

केशलुंचन—

साधुविधि समझाने पूज्यवर पटस्थित किया केशलुंचन
धन्य 2 मुनिका जीवन, दर्शक जनता कृत अनुमोदन 59
चातुर्मास अवधि मे विभिन्न प्रान्तों से आए दर्शनार्थी
बाडमेर के जैन बन्धु थे भाग्यशाली सेवा प्रार्थी 60

अभिनन्दन समारोह—

अखिल भारतीय महासघ अध्यक्ष जवाहरजी राक्यान
मंत्री दौलतसिंहका विराट् सभा मध्य किया सन्मान 61
ऊँट आकृति मानपत्र श्रीसघने सादर भेट किया
अध्यक्ष मंत्रीजी गुरुवर से, आशीर्वाद वासक्षेप लिया 62
जोधपुर से सघ ले आये, बलवन्तराजजी भंसाली
मालू पारख साथ में लाये गुरुदर्शन किये पुण्यशाली 63
दर्शनार्थ संघ ले आये, बाड़मेर संघ सन्मान किया
अभिनन्दन पत्रक कर अर्पित, आयोजन को सफल किया 64

पर्युषण पर्व—

अवर्णनीय उत्साह संघ में, पर्वाधिराज जब आया
व्याख्यान वाचस्पति कृत वाचन कल्पसूत्र ने भुमाया 65

अभूतपूर्व तपश्चर्या—

तपस्या की तो झडी लगी थी, मासक्षमण हुये चार
अर्धमास की संख्या उन्नीस, त्रयोदश छब्बीस नरनार 66
एकसौ दश ये दश उपवासी, नौ किये अग एक पचास
अट्ठाई तपस्वी अठ्यासी, कैसा सुन्दर चौमास 67
छट्ठ अट्ठम पचरगी सभी गिनती शत उपर जानो
प्रत्यक्ष प्रभावी गुरुदेवश्री की महिमा को पहिचानो 68

विराट् जुलूस—

सम्मान किया तपस्वी जनका, समारोह था भारी
विराट् जुलूस की शोभा देखने उमड पडे नरनारी 69

छात्रावास व्यवस्था—

छात्रावास भोजनाशाला को पुन नवीनतम प्राण दिया
सरक्षण नई कमेटी चयन, उस सस्थाका उत्थान किया 70

अ० भा० ख० का० का बैठक—

भव्यायोजन अमावली मे मिला सकेत गुरुवर का
अखिल भारतीय खरतरगच्छ सघ एकत्रित करवान का 71
सघटित करने गच्छ को, द्विदिवसीय ईट किया निश्चय
हुई बैठक यथासमय सघ की, प्रेषित विचार लिया निर्णय 72
सामाजिक धार्मिक एकता पर, किया ममस्पर्शी पूज्य सबोधन
दानवीर मणीडोसीजी का जैन सघ किया अभिनन्दन 73
ऊँट आकृति मानपत्र दे, व्यक्तित्व को दर्शाया
अन्य आगतुक प्रमुखजनो का भी सम्मान बढाया 74

सगीत मडल—

प्रभुभक्ति करने सगीत मडल तीन स्थापित किया उपकारी
दादागुरुदेव जीवनवृत्त पर सचित्र पुस्तिका छपी न्यारी 75

पुस्तक प्रकाशन—

विद्वद्शिरोमणि प्रथम शिष्य मणिप्रभसागरजी कृत सपादन
"क्षमा कल्याण चारित्रम्" पुस्तक का हुआ प्रकाशन 76

ऐतिहासिक चातुर्मास हुआ, वर्णन कर पाना शक्य नही
आमत्रणपत्र की सुन्दरता, सघभक्ति शब्दातीत रही 77

तेरी गरिमा से प्रभावित हो, जैनेतर जैन सभी हर्षित
मुनिवृन्द अल्पवयी अति सुन्दर, चुम्बकत्व कर रहा आकर्षित 78

शिष्य मंडल—

शिष्यरत्न मे प्रथम स्थान, सर्वोपरि श्री मणिप्रभसागर
गुरुकृपादृष्टि पा धन्य हुए अभिन्न प्रेम ज्यू पयसाकर 79

कर्तव्यध्यान बड़े बुद्धिमान, किंचित भी नही है अभिमान
कान्ति आन ही मणि प्राण, सतत परिश्रमी ज्ञानवान 80

मुक्ति सुयश विमल है साथ, साध्वीजी का चातुर्मास
साध्वी प्रमुखा प्रमोदश्रीजी शिष्या मडलीसह किया आवास 81

बाड़मेर से विहार—

चौमासिक काल बीता सानन्द विदाई की घडिया आई
विरह वेदना व्यथित सघ की हृदय कलिया मुरझाई 82

द्वितीय उपधान—

उपधानपति रामसरवासी, प्रभुलालजी मालू आग्रह पर
निर्णीत उपधान नाकोड़ाजी, पधारे अनुयोगाचार्य प्रवर 83

उपधान प्रवेश प्रथम मुहूर्त, मिगसर बदी पांचम शुक्रवार
छः सौ सोलह तपस्वीजन हुए क्रियाशील विधि अनुसार 84

प्रातः सन्ध्या मे प्रतिक्रमण, प्रभुदर्शन गुरुवदन करना
काउस्सग्गमाला नियमानुसार, बह रहा वीरवाणी झरना 85

मालू परिवार भाग्यशाली, तप भक्ति मे तल्लीन बना
तन मन धन अर्पित सेवा मे, उपधानपतिजी उदारमना 86

शासनसम्राट की छाया मे, तप जप का ठाठ लगा भारी
पौष शुक्ल दिन एकादशी, दो हजार छत्तीस सुखकारी 87

मनोहर माला परिधान दृश्य, हजारो नेत्र निहार रहे
गुरुवर उपकार महान किया, नतमस्तक हो मालूजी कहे 88

उपधान समाप्ति पर गुरुवर, नाकोडा से विहार किया
अतिशीघ्र बाडमेर जा पहुंचे, अब द्वितीय भाग प्रारंभ हुआ 89

द्वितीय भाग

नामाक्षर पद्यावली—

काली घटा मे विद्युत से तुम चमक उठे इस कलियुग में
न्याति नोहरा प्रस्थित पैदल सघप्राण ! नमन तव पदयुग्मे 90

तिर्थाधिराज गिरि प्रागण मे,' शोभे हरि पटाधीश गुरुवर
वासर भानु निशा शशिवत्, खरतर सम्राट हे ज्योतिधर ! 91
सागरसम हृदय विशाल उदात्त विचार विश्व फैली ख्याती
गच्छाधिपति भाषाधिकार, प्रवचन शैली मन को भाती 92
रग रग मे समायी गुरुभक्ति, समपण भाव साकार किया
जीवनस्मृति रहे गुरुदेव की, हरि विहार निर्माण किया 93
मनोहर परिकर मध्य कान्ति, परिधि म शिष्य शोभित है
हारपदक मणि दीप्तिवन्त, मोतीसा मुक्ति प्रवोधित है 94
राजमार्ग दर्शक प्रवुद्ध, प्रभु महावीर पथ अनुगामी
जग उद्धारक मम श्रद्धास्पद, त्रुटि हो क्षमा करे स्वामी 95
सादर अभिनन्दन है हार्दिक व्यक्तित्व अनूठा वेमिशाल
मनोहर मडल हर्षित गुरुवर, समीप पहुँचे अस्सीकी साल 96

सघ भूमिका—

महत्त्वपूर्ण था कार्य सामने, वाडमेर से पालीताणा
पैदल यात्री सघ सहित, ऋपभ जिणद दर्शन पाना 97
पूज्येश्वर प्रखर प्रेरणा और प्राप्त था निर्देशन
चातुर्मास अवधि से ही, एक जुट हुवे कार्यकर्त्तागण 98
सघपति भवरजी वोहरा का था दिल उदार लिया सघभार
हार्दिक लगन सह कायमग्न, दिनरात एक किया उसवार 99
पैदलयात्री सघ कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार हुई
प्रचार पत्र द्वारा पूरे भारत मे सौरभ फैल गई 100
वर्तमान युग मे खरतरगच्छ की शान बढाने वाला है
अनुयोगाचार्य श्री की निश्रा म ऐतिहासिक सघ निराला है 101
खरतरगच्छीय मुनि साध्वीगण, शामिल हो पुनीत प्रवास मे
आग्रह करने सघ प्रतिनिधि आये छत्तीसगढ प्रात मे 102
आदेश निखित पुज्येश्वर का रख सम्मुख बोल उठे सत्वर
अति शीघ्र स्वीकृत वक्षार्वे, बडे खुश थे मजुरी पाकर 103
गुरुकृपादृष्टि जीवत वने, मैं हू उपकारो से उपकृत
निश्राप्रदान यात्रा हेतु, दूरी मे याद किया प्रेषित 104

बाडमेर से सघ प्रस्थान

प्रथम दिवस—

ऐतिहासिक सघ की भव्यछटा, वर्णन करने मन झूम उठा
प्रारभिक मेला दर्शनीय था, वाडमेर का अनूठा 105

अनुयोगाचार्य की निश्रा मे, ठहरे कई प्रान्तों में यात्री
स्वकार्यलीन व्यवस्थापक, किन शब्दों में कहुं कृतखात्री 106

माघी पूनम मध्याह्न समय कर्णप्रिय मधुरध्वनि गुंजित है
वाजित्र गीत संगीत लहर कर रहा मुग्ध स्पंदित है 107

विराट् जुलूस सह पदयात्री, अपूर्व सघ प्रयाण किया
गुरु पूनम दिन सिद्धियोग, सिद्धाचल लक्ष्य में ठान लिया 108

ध्वजा व्योम मे फहर रही, मस्ती में हाथी झूम रहा
गति शील अश्व अरु ऊँट स्थित रक्षक नगारा पीट रहा 109

चालीस हजार जनमेदनी मानो जन प्रवाह बाढ आया
मुनिवृन्द मध्य उच्चासन स्थित, शासन सम्राट दर्श पाया 110

प्रभु महावीर की प्रतिमा एक सुन्दर रथ मे शोभ रही
रथ गतिशील करने हेतु बैलों की जोड़ी दौड़ रही 111

जय तीर्थपति जय गुरुदेव, था कर्णभेदी शब्द जयकार
प्रसन्नवदन मम हृदयहार, सजोया स्वप्न किया साकार 112

खेतजी प्याऊ के समीप था सुन्दर रंग मंडप विशाल
सघ पहुँचा पाच बजे वहां पर, भोजन करने बैठे पंडाल 113

विभिन्न खाद्य पदार्थो से सामीवच्छल का लाभ लिया
संघपति भवरजी विनम्रभावे, सुखपृच्छा सभाल लिया 114

अनुकूल व्यवस्था––

यात्री संख्या सहस्र रही, शत ऊपर सेवक सेवारत
बस ट्रक ठेला जलटंकी जीप, अनुकूल व्यवस्था सभी प्राप्त 115

सघ सेवा समिति के सदस्य, सबही मंडल के अधिकारी
प्रदत्तकार्य तन्मयता से संभाल रहे जिम्मेदारी 116

संघ की दिनचर्या--

जंगल मे मंगल वर्ताता गतिशील संघ की दिनचर्या
प्रातः सन्ध्या मे प्रतिक्रमण, तपजप शक्ति अनुरूप किया 117

करते विहार प्रतिदिन प्रातः छह बजे पूज्य श्री सघसाथ
हाथी रथ घोड़ा ऊँट बैन्ड अनुपम छबी क्या कहुं नाथ 118

प्रभुदर्शन स्नात्र पूजन करते, गुरुवंदन अरु व्याख्यान श्रवण
दोनों टाइम अनुकूल भोजन, पश्चात रात्रि मे प्रभु भजन 119

प्रज्ञापुरुष आचार्य देव, जिनके वल पर था जोर शोर
निर्णित क्षेत्र पावन करते दशवे दिन संघ पहुंचा साचोर 120

पाचसौ घर हैं जैनो के सघ स्वागत को वे बने तत्पर
सामेला का भव्य आयोजन, नगर सजावट अति सुन्दर 121

साचोर की दादावाडी म पच्चीस हजार प्रदान किया
वस्तीवालो को भोजन दे स्वधर्मी भक्ति का लाभ लिया 122

पैदल यात्री सघ की महान, विशेषतया ये रही हरदम
जिन गावो मे विश्राम लिया, दिया ग्रामीण को पूरा भोजन 123

गुरुदेव सघ से पृथक् हुए (भूल भूलैया मे)

प्रतिदिन यात्राक्रम है जारी त्रयोदशी बुध को पहुचा थराद
गुरु को विश्राम था ढीमा में, मोरोल होके जाना था वाव 124

थराद से आगे बढकर के, ढीमा में यात्री विश्राम किये
गुरुदेव भूलत माग दूसरे, सीधे वाव में पहुच गये 125

मणिभक्ति—

मणिप्रभ मुनिजी थे कुछ पीछे, गुरुदेव साथ होने को बढे
दूरी में भी जब दिखे नही, सोचे यह राह गलत पकडे 126

मैं वाव रास्ते चल भून किया, गुरुदेव चले ढीमा पथ पर
यह सोच पुन लौट सत्वर, पहुँचे ढीमा नही थे गुरुवर 127

जल बिना मीन ज्यू तडफ उठे, उस दिन का मार्मिक वर्णन है
अनन्य प्रेम गुरुभक्ति हो, सचमुच मणि जीवन धडकन है 128

आते ही लौटने लगे पुन मध्याह्न ताप था अतिकडा
तृतीय प्रहार पच्चक्खाण किये, गुरु दर्शन प्रण था बडा 129

सभी लोगो ने बहुत कहा रुकना होगा ना जाओ आप
मदिर दर्शन के बहाने से चलते ही बने जा पहुचे वाव 130

करुणा दृश्य—

श्रद्धेय दर्श पदस्पर्शन करके बीतक हाल सुनाया सभी
रगीन पडाल भी फीका पडा, बसन्त वीरान हुआ है अभी 131

पलभर रुकना मुझे कठिन लगा, सभी कैसे दिवस बितायेंगे
यहा पहुचेंगे तीन दिन बाद सारे ही मुरझा जायेंगे 132

सरल स्वभावी गुरुदेव यू सहज भाव से कहने लगे
कैलाशसागरजी साथ ही हैं वे सारा कार्य । सभालेंगे 133

सूर्य ग्रहण मे जाप ध्यान करने को मुझे मिला अवकाश
स्वर्णाक्षर अकित निज विचार, भेजा मगलमय हो प्रवास 134

ढीमास्थित चतुर्विध संघ में, विषाद बादली छाई गहन
साध्वीजी प्रेषित निम्न लिखित पत्र में है सारा वर्णन 135

हेमाक्षर लिखित हृदय स्पर्शी पत्र

पूज्यपाद श्री गुरुदेव के पावन पदपद्मे शतशः
सश्रद्ध वन्दन स्वीकृत हो, पृच्छा करती शाता बहुशः 136

ज्ञात नहीं अद्य कैसा सूर्य उदित हुआ तिमिर वर्धक
प्रकाश पुंज के दर्शन से, वंचित रहा संघ दर्शक 137

अब तक प्रतीक्षारत हम सब बैठे थे पलक बिछाये
संध्या तक जरूर पधारेंगे, गुरुवर यह आशा लगाये 138

राठीजी द्वारा प्राप्त पत्र पढ़ धैर्य बांध टूटा है
निराश खिन्नमन हुए सभी, हमसे ही दैव रूठा है 139

हृदयस्थ गुरुदेव ! गौर करे, ग्रहण तो आते रहेंगे
जप जाप तो खूब किया है और भविष्य में भी करेंगे 140

फिलहाल आपका प्रमुख कार्य है एक सघ का संचालन
क्या ! शोभेगा संघ आप बिना, नहीं होता शून्य का मूल्यांकन 141

वेमिशाल व्यक्तित्व तेरा, लाखों व्यक्तित्व समाया है
क्या अधिक निवेदन करें आपसे, क्यों हमको विसराया है 142

प्रफुल्लित मुख विकृत है बना, सब दिखते यहां उदास
चन्द घण्टों की यह हालत करेंगे आप विश्वास 143

सर्वोपरि आपकी आज्ञा, निर्णय मान्य ही होता है
किन्तु अभी अरदास हमारी मान्य करे दिल रोता है 144

अगर पधारे नही शाम तक तो यह प्रण भी है निर्णीत
नहीं करेंगे गोचरी कोई, शशी विकास हेमा निश्चित 145

आप पधारे छोटे बापजी भी तो छोड़ के चले गए
अकेले कैलाश मुनिजी क्या करे उदास भए 146

भक्तितार से जुड़ा कनेक्शन, सुन लेना अन्तर आवाज
आत्मा हो सन्तुष्ट सभी की, पधारो संघ सरताज 147

हेमाक्षर दिव्य विकाश शशि भावों को ना ठुकराना
आधारस्तंभ हो इस संघ के, शीघ्रातिशीघ्र चले आना 148

पदार्पण—

संप्राप्त पत्र पढ़कर के पुनः निज विचारों ने मोड़ लिया
प्रातः विहार किया पूज्यवर, भोरोल में संघ को दर्श दिया 149

नवजीवन सचार हुआ, गुरुदेव पदार्पण से सघ मे
सूय विकासी सघ कमल विकसित प्रमुदित हर्षित मन मे 150

शखेश्वर

सकुशल सघ पैदल चलते, फाल्गुन तेरस को शखेश्वर
फाल्गुन चौमासी पवपुनीत, दर्शन सप्राप्त पार्श्व प्रभुवर 151
शखेश्वर तीर्थ की पवित्र धरा सघ रुका दिन चार जहा
दर्शन पूजन हुए भक्तिमग्न, ऐसा स्वर्णिम अवसर कहा 152
आगे पहुचे जब माडल मे, भव्य समारोह था स्वागत का
गुजरात प्रात की गौशाला मे, दूसरा स्थान रहा जिसका 153
धधुका नगरी प्रवेश हुआ, हर्षोल्लास सामैय्या साथ
बावीस साध्वीजी यहा मिले, गुरुदेव जन्मभूमि विख्यात 154
प्रमुखाचार्य यशोभद्रसूरि है नेमिसूरि समुदाय मे
इस सघ मे शामिल हुए थे, वे बरवाला गाव मे 155
वल्लभीपुरी वाचना से, ऐतिहासिक नगरी धन्य है
पुस्तकारूढ सिद्धान्त किए गए महिमा जिसकी अनन्य है 156
देवर्द्धिक्षमाश्रमणजी से पचशत शिष्य वाचना लेते
साकार दृश्य अति सुन्दर है, हम मुग्ध बने देखते 157
वल्लभीपुर मिहोर गागली आदि विभिन्न स्थानो मे
पुनीत सघ प्रयाण हुआ सन्मान सभी ग्रामो मे 158

सघस्थ मुनिवृन्द

प्रकाशस्तभवत् मार्ग प्रदर्शक, पूज्यवर कान्तिसागरजी -
महासघ मे जो सम्मिलित रहे, प्रस्तुत नाम पूज्य मुनिवरजी 159
अतिवृद्ध मुनि साम्यानदजी और कल्याणसागरजी महाराज
सार सभाल करे सघ की प्रतिदिन कैलाशसागर मुनिराज 160
प्रेरक सन्देश रहा जिनका वे थे जयानन्द मुनिवरजी
प्रतिपल सन्निकट पूज्यवरके, शोभित ,थे मणिप्रभसागरजी 161
है बुद्धि प्रखर गुरु निर्देशन से सारा कार्य सभाल रहे
अल्पवयी मुक्तिप्रभजी का हर पल उनको खयाल रहे 162
कुशल सुयश विमलप्रभजी, भक्ति अध्ययनरत सारे
सेवाभावी महिमाप्रभजी, गुरु महिमा गाते हर्षा रे 163
ललित नवीन चन्द्रप्रभजी है, पूज्येश्वर की छत्रछाया
तेरह ठाणा मुनिराज साथ सघ सकल मन हर्षाया 164

साध्वी मंडल—

संघस्थ साध्वीजी मडल का, प्रमुख नाम दर्शित है यहाँ
विद्वानश्रीजी मनोहर मंडल, विकसित विकासश्रीजी है जहाँ 165

अकलश्रीजी और विदुषीरत्न। दिव्यप्रभाश्रीजी आए
सेवाभावी कोमलश्रीजी, शशिप्रभाजी रश्मि फैलाए 166

मदनश्रीजी आदि सवही साध्वीजी ठाणाथी चालीस
तीनठाणा अचलगच्छकी दो ठाणा कृपाचंद ईश 167

महासंघ के आधारस्तंभ ! विशिष्ट प्रमुख संघपति भंवरलालजी बोहरा

संघपति भंवरजी वोहरा का तो पुण्य निराला है
पुण्यानुवंधी पुण्य का वंधन, खुला तिजोरी ताला है 168

चित्तउदार गुरुभक्ति का रंग प्रगाढ़ है छाया
सोने में सुहागा, भंवर जीवन चमकाया 169

संपत्ति का सद्व्यय करके दो दो उपधान कराया
कान्ति गुरुवर निश्रामें तन मन धन कृत्य बनाया 170

धन्य धरा धन्य जननी, परिवार धन्य सारा है
धन्य धन्य भवर जीवन, लाखों से स्तुत्य प्यारा है 171

गुरुदेव कृपादृष्टि में सदा भीगा रहता है तुम्हारा मन
श्रद्धावनत गुरु पदधूली, पा करके महक उठा है चमन 172

सिद्धक्षेत्र की सभा स्वयं उद्यत है तेरे स्वागत को
संघपति जयध्वनि प्रसारित, उर्ध्व मध्य स्तुत्य आगत को 173

महासंघ के पुनीतप्राण, युग युग जीवो सभी गाये
कर्तव्य महक पद अमर वनेगा, किन शव्दों में वधाये 174

संघपतियों की नामावलि

उदारवृत्त का परिचय दे, महासंघ में स्थान जो पाये
निम्नोक्त नाम संघपतियो के, उनकी भी शान वढ़ाये 175

कमलसिंहजी[1] दुधेड़िया, निवास स्थान कलकत्ता है
रत्नत्रयी के आराधक जिनवाणी पर ही श्रद्धा है 176

छाजेड़ गोत्रीय संघपतिजी वाडमेर के निवासी हैं
जीवणमलजी[2] अरु लुणकरणजी[3], गुरुदर्शन अभिलापी है 177

वाड़मेर स्थित राठीजी, धर्मानुरागी द्वारकादास[4]
पूज्यवर के प्रेरक प्रवचन से कर पाये जीवन विकास 178

खरतरगच्छीय महासघ अध्यक्ष जवाहरजी[5] रायथान
दिल्ली मणिधारी छाया मे, जैन एकता पर है ध्यान 179

बाड़मेर के पुरुषोत्तमजी[6], माहेश्वरी गुरुभक्त बने
अजैन है जिन अनुरागी, ऋषभ द्वार माल पहने 180

पाली के श्रेष्ठी लोटाजी, मोहनराजजी[7] श्रद्धावान
मानव जीवन की सार्थकता हेतु द्रव्य किया बलिदान 181

मुक्तिमाल पहननेका महत्व मेहताजीने जाना
इन्दौरवासी कुन्दनमलजी[8] सम्यग्भावो की सराहना 182

देवगुरु की भक्ति ही नाहटाजी के मन भाया है
मिश्रीलालजी[9] शाहदा से सघ लेकर के आया है 183

चचल लक्ष्मी स्थिर बन जाती जिस घट मे धर्मका वास
धर्मप्रेमी जेठमलजी[10] गोलच्छा रहते हैं मद्रास 184

बाड़मेर निवासी तीनो का है भवरलालजी नाम
गोत्र बोथरा[11] सेठिया[12], डोसी[13], चल आए सिद्धाचल धाम 185

समृद्धि से पुण्यवृद्धि कर जीवन सफल बनाया है
नारायणजी[14] सिन्धी बाड़मेर, तीर्थ महिमा गाया है 186

उपर्युक्त भव्यात्माओ ने सघपति पद प्राप्त किया
आचार्यश्री की निश्रा मे सघसह सिद्धाचल यात्रा किया 187

सघ के पुनीत चरण गुजरात मे

दत्तकुशल गुरुदेव कृपा से आनद मगल वर्तित है
नई चेतना पुनीत प्रेरणा, गुजराती सघमे वर्धित है 188

महासघ की महिमा और काति गुरुदेव के समन्वय से
गुजरात की जनता नत मस्तक हो भक्ति किया सहृदय से 189

सानन्द लक्ष्य की ओर चरण, बढ रहा सघ का श्रेयस्कर
धर्म जागृति करता हुआ, प्रकाशपुज खरतर भास्कर 190

अद्वितीय सघ निजि विशेषता से श्रद्धा का केन्द्र बना
लाखो लाखो जन स्तुत्य अवनि अम्बर परिव्याप्त बना 191

चौपन दिवसीय यात्रा क्रम मे, नितनए रग उत्साह उमग
प्रसन्नवदन यात्रीजनका, सहृदय प्रेम सत्कार दग 192

मनमोहक सुदर मेलाका, धन्य दिवस निकट अब आने लगा
महासघ का स्वागत करने सभी लोगो का भाव जगा 193

सिद्धगिरिवासी सभी कौमों ने करदी तैयारी प्रारम्भ
अभूतपूर्व हो स्वागत जिसे देख पाए दर्शक अचम्भ 194
ग्यारह किलो मीटर मे, आए हजारो नर नारी
स्वागतार्थ गुरुदेव संघके मनमें प्रसन्नता भारी 195

गुरुकुल में—

स्वर्णिम सूर्योदय आज हुआ, धन्य दिन है प्रतीक्षित मनोहारा
पालीताणा यशोविजय गुरुकुलमे, संघ विराजित शनिवारा 196
गुरुकुल प्रांगण में ठाठ रहा, विभिन्न कार्यक्रम से उसदिन
गुरुपूजन संघपूजन प्रसंगानुरूप पूज्यवर उद्वोधन 197
विभिन्न प्रान्त देशभरके हजारों जैन वन्धु आए
बस कारों की कतार लगी शासन शोभा को बढ़ाए 198
विस्तृत प्रांगण संकीर्ण बना, जन समूह के आगमन से
साधर्मी वात्सल्य उपरान्त रात्रि आनन्द प्रवर्धित गायन से 199
बाड़मेर आहोर और मद्रास मंडल की गीत कला
प्रभु भक्ति में मस्त बने, विभिन्न वाद्य बजे तबला 200

ऐतिहासिक प्रवेश

चैत्री शुक्ला शुभ दिन सातम, इतिहास समृद्ध बनाया है
शासन सरताज कान्तिसागरजी, पैदलयात्री संघ लाया है 201
ऐतिहासिक प्रवेश महोत्सव की पुनीत घड़ियां मन भावन है
प्राची ने लाली बिखरायी अद्य उषा धन्य पावन है 202
लाखों भक्तों के अंतर में, आनन्द उर्मियां उछल रही
अलकापुरी सम सज्जित नगरी मन ही मन मचल रही 203
महासंघ स्वागत मे अनेकों स्वागत द्वार सजाये गये
ध्वजा पताका तोरण आदि दर्शनीय बंधवाये गये 204
वैभव समृद्ध अनोखीशान, स्वागत की शब्दातीत रही
भारी संख्या मे उपस्थिति सभी कौमों की सस्मित रही 205
हर्ष हार माला का सर्जन, आनन्द की अवधि है कहाँ
प्रसन्नता का क्या ! पारावार, अद्वितीय संघ प्रवेश जहाँ 206
सोनेरी उषा सर्व प्रथम संघ दर्शन करके धन्य बनी
गुरुकुल से प्रस्थित प्रातः में अतिभव्य जुलूस दर्शनीय मणि 207
पवनवेग से लहराता अति उच्च इन्द्रध्वज सर्व प्रथम
बाड़मेर के ऊँट हाथी रथ घोड़े शोभित है अनुक्रम 208

भावनगर और बीजापुर की बैण्डपार्टी भी थी अनुपम
गगनभेदी मधुर स्वर लहरी सुनने को लालायित मन 209

विभिन्नप्रान्त की भजन मडली नृत्य गीत में लीन बने
आगन्तुक दर्शनार्थी जन सघ यात्रीगण नमबद्ध बने 210

सघयात्रा के नायक दृढसकल्पी कान्तिसागर गुरुवर
शिष्यवृन्द सहशोभ रहे ज्यु तारो मे निशाकर 211

निश्राप्राप्त सस्मितवदन साध्वीजी का विशाल समूह
एकसौ आठ कलश को लिये महिलाए मगल वाच्छित ग्रह 212

भव्य रजत रथ शोभित प्रभुजी, प्रभाप मेदिनी मानव की
जय जय हो महासघ सघपति निश्रादाता गुरुदेव की 213

सभी गच्छ समुदाय शिरोमणि गणिवय मुनि आर्याजी
प्रवेश जुलूस मे सम्मिलित हो एकत्व भाव दर्शायाजी 214

मुख्य मार्ग पर नाच रहा उत्साह स्वतत्र आज बनकर
स्वागत कर रहे मडप सभी जाति सस्था जैन जैनेतर 215

बारी गली चौक कही भी दिखता खाली स्थान नही
भारी भीड दशक की नजरें ढूढ प्रश्न विराम कही 216

चौपन दिवसीय पदयात्रा के यात्रिक सघपति कैसे !
निश्रादाता गुरुदेव श्री के दशनकर दर्शक हर्षे 217

मनमोहक भव्य विराट् जुलूस, जब प्रमुख मार्ग मध्य आया
पुष्पवृष्टि की अपूव शोभा, स्वागत शान को बढाया 218

प्रमुख अतिथि मणिलालजी महासघपति का सत्कार
भावभरा अभिनन्दन करके पहनाया सुन्दर पुष्पहार 219

महाकौशल मूर्तिपूजक सघ ने भी पुष्प वर्षाये
महावीर सिक्का श्रीफल और हार भेटकर हर्षाये 220

भक्त हृदय की मगल भावना गुरु चरणो मे बहने लगी
कलात्मक गहुली ढेर जहाँ मनको श्राकर्षित करने लगी 221

विधिपूर्वक वदनकर भक्ति से श्रद्धा सुमन चढाया
परमोपकारी पूज्य गुरुदेव को, अक्षत से बधाया 222

जयध्वनि मे नभ गूज उठा, आदर्श अनोखा दृष्यमान
नजरे जो टिकी फिर हट न सकी लाखो जिह्वा से स्तुत्यवान 223

पादलिप्तपुरी का वैभवमय स्वागत और हार्दिक सम्मान
कान्तिपूर्ण महासघ समर्पित, भक्ति भाव अपूर्व महान् 224

हाथी के हौदे पर बैठे ताराचंदभाई रेवाबहिन
नकदी रुपयों का निछरावल जुलूस किया उदारमन 225

तीर्थाधिराज सिद्धाचलस्वामी, आदीश्वर प्रभु की जयकार
निश्रादाता महासंघ प्राण गुरुवर असीम तेरा उपकार 226

कर्णप्रिय नारों की झड़ी कोई गाने लगे गुणगान कड़ी
स्पन्दित प्राण हुए सभी के रोम राजी साडातीन कोड़ी 227

आनन्द विभोर बनी है जहाँ, अथक अमाप उत्साह रहा
हर्षसागर मे डुबकी लगाकर ऐतिहासिक यात्रा प्रवाह बहा 228

स्वयसेवक सुन्दर ढंग से, व्यवस्थित जुलूस बनाये रखे
अभूतपूर्व कान्ति मनोहर स्मृतिपट अंकित जीवन्त बने 229

अब विराम का प्रथम स्थान 'माधोलाल मे सुमति जिनालय
कान्ति स्वर मे प्रभु स्तुति पश्चात् प्रदक्षिणा तीन वलय 230

चैत्यवदन विधि दर्शन करके चले गुरु स्थल हरिविहार
स्वर्गस्थ हरि गुरुवर सन्मुख भेट कान्ति श्रद्धा का हार 231

हरिसागरसूरि ज्ञानमदिर मे नूतन निर्मित हाल का
द्वारोद्घाटन किया केवलचंदजी खटोड मद्रास का 232

हरि विहार ज्ञान मन्दिर मे जुलूस सभा का रूप लिया
सचोट प्रवक्ता आचार्यप्रवर की वाणी ने मत्रमुग्ध किया 233

महत्त्व है क्या! सघयात्राका, सामाजिक धार्मिक आध्यात्मिक
संक्षिप्त विवेचन सुन्दरतम, सिद्धिगिरि के परमाणु सात्विक 234

महासघपति भवरलालजी सर्वोच्च बोली मे लाभ लिया
श्री जिनहरिसागरजी की मूर्तिको विराजमान किया 235

मुख्य अतिथि तथा संघपतियो का हुआ सन्मानजी
सघशिरोमणि पूज्यवरको चादर ओढाये राक्यानजी 236

सभा विसर्जन पूर्व किया गया घोपित निर्णित कार्यक्रम
गाम धुआड़ा बन्द आज है फले चुनडी का आयोजन 237

धर्मनिष्ठ मणिलालजी डोसी, समाजसेवी उदारमना
फले चुनड़ी का लाभ लिया है संघ स्वागतार्थ कृत पुण्यघणा 238

दोपहर मे सघ की बैठक सन्मान समारोह रात्रि मे
सभा विसर्जित हुई स्वय सेवक जुटे है खात्रि मे 239

मिलापचन्दजी गोलेच्छाजी निष्ठात: कार्यमग्न बने
सराहनीय सहयोग दिया है सहर्प श्री हीराभाई ने 240

अविरत परिश्रम के कारण आयोजन सब सफल रहे
सहयोगी काकुभाई और वालुभाई उस वक्त रह 241

सफल आयोजन फले चुनडी का जनजन मे चर्चित है
महापुरुषो की शक्ति मे ही ये विराट् काय सभवत है 242

गुरु गौतम की लब्धि निधि दादागुरुदत्त कुशल कर्ता
गौरवमयी परम्परा हरि की विस्तृत रश्मि कान्ति करता 243

तृतीय प्रहर ज्ञान मदिर खरतर गच्छीय सम्मेलन
राक्यानजी की अध्यक्षता मे महासघ विचार मिलन 244

अध्यक्ष महोदय ने महासघ के उद्देश्य को बतलाया
सगठन मे सहयोग अपेक्षित युगकी माग समझाया 245

शिक्षासमिति रिपोट को किया आतमजी ने प्रस्तुत
पारसमलजी के विचारो में दर्शित गुरुभक्ति का पुट 246

कुशल जन्म शताब्दी आगामी फाल्गुन मे मनाने को
मार्गदर्शन सहयोग देंगे अपने गढसिवाना को 247

बाडमेर कलकत्ता बालाघाट बडोदरा वासी
आगन्तुक गणमान्य जनो ने समयोचित भाव प्रकाशी 248

छत्तीसगढ मनोहरश्रीजी का सुन्दर आह्वान रहा
तन मन धन से गुरु भक्ति मे जुट जाए यह सारा जहां 249

विदुषी साध्वी हेमप्रभाश्रीजी का प्रेरक उद्बोधन
अतीत पृष्ठ खरतरगच्छ की वर्तमान स्थिति का शोधन 250

मणिलालजी ने बतलाये प्रगति स्थाई कोष की
रकम बढाई कई लोगों ने वर्धित राशि उद्घोष की 251

खरतरगच्छ महासघ उपवन, सजन में सहयोग करे
आश्वासन के साथ जयध्वनि गूंजित हुई विराम धरे 252

रात्रि मे अभिनन्दन समारोह

सुशोभित और परम पवित्र पालीताणा का हरि विहार
रग विरगे ध्वजा पताका से दर्शनीय स्वागत द्वार 253

प्रशसनीय रोशनी विद्युत् की माला पहन किया शृगार
राजमहल की तरह दीपता, प्यारा प्यारा हरि विहार 254

निशा ज्योतिमय ज्ञान मन्दिर अभिनन्दन काय प्रारम्भ हुआ
पूज्य प्रवर गणमान्य अन्य सभी योग्यस्थान को प्राप्त किया 255

समारोह अध्यक्ष कमिश्नर मेहता देवेन्द्रराजजी थे
मुख्य अतिथि चीफ इन्जिनियर जैन दुर्गादासजी थे 256

सर्व प्रथम मंगल प्रार्थना लघुमुनिवृन्द ने फरमाया
स्वागतगान की मधुरध्वनि विशाल हॉल को गुंजाया 257

महासंघ के प्रेरक नायक प्राण तुम्ही कान्ति प्यारे
खरतरगच्छ महासंघ दिशादर्शक अभिनन्दन स्वीकारे 258

अखिल भारतीय जैन संघ को गुरुवर तुमपे नाज है
अनुमोदन कर रहे हृदय से जैन संघकी आवाज है 259

महासंघपति भंवरलालजी बोहरा का अभिनन्दन

जिनके सन्मुख सर्व प्रथम यात्रा का भाव दर्शाया
कान्ति विचार करने साकार दृढ़ संकल्प बनाया। 260

अल्प समय में वृहत् कार्य को मूर्त्तरूप देने वाले
महासंघपति सरल मनस्वी भंवर बोहराजी आले 261

पुष्पहार द्वारा महासंघने बोहराजी का किया सन्मान
महाकार्य स्मृति निम्न लिखित अभिनन्दनपत्र किया प्रदान 262

अभिनन्दन पत्र

प्रज्ञापुरुष कान्ति गुरुवरजी वरदहस्त है सुखकारी
महासंघ के कीर्तिस्तंभ भंवरजी बोहरा संस्कारी 263

जिन शासन कृत सेवा महान्, अमूल्य सदा अनुकरणीय
समाजरत्न कर अर्पित है प्रशस्तिपत्र यह संस्तवनीय 264

हे दानवीर ! दिलदरिया मे विस्तृत महासघ समाया है
तन मन धन सब कुछ अर्पित कर जैन धर्म की शान बढ़ाया है 265

महासंघपति पद भूषित हुए, [illegible] हमारे
मरुधर भूमि बाड़मेर जैन के मुख उज्ज्वल [illegible] 266

गुरुभक्त प्रवर तव श्रद्धा केन्द्र है गुणभण्डार गुरुदेवा
खरतरगच्छ सरताज कान्तिसागरजी पदरज सेवा 267

श्रद्धा सुमन सुवासित हृदयवाटिका की दर्शन सदा
आस्था रूप प्रगाढ़ रंग गुरु कृपा दृष्टि की रहती सदा 268

अभिलाषा अंकुर है स्वतः और मनमयूर भी नाच रहा
[illegible] शिविर भवरलाल हृदय कान्ति अनूठा 269

आज समर्पण है सराहनीय शब्दमणि गुरुवर अनमोल
इस गुरु धर्म सेवा में द्रव्य खर्च किया दिल खोल 270

हरि विहार निर्माण वाय मे आर्थिक योग दिया भारी
नाकोडातीर्थ अभूतपूर्व उपधान कराया दो वारी 271

व्यक्तित्व प्रखर वक्तृत्व सफल, भारत गौरव को बढाये
विदेशो मे स्थान मिला उद्योग प्रसिद्ध पाये 272

धार्मिक सामाजिक व्यवहारिक विभिन्न क्षेत्रों को सभाले
श्री प्रसन्नता स्वउदारता से सबको खुश कर डाले 273

है शब्दकोप सीमित असीम कृति को दर्शाना शक्य नहीं
मानवता के मधुर मगायक भवरजी स्वागत अद्य यही 274

जैन सघ प्रेषित शुभेच्छा तुम जीवो वष हजार
हार्दिक अनुमोदन अभिनन्दन कर लेना स्वीकार 275

डोसीजी का स्वागत

फले चुनडी का आयोजन करने वाले दिल्लीवासी
प्रसिद्ध समाज सेवी उदात्तमन हैं मणिलालजी डोसी 276

सघपति पद प्राप्त किया जैनेतर जैन पन्द्रह व्यक्ति
परिचय पूव मे दिया गया सघपति जीवन अभिव्यक्ति 277

उपरोक्त नामी भव्यात्माओ का, भावभरा सन्मान हुआ
खरतरगच्छ महासघने पहले पुष्पहार प्रदान किया 278

स्वागतकर्ता प्रमुख शहरो की नामावली प्रस्तुत है
सराहनीय सत्कार समिति हरि विहार विश्रुत है 279

अध्यक्ष चपालालजी मत्री पारख शान्तिलालजी
कोषाध्यक्ष मुकनचदजी, सेवारत भगवानदासजी 280

मद्रास जयपुर बडौदा बम्बई सघ प्रतिनिधि थे बलिहार
अहमदाबाद बाडमेर रायपुर आदि जगह से हुआ सत्कार 281

अदम्य उत्साह तरगो से वातावरण था अतिरम्य
पदयात्रा समिति का स्वागत अनुपम और दशनीय 282

अनुयोगाचाय गुरुवरजीने नवनीत दिया जिनवाणी का
सम्यग् श्रद्धा यदि नही उद्धार कहां फिर प्राणी का 283

ड्राइवर डॉक्टर के उद्धरण दे बोले अटल विश्वास रहे
देव गुरु धर्म मे आस्था, जीवन्त जबतक श्वास रहे 284

धम देशना बाद आपने माँगलिक फरमान किया
तीथपति जय ध्वनि प्रसारित हुई रात्रि विश्राम लिया 285

शिखर यात्रा एवं संघमाल

आज का चौपनवां दिन महासंघ यात्रा का प्राण था
अष्टमी सोम मंगल प्रभात, सिद्धाचल का ध्यान था 286

कैसी अनमोल है शिखर दर्श की प्रतीक्षित पावन घड़ियां
एक दृश्य पर्वत का देखा, खिलने लगी हृदय कलियां 287

नयनों में झांखा निद्रा ने, मिला नहीं पर स्थान कहीं
उत्तुंग शिखरस्थित आदिदेव में अर्पित प्राण वहीं 288

बाजे गाजे संघ चतुर्विध, संघ शिरोमणि साथ में
हरि विहार से तलहटी पहुंचे स्वर्ण अक्षत लिये हाथ में 289

भक्तिपूर्ण हृदय से संघने गिरिराज को वधाया
पावनरज सिद्धगिरि मस्तक धर, जन्म कृतार्थ मनाया 290

तलहटी चैत्यवंदन विधि करके, हर्षोल्लास सह गिरि चढ़े
पावन पुनीत परमाणु स्पर्शतः, निर्मल भव्य भाव उमड़े 291

अष्टकर्म की काली घटाओं से आच्छादित है ये जीवन
तारण तरण देव दर्शन से ही टूटेगा कर्म बन्धन 292

जीवन के विश्राम मेरे तुम, शरणागत पे कृपा करना
शून्य हृदय सर्जन होगा फिर बुझा दीप प्रदीप्त बना 293

प्राण पंछी के भाव पंख प्रभु वन्दन सक्रिय बना
अधूरे स्वप्न साकार करने आशा सूर्य प्रकाशी बना 294

उच्चशिखर स्थित दूर हो स्वामी ! पर मुक्त हृदय के अभिराम
भाव पगथिये चढ़के पहुंचे, खरतर वसही टूंक अभिराम 295

खरतरगच्छ शृंगार हार है युग प्रधान दादा गुरुदेव
श्री जिनदत्त कुशलसूरि चरण पादुका दर्श किया सदैव 296

हृदयस्थित प्रत्यक्ष प्रभावी, विघ्नहर ये गुरुराज हैं
निर्विघ्न यात्रा महासंघकी कुशल कृपा अनुराग है 297

खरतरवसहि गुरुवन्दन कर चैत्यवंदन किया [illegible] में
आशा किरण की चादर लेकर पहुंचे सभी [illegible] में 298

दादा ऋषभ दरबार में मधुर उत्कंठा का [illegible]
चातक शान्ति मिलन है साक्षात [illegible] [illegible] [illegible] 299

आराधना का [illegible] है [illegible] है [illegible] [illegible] से
[illegible] 300

[illegible]
[illegible]

अनर्नाद सुवासित माला समर्पित चरणे आदीश्वर
भावो के आवेग से स्वत मुखरित हुआ भक्तामर 302

द्रव्य भाव विधि पूजन करके माना परिधान के लिये सभी
बाह्य प्रागण सुशोभित मडल योग्य स्थान पा लिये तभी 303

स्मित रेखा बिखरी चेहरो पर निश्च्छल नयन निहार रहे
कृतार्थता का परम गान सह मुक्ति माल बलिहार है 304

धार्मिक उपकरण लिये सघपति हुए मालारोहण अभिमुख
क्रिया का प्रारम्भ किया पूज्येश्वर प्रतिमा सन्मुख 305

भाग्यशाली कलकत्तावासी कमलसिहजी दुधेडिया
प्रथम माल पहनने का सौभाग्य जिन्होने प्राप्त किया 306

विधि सहित इन्द्रमाल सभी सघपतियो ने पहना सप्रेम
पुनीत तिथि की यादी मे यथाशक्य लिया व्रत नेम 307

सघमाल गिरिराज की यात्रा मे अपूर्व आनन्द रहा
दादा गुरुदेव की पूजा मे भक्तिरस धार अखड बहा 308

हर्षपूर्ण पूर्णाहुति के पश्चात् सभी नीचे आए
आयोजित स्वधर्मी भक्ति व्यवस्थित अनुकूलताए 309

फिल्म दिखाई गई रात्रि मे हरि विहार के हाल मे
मणिधारीजी अष्टम शताब्दि उत्सव आया ख्याल मे 310

विदाई

सद्गुण माला सघ विशाला, आकर्षक जादु डाला
उज्ज्वल पृष्ठ निर्मित इतिहास की जडित शब्द मणि माला 311

अमरगान का दृश्य आखिरी विदाई की तैयारी
सावन भादो की वर्षा से भीगा मधुर हृदय क्यारी 312

नवपल्लवित सघ उपवन स्मृति दीप कभी ना बुझ पाये
नियमाबद्ध हुए नरनारी, अनुमोदन कर हर्षाये 313

सघयात्री सेवाभावी जन सामान्य सेवक वर्ग सभी
यथायोग्य सन्मान सभी का महासघ ने किया तभी 314

प्रसन्नता और विरह दग्धना दोनो अनुभव साथ लिये
मगलवाणी गुरु मुख से सुन यात्रीगण प्रस्थान किये 315

महासंघ निश्राप्रदाता पू० गुरुदेव अनुयोगाचार्यजी म० सा० की संक्षिप्त जीवनी

महासंघ निश्रादाता गुरुदेव जीवन परिचय प्रेषित
जन्मभूमि राजस्थान रतनगढ़ उन्नीससौ अड़सठ संवत 316

एकादशी माघकृष्णा सोहनदेवी मन हर्षाया
सिंघी मुक्तिमलजी कुलदीपक जन्मोत्सव मनाया 317

होनहार के शुभ लक्षण दर्शित थे बाल्यावय से ही
वैराग्यरंग भीगा जीवन भौतिक व्यामोह मे फंसा नहीं 318

खरतरगच्छाचार्य हरिसागर सूरिश्वर पद अनुरागी
अल्पवय मे दीक्षा लेकर तेजस्वी बाल बना त्यागी 319

कान्तिसागरजी नामकरण हुआ ज्ञानार्जन मे हुए तल्लीन
तीव्र बुद्धितः अल्प समय मे विभिन्न विषय मे हुए प्रवीण 320

गुरुपद सेवा शासन प्रभावना मे सदैव प्रवृत्त रहे
बीकानेर मे मासक्षमण तप करके भी अप्रमत्त रहे 321

राजस्थान लोहावट मे ज्ञान भंडार किया व्यवस्थित
हरि गुरुवर की छाया मे कान्ति सश्रद्ध थे समर्पित 322

उपधानतप सम्पन्न कराया सचेतीजी द्वारा आयोजित
दो हजार पाच में हुवे अनुयोगाचार्यपद से विभूषित 323

पायधुनि स्थल दो हजार छै कठोर वज्राघात हुआ
परम आराध्य हरिसागरसूरिश्वरजीका स्वर्गवास हुआ 324

टूटे दिल पर बोझ पड़ा सक्षम हो कर्तव्य वहन किया
मेड़तारोड मे आपने पूज्य हरि चरणपादुका स्थापित किया 325

भारत के हर प्रान्त में विचरण करके किया धर्म प्रचार
मधुर प्रखर प्रेरक प्रवचन से मुग्ध बनी जनता दरबार 326

विभिन्न विषय पर कई क्षेत्रों मे पब्लिक प्रवचन सहस्र हुए
पच्चीस हजार प्रति प्रवचन मे सुन सर्व आकृष्ट हुए 327

जगह जगह मन्दिर की प्रतिष्ठा उद्यापन सम्पन्न किये
आर्वी भांदक गंदुर में उपधान आयोजन सफल किये 328

जैसलमेर यात्रार्थ पधारे पैदल यात्री संघ लेकर
कापरड़ा केशरियाजी संघ साथ पधारे थे गुरुवर 329

तीर्थ नाकोड़ाजी मे गुरुवर छै उपधान कराये है
बाड़मेर संघ मे नई जागृति आप ही लाये हैं 330

दो हजार छब्बीस मे आपने कलकत्ता चौमासा किये
अपार हर्ष सागर की तरगे परिलक्षित इक व्यास लिये 331

मधुर कर्णप्रिय देशना सुनने को लालायित मन
अमाप मेदनी मानवकी, एकाग्र हो सुनते प्रवचन 332

तन मन धन से श्रुत भक्ति कर भगवती सूत्र वोहराया
श्रीसघ के सन्मुख गुरुवरने भगवती सूत्र सुनाया 333

सहज सरस शालिन्य सरलता भाषा अनुपम थी प्यारी
मर्मस्पर्शी प्रतिवादन शैली, विद्वद् चकित हुवे भारी 334

पर्युषण मे धूम मची तपस्या का पारावार नहीं
स्वधर्मी भक्ति जुलूस पूजा प्रभावना की भरमार रही 335

ग्यारह हजार की बोली लेकर पूज्य सुचित वेश मेले
गुरु भक्त श्री परीचदजी सेवा मे सदा रहे पहले 336

एकसौ सोलह तपस्वीजन का सामुहिक सन्मान हुआ
अष्ट तपस्वी मासक्षमण के स्वर्णहार प्रदान किया 337

तपस्वीजन के स्वागत मे कई प्रभावनाओ का ढेर जहाँ
सुनहरा मन भावन अनुपम आयोजन दर्शनीय रहा 338

पुण्यभूमि शिखरजी की ओर गुरुदेव की निश्रा मे
उपधानतप करवाने का निर्णय लिया श्रीसघने 339

अवर्णनीय उपकार सभी कलकत्ता सघ न भूलेगा
प्रसन्नवदन उदार हृदयी की पुनीत स्मृति मे झूलेगा 340

चातुर्मास समाप्ति के उपरान्त पधारे शिखरजी
भव्य आराधना उपधान की करवाये कान्ति गुरुवरजी 341

यथासमय अनुकूल व्यवस्था तपस्वीजनो की भक्ति से
निर्विघ्न सम्पन्न आयोजन गुरुदेव की पावन शक्ति से 342

एक लाख एकावन हजार मे प्रथम माल बोली लेकर
रतनचदजी मोघा ने लाभ लिया गुरु भक्त प्रवर 343

सवत् दो हजार सत्ताइस आप पधारे दिल्ली जी
अष्टम शताब्दि महोत्सव मणिधारी दादा गुरुवर की 344

वृहद् समारोह आपकी निश्रामे सानन्द सम्पन्न हुआ
आपकी सचालन क्षमता ने पूर्ण श्रेय सप्राप्त किया 345

दो हजार तीस आसाढी कृष्णा सप्तमी दिन प्यारा
बालमुनि मणिप्रभसागरजी ने सयमपथ स्वीकारा 346

पच्चीससौवीं निर्वाणतिथि उत्सव पूर्वक मनाने को
महावीर निर्वाण भूमि पावापुरी दर्शन पाने को 347

उग्र विहारी पहुँच समयपर सारा कार्य संभाला
सर्व संप्रदायों से समन्वयता का भाव विशाला 348

शान्ति से सहयोग प्राप्त कर, उत्सव को चमकाये
राजनैतिक और पारस्परिक सारे उलझन सुलझाये 349

जैन जगत के उज्ज्वल नक्षत्र ज्योतिर्मय गुरु प्यारे
युगों युगों तक मार्ग प्रशस्त तुम करते रहो हमारे 350

एक समीक्षा

वर्तमान युग कायाकल्प किया एक सामयिक संकल्प ने
आराधना का भाव जगाया, चौपन दिवसीय महासंघ ने 351

संघयात्रा की समीक्षा में इतना ही कहना बस होगा
धर्मकार्य के साहस में यह नवीन दिशादर्शक होगा 352

राष्ट्रवादी समाजवादियों की नजरों को खोल रहा
धर्मवादी अनादि कालीन परम्परा को बोल रहा 353

जैनेतर के जीवन में भी जैनत्व का संस्कार चढा
तीन संघपति है अजैन भी पदयात्रा का भाव उमड़ा 354

प्रभावक परिचय जिन पथ का लाखो लोगो ने जाना
पुनीत संघ यात्रा किये अमर गाथा हरदम माना 355

आर्यत्व का संस्कार जगाने मंगल घंट बजाया है
जन से जिनपद पाने का पावन संदेश सुनाया है 356

समापन

प्रातःस्मरणीय पूज्येश्वर का प्रेरक आशीर्वाद मिला
आपके शिष्य पूज्य मणिप्रभजी से अनुभव वर्षात मिला 357

मनोहर अभिव्यक्ति महासंघ की सश्रद्ध समर्पित स्वीकारे
दो हजार सैंतीस शुक्ल चैत्री सातम दिन रविवारे 358

ऐतिहासिक विराट् आयोजन निर्विघ्न सम्पन्न भया
कान्ति गुरुवर की क्रान्ति से प्यारा खरतर चमक गया 359



ऐतिहासिक महासंघ और उसके प्रेरणादाता

लेखिका
'अनुभव शिशु'

शासन के सुविशाल नभ म सूय बने हुए
अनेकों भव्य कमल जिनके प्रभालोक में मुदित हुए
शासन के महान् कार्यों के परलवन मे अगाध
प्रेरणास्रोत रत्नत्रय के अनुराग से ओतप्रोत
ज्ञान की गभीरता, विचारों की तेजस्विता
और आचार की निर्मलनिष्ठा से प्रदीप्त
महान् व्यक्तित्व के धनी भगवत्स्वरूप गुरु-परम्परा के वाहक रत्नत्रय की कान्ति से कान्तिमान् विश्व-क्षितिज पर प्रकाशित हैं—सन्त शिरोमणि, समन्वय साधक, प्रज्ञापुरुष, सर्वतोमुखी प्रतिभा-सम्पन्न, अनुयोगाचार्य पूज्य गुरुदेव कान्तिसागरजी म० सा० ।

पूज्य गुरुदेव की समदर्शिता, सदाशयता शालीनता, प्रखरविद्वत्ता, उदारता, विशालता, निष्पक्षता, प्रवचनपटुता प्रबुद्धजागरूकता के परिणामस्वरूप जैन-समाज म ही नही, इतर समाज के लोक-मानस पर भी उनके गरिमापूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व की गहरी छाप है । उनका सरल, निश्छल, बहुआयामी व्यक्तित्व आज जैन समाज के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है ।

लम्बा कद, भरापूरा शरीर कान्तिमय स्निग्धश्यामवर्ण, मधुरमुस्कान एव अपूर्व शान्ति से दीप्त मुख-मण्डल, विशाल भाल उन्नत-वक्ष स्थल, प्रलम्बबाहु, सिर पर विरल और धवल केश राशि, उपनेत्र म से चमकते तेजोमय नेत्र, जो दूसरो के मनस्थ भावो को परखने मे परम प्रवीण है जो देखने से अधिक बोलने लगते हैं श्वेत शुभ्र वस्त्रो से समाच्छादित प्रभावकारी एव जादूभरा बाहरी व्यक्तित्व है, पूज्य गुरुदेव श्री का जो उनके आन्तरिक विशुद्ध व्यक्तित्व का निर्दोष प्रमाण है—सादा जीवन उच्च विचार— Simple living and high thinking

गुरुदेव श्री आत्मिक अहम्मन्यता से कोसो दूर है। कई बार उन्हे कहते सुना है कि —मैं कुछ नहीं हू—मेरा कुछ नही है जो कुछ है जो कुछ हो रहा है वह गुरुदेव का ही प्रभाव है उन्ही की कृपा का सुफल है । सच है, महत्ता .. महानता इसी का ही तो नाम है जहा अह की सारी दुरभिसन्धिया निष्फल हो जाती हैं। उनका यह उदात्तस्वरूप सभी को अपनी ओर बरबस आकृष्ट कर लेता है ।

लगता है वक्तृत्वशक्ति प्रवचन पटुता उन्हे अपने सहज पूर्वगत सस्कारो से सप्राप्त हुई है । अद्भुत है उनकी वाणी का अजस्र प्रवाह, जिसमे श्रोतागण उन्मज्जन-निमज्जन करते हुए अघाते नहीं हैं । अपने प्रवचन मे वे जिस किसी भी विषय को छू लेते हैं, फिर वह कठिन से कठिन भी विषय क्यो न हो, पुरानी से पुरानी भी घटना क्यो न हो, उसे नयी दृष्टि नया मोड देकर एक विलक्षण कलाकार की तरह रगो का अद्भुत

अनूठा मिश्रण प्रस्तुत कर उसे चरम-शिखा तक पहुचा देने की अद्भुत क्षमता एवं सहजयोग्यता है। तात्त्विक बनाने के साथ जीवन को सात्विक बनाने के प्रति उनकी अन्तर्प्रेरणा अधिक रहती है। नैतिकता, संयमनिष्ठा, सासारिक सुख वैभव की तुच्छता, सम्यग्दर्शन की महिमा आदि समय-समय पर आपश्री की वाणी से प्रतिध्वनित होते रहते है। मानवीय मूल्यों के प्रतिष्ठापक गुरुदेवश्री के प्रवचनो को सुनने के लिये जैनेत्तर भी उतने ही लालायित रहते हैं। आगम की पक्तियों के साथ स्थल-स्थल पर गीता, महाभारत, रामायण, स्मृतियां, कुरान, पुराण और वाईवल के उद्धरणों से प्रमाणित धार्मिक और नैतिक विश्लेषण श्रोताओ को अपनी बात हृदयंगम कराने मे पर्याप्त है। वक्तृत्व के साथ-साथ स्वर-माधुर्य, गायन-कला भी आप में सहजसिद्ध है। प्रसिद्धयोगिराज, अध्यात्मनिष्ठ आनन्दघनजी के पदों के आप अच्छे गायक और व्याख्याता है। कई-कई दिनों तक एक-एक पद पर आपके व्याख्यान चलते रहते है। व्याख्यान के बीच जब आप आनन्दघनजी के पद या प्रसंगानुकूल अन्य पद गाते है, तो श्रोता आपकी भाव-प्रवण स्वर लहरी से मन्त्र-मुग्ध हो असीम आनन्द से झूम उठते है। तथा गुरुदेव के स्वर में स्वर मिलाकर स्वय गाने लग जाते है। कलकत्ता जैसे महानगर मे मुर्शिदावादी वावूलोग जो कि आधुनिक युग के धन्ना सेठ है उनका 10-10, 15-15 माइल से व्याख्यान श्रवणार्थ नियमित रूप से ठीक समय पर पहुंच जाना, कभी उपाश्रय की तरफ न आने वालो का भी नित्य आना गुरुदेव की वाणी का ही जादू है। यही कारण है कि जिस क्षेत्र में आपश्री का पधारना होता है—वही प्रभु-भक्ति, तपस्या, उपधान, संघपूजन, स्वधर्मीभक्ति अनुकम्पादान, विविध आराधनाओ की झड़िया लग जाती है। निर्वाणशताब्दी में आपश्री की निश्रा मे हुई मोदक चढाने की वोलियां तथा सम्मेत शिखर महातीर्थ मे हुई उपधान की माला की बोलिया आज भी कीर्तिमान (Record) है।

जैनधर्म, दर्शन, जैनत्व और जैनसिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार हेतु वे स्वास्थ्य और सुविधा की परवाह किये बिना महान् से महान् कष्ट झेलने को सदा सहर्ष तैयार रहते है।

सवत् 2017 की बात है जब कुछ मतविस्तारवादी लोगों के कुचक्र के फलस्वरूप बाड़मेर क्षेत्र में दयादान और मूर्तिपूजा विरोधी प्रचार जोर-शोर से चल पडा था, सैंकड़ो लोग उस भ्रामक प्रचार से राह भटक गये थे। तभी कुछ धर्म-प्रेमी लोग, पालीताणा में ससमुदाय विराजमान प्रखरवक्ता आचार्यदेव वीरपुत्र श्री आनन्दसागर सूरिश्वर जी म० सा० के पास पहुचे और सारी स्थिति से पूज्यश्री को अवगत कराया। स्थिति को सम्भालने के लिये एक ऐसे व्यक्तित्व की आवश्यकता थी जो आगमों का ज्ञाता, तत्त्वों का वेत्ता, समर्थ तार्किक, व्यवहार-कुशल, निर्भीक, समयज्ञ एवं सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न हो। सूझ-बूझ के धनी, मानव प्रकृति के सूक्ष्म पारखी आचार्य श्री ने इस दायित्व के निर्वाह के लिये सभी दृष्टि से आप श्री को सुयोग्य समझकर वाड़मेर जाने का तुरन्त आदेश दे दिया। पालीताणा........ और........वाड़मेर ! एक लम्वा अन्तराल ! सिर्फ 20 दिन का समय ! किन्तु सन्त ! सन्त जीवन अपने लिये नही पर के लिये होता है। वह अपने सुख की........अपने आराम की........अपने स्वार्थ की चिन्ता नही करता। वह सदा-सर्वदा दूसरों के हित मे लगा रहता है। वह प्रकृति की तरह उदार भाव से विना मांगे विश्व को सुख-शान्ति और सत्य की राह दिखाता है। वह मेघ की तरह एक दिशा में नही, दसों दिशाओं मे शत-शत धारा से वरसता रहता है। सन्त जीवन कुल मिलाकर वहुजनहिताय और वहुजनसुखाय का अन्तर्घोप है। वस फिर क्या था अपने अनन्यसाथी प्रखरविद्वान् मुनिरत्न श्री दर्शनसागरजी म.सा. के साथ अनन्तसिद्धातमाओ

को भाव-नमन करते हुए आचार्यदेवेश का मंगल आशीर्वाद ले, सिद्धक्षेत्र से शीघ्र ही प्रयाण किया। भूख प्यास...शीत ताप सुख और सुविधा की परवाह किये बिना, बड़े प्रसन्न-भाव से आगे से आगे बढ़ते जा रहे थे। सूर्योदय से सूर्यास्त तक एक ही लक्ष्य था चरैवेति चरैवेति। सिर्फ 17 दिन में ही बाड़मेर। फिर तो प्रवचनों और चर्चाओं का वह दौर चला कि अज्ञान का आवरण टूक-टूक हो गया। हजारों आत्मा अज्ञानान्धकार में भटकने से बच गये। जो भटक गये थे उन्हें मार्ग मिल गया। कितनी अद्भुत कितनी अनुपम.. कितनी महान् है यह शासनसेवा। क्या बाड़मेरवासी गुरुदेव श्री के इस उपकार को कभी भूल सकेंगे?

धर्म से अनभिज्ञ उस क्षेत्र में आज धर्म-ध्यान और साधना का जो मंगल प्रवाह बह रहा है। यह सब गुरुदेव की ही अविस्मरणीय देन है।

भगवान् महावीर की मंगलवाणी को जन-जन तक फैलाकर धर्म जागरण का जो भगीरथ प्रयास इस अबोध क्षेत्र में किया वह पुनः-पुनः अभिनन्दनीय है। बाड़मेरवासी भी कृतज्ञता-प्रकट करने में कम नहीं रहे। गुरुदेव के उपकारों के प्रति अपनी आस्थाओं को ऐसा बांधा कि गुरुदेव श्री की इच्छा न होते हुए भी गुरुदेवश्री को 3-3 चातुर्मास के लिये दूर-दूर से खींचकर ले आये। गुरुदेव श्री की ही निश्रा में सुप्रसिद्ध नाकोड़ा तीर्थ पर 6-6 उपधान, बाड़मेर में कई संघ सम्मेलन और दीक्षाओं के उत्सव रचाये हैं। गुरुदेव की ही निश्रा में बाड़मेर से पालीताणा का 1000-1100 पद-यात्रियों का ऐतिहासिक महासंघ निकालकर तो गुरुदेव के प्रति अपनी अनन्य श्रद्धा और भक्ति के शिखर पर कलशारोहण किया है।

इस संघ की रूपरेखा काफी समय से गुरुदेवश्री की अन्तश्चेतना में स्फुरित हो रही थी। गुरुदेव के स्वप्न को साकार करने हेतु बीड़ा उठाया— बाड़मेरवासी गुरुदेवश्री के प्रति पूर्णभावेन समर्पित भंवरलालजी साहब बोहरा ने। गुरुदेवश्री के तेजस्वी नेतृत्व और कुशल मार्गदर्शन में इस योजना ने साकारता ग्रहण की। 2037 की माघ शुक्ला पूर्णिमा की मंगल घड़ी में बाड़मेर से इस ऐतिहासिक संघ का महाप्रस्थान हुआ। प्रस्थान के दृश्य की दिव्यता और भव्यता देखते ही बनती थी।

वासना के वश हो आज तक आत्मा ने अनन्त भव व्यर्थ खोये। अनेक सुकृतों के फलस्वरूप प्राप्त संपत्ति का भी विषय-वासनाओं के पोषण में व्यय किया। जीवन के परम-ध्येय को भूलकर माया मरीचिका के जल से तृप्त होने के प्रयासों में अनन्तकाल बरबाद किया। न मालूम किस जन्म के संचित सुकृतों के परिणामस्वरूप सद्गुरुओं का सुयोग मिलता है, सद्धर्म के प्रति श्रद्धा जगती है और आत्मा सत्क्रिया का कर्ता बनता है।

आत्मा के अनादिजन्य विषयराग को तोड़ने के लिये ज्ञानियों ने तीर्थयात्रा को खूब ही महत्व पूर्ण बताया है। इसमें भी गिरिराज की स्पर्शना के महत्त्व का तो कहना ही क्या है। अनन्त सिद्धात्माओं का स्थान 'कांकरे-कांकरे सिद्ध अनन्ता' है जिसका कण-कण पवित्रता से आप्लावित है। आज भी कई आत्मा इसकी स्पर्शना से अपना खोया हुआ आत्मधन पुनः प्राप्त करते हैं—कहा है—

"श्री तीर्थपान्थरजसा विरजीभवन्ति
तीर्थेषु बम्भ्रमणतो न भवे भ्रमन्ति।
द्रव्यव्ययादिह नरा स्थिरसम्पद स्युः,
पूज्या भवन्ति जगदीश मयार्चयन्त ॥

आज के इस सुविधावादी युग में भी हजारों भव्यात्मा छरी का पालन करते हुए तीर्थ-यात्रा का लाभ लेते हैं। 'छ'री का अर्थ है —

सम्यक्त्वधारी पथि पादचारी
सचित्तवारी वरशीलधारी।
भूस्वापकारी, सुकृती सदैकाहारी
विशुद्धा विदधाति यात्राम् ॥

1. सम्यक्त्वी होना 2. पैदल चलना 3. सचित्त का त्याग 4. ब्रह्मचर्य का पालन 5. भूमिशयन और 6. एक समय भोजन। इस प्रकार 'छ'री का पालन करते हुए यात्रा करना ही सच्ची तीर्थयात्रा है।

हाथी, घोड़े, ऊँट, नगारे-निशान, शिखरबद्ध जिनालय, मांगलिक तूर्यनाद, मुनि-मंडल एवं साध्वी-मण्डल के साथ एक-डेढ किलोमीटर लम्बी कतार मे अनुशासनबद्धरूप से चलते हुए 1000-1100 यात्रियों के इस सघ का नयनाभिराम दृश्य देखते ही बनता था। भजन-कीर्तन एवं मौन जाप पूर्वक चलते हुए पदयात्री ऐसे लगते थे मानो मुक्ति-...ा के वीर सैनिक कर्मक्षय का व्रत लिये मुक्तिमहल की ओर कूच कर रहे हो। संघयात्रियो की दैनिक-चर्या इतनी व्यवस्थित एव क्रमबद्ध थी कि किसी को व्यर्थ मे भटकने, घूमने, निन्दा, विकथा तथा क्लेशादि करने का अवकाश ही नही मिलता था। गुरुदेवों की सतत् सत्प्रेरणा के फलस्वरूप यात्रियो में आराधना की होड़ सी लगी रहती थी। शंखेश्वर तीर्थ मे सामूहिक अट्ठम की आराधना तथा चौविहार 5-7-11 उपवास की आराधना, सघपतियों एवं यात्रियों द्वारा सप्तक्षेत्र मे स्थान-स्थान पर सद्व्यय मानो सुकृत की झडी सी लगी थी। सघ क्या था मानो, आत्मशुद्धि की Training school और Mobile-university चलता-फिरता विद्यालय था। जहा 54-54 दिन तक यात्री-गण 'रत्नत्रय' की विविध एवं क्रमबद्ध आराधना मे ऐसे भाव-विभोर रहे कि 'विसरगई दुविधा तनमन की' का साक्षात् अनुभव कर रहे थे। संघ का वह आत्मस्पर्शी एवं शांतिमय वातावरण था कि जो 3 दिन के लिये आया वह 30 दिन तक रह गया। संघ की सुव्यवस्था में परम पूज्य कैलाससागरजी म. सा का मूल्यवान् योगदान भी सदा अविस्मरणीय रहेगा। संघपतियों की उदारता, व्यवस्थापको की व्यवस्था और कार्यकर्ताओं की सेवा तत्परता देखने ही योग्य थी। खाने-पीने और सुख-चैन की परवाह किये बिना प्रसन्नमुद्रा से, दिन और रात सेवारत रहने में ही जिन्हें परम सन्तोष था।

अनेक कठिनाइयों के बावजूद सघ ने सर्वथा नवीन रास्ता चुना। साचोर, ढीमा, भोरोल, धराद-वाव होते हुए शखेश्वर पहुचे। यहा परम पूज्य साम्यानन्दमुनिजी म.सा. प्रखरवक्ता जयानन्दमुनिजी म. सा. तथा कुशलमुनिजी म. सा. आदि संघ मे मिले जिससे धर्मप्रचार और अपूर्व शासनप्रभावना का लाभ मिला। छोटे-छोटे गांवो की भक्ति, अहोभाव, गुरुदेव के प्रति अगाध श्रद्धा, स्वधर्मी-भक्ति आदि देखकर तो यात्रियों के दिल गद्गद् हो उठते थे। बनासकाठा-गुजरात और सौराष्ट्र की अपरिचित धरती पर इस सघ का जो स्वागत हुआ, वह सदा अविस्मरणीय रहेगा। सघ के दर्शनार्थ लोग 50-50 माइल से दौड़े-दौड़े आते थे। सघ के प्रेरक और व्यवस्थापकों के प्रति नतमस्तक हो उठते थे। संघ जहां ठहरता था लगता था मानो एक छोटी सी स्वर्णपुरी धरती पर उतर आई हो।

धर्म प्रचार की दृष्टि से भी यह सघ खूब सफल रहा। संघ मे प्रवचन-पण्डाल का दृश्य भी देखने लायक था। व्याख्यान के लिये खासतौर पर बनाया हुआ विशाल पण्डाल भी कम पडता था। वडे गांवों मे तो अतिरिक्त व्यवस्था करनी पडती थी। नित्य नये विषयो पर सरल-सहज भाषा और सरस शैली मे प्रवचन सुनकर श्रोता धन्य हो उठते थे। परम् पूज्य प्रखरवक्ता जयानन्द मुनिजी म सा. के त्याग-वैराग्यमय प्रवचनों से प्रभावित हो सैकडो भाविकों ने रात्रि भोजन त्याग, कंदमूल त्याग, ब्रह्मचर्य, सिनेमा त्याग आदि के नियम ग्रहण किये थे। सघ मे आचलगच्छीय एवं तपागच्छीय साध्वीमण्डल तथा गुरुदेव के अनन्यमित्र शासन-सम्राट के समुदाय के वयोवृद्ध आचार्यदेव श्री यशोभद्रसूरिजी म. सा. ने वरवाला से सघ मे सम्मिलित होकर सघ की शोभा मे और अभिवृद्धि की।

इस तरह धर्मप्रचार और महान् शासन प्रभावना करता हुआ यह महासंघ सिद्धक्षेत्र के समीप स्थित यशोविजय जैन गुरुकुल में पहुंचा। इस ऐतिहासिक संघ के स्वागत के लिये पालीताणावासी महीनाभर पूर्व से ही उत्सुक हो रहे थे। भारत के कोने-कोने से संघ के ऐतिहासिक प्रवेश को देखने के लिये भक्तजन बसों ट्रेनों में भर-भर कर पहुंच रहे थे।

विक्रम संवत् 2037 के चैत्रशुक्ला 7 के प्रभात की बात है।

सूर्य पूर्वाकाश से उदित हो धरती पर अपनी सुनहरी आभा बिखेर रहा था शीतल सुरभित पवन के झोंके रह रहकर जन-मानस को आल्हादित कर रहे थे। मंगल तूर्यनाद मांगलिक स्वर से चारों दिशाओं को आपूरित कर रहे थे। वातावरण बड़ा ही उल्लासमय प्रतीत हो रहा था। चारों ओर से नर-नारियों की अपार भीड़ सागर की तरह उमड़ रही थी। गुरुकुल का आन्तरिक और बाह्य प्रांगण सुविशाल होते हुए भी संकीर्ण सा नजर आ रहा था। 54-54 दिनों की निरंतर आराधनापूर्वक पदयात्रा के बावजूद भी लक्ष्यसिद्धि के संतोष से यात्रियों के चेहरे अवर्णनीय आनन्द से चमक रहे थे। सभी लोग हर्षित मन और पुलकित तन से प्रस्थान समय की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे।

प्रातः ठीक 7.30 बजे 'जय सिद्धाचल जय गिरिराज' के गगनभेदी महाघोष के साथ संघ ने गुरुकुल से प्रस्थान किया। सबसे आगे जिन शासन के गौरव और संघ प्रवेश की सूचक इन्द्रध्वजा फहरा रही थी। उसके पीछे नगारे निशान और सवारों से सुशोभित घोड़े-ऊंट थे। उनके पीछे स्थानीय बालाश्रम एवं गुरुकुल के 300 बालक 3-3 की पंक्तियों में कदम से कदम मिलाकर जयनाद करते हुए चल रहे थे। उसके बाद स्थानीय बैंड तथा अपनी मस्त-चाल से जन-जन को आकर्षित करता हुआ गजराज था। तत्पश्चात् अहमदाबाद का सुप्रसिद्ध जीया बैंड अपनी मन मोहिनी भक्ति धुनों से मानव मन को भक्ति रंग में रंग रहा था। तत्पश्चात् चांदी के रथ और संघ का शिखरबद्ध नयनरम्य जिनालय था। उसके पश्चात् 8 फुट ऊंची विशाल डोली में विराजमान संघ के प्रेरणास्रोत हजारों नेत्रों के केन्द्र बिंदु, सन्त शिरोमणि, प्रज्ञापुरुष, दिव्यता और भव्यता की मूर्ति, अनुयोगाचार्य श्री कांति-सागरजी म. सा. नतमस्तक जन समूह को आशीर्वाद प्रदान करते हुए पधार रहे थे। उनके साथ वयोवृद्ध यशोभद्रसूरिजी म. सा. श्री रैवतसूरिजी म. सा. श्री लब्धिचन्द्रसूरिजी म. सा., श्री शान्तिविमल सूरिजी म. सा., श्री यशोदेवसूरिजी म. सा., श्री अरिहंतसिद्धसूरिजी म. सा., श्री भानुचन्द्रसूरिजी म. सा., श्री जयचन्द्रसूरिजी म. सा., पंन्यास प्रवर श्री हेमप्रभविजयजी आदि मुनिमंडल जुलूस की शोभा बढ़ा रहे थे। तत्पश्चात् हर्ष से झूमते हुए फूलमालाओं से लदे हुए संघपति और उनके पीछे विशाल जन-समुदाय था। उनके पीछे बीजापुर का सुप्रसिद्ध बैंड और शताधिक साध्वी मंडल हजारों सन्नारियों का नेतृत्व करता हुआ चल रहा था। संघ का प्रवेश जुलूस पालीताणा के इतिहास में सदा चिरस्मरणीय रहेगा। जिलाधीश पुलिस अधीक्षक, आई. टी. ओ. आदि शताधिक सरकारी अफसरों ने नगर की 98 जातियों ने आणंदजी कल्याणजी की पेढ़ी, मोतीसुखिया, ब्रह्मचर्याश्रम हरिविहार, मुस्लिम समाज, माहेश्वरी समाज आदि ने पृथक्-पृथक् रूप से गुरुदेव के नमन पूर्वक संघपतियों एवं संघ का जो अभिनन्दन किया वह बड़ा ही भव्य था। सबसे महत्त्व की बात तो यह थी कि उस दिन कसाइयों ने स्वेच्छा से कसाईखाना बन्द रखा और प्रवेश जुलूस में शामिल हुए। पुरनारियां स्थान-स्थान पर गहुलियां और पुष्पवर्षा कर हृदय के महान् उल्लास को प्रकट कर रही थीं। जैन अजैनों के द्वारा बनाये गये तोरण द्वार,

मार्ग के दोनों ओर एवं मकानों की छतों, बाल्कॉनियो और दीवारों पर संघ दर्शन के लिये घण्टो से प्रतीक्षा करती हुई अपार भीड़ उसके साक्षी है।

उसी दिन फलेचुनड़ी का आयोजन था। जिसका सारा श्रेय दानवीर संघपति श्रीयुत् मणिलालजी डोसी को है। ऐसा आयोजन पालीताणा के इतिहास मे 300 वर्षो मे नही हुआ। इस नयनाभिराम और हृदयस्पर्शी दृश्य को देखकर कौन ऐसा होगा जिसके हृदय में अहोभाव न जगा हो....मुख से धन्य हो जिनशासन.... बलिहारी हो जिनशासन की....जैनं जयति शासनम्....न निकला हो। कितना दिव्य और भव्य था यह सब कुछ। दूसरे दिन चतुर्विध श्रीसघ के साथ गिरिराज के दर्शन, माला-परिधान का महोत्सव भी विविध-कार्यक्रमो के साथ सम्पन्न हुआ। अन्य अनेकों विशेषताओं के साथ संघ की यह सर्वोपरि विशेषता रही कि 54 दिन की इस लम्बी यात्रा मे आधी, तूफान, वर्षा आदि प्राकृतिक प्रकोप, चोर आदि का भय, रोगादि का उपद्रव, अकस्मात् या अन्य किसी भी तरह की अनिच्छित घटनायें संघ में कभी भी घटित नहीं हुई। यह सब गुरुदेव के ही जाग्रत-पुण्य का प्रभाव है। गुरुदेव के ऐसे दिव्य और महान् व्यक्तित्व का स्मरण कर उनके चरणों में मन और मस्तक सहज ही झुक जाता है। केवल श्रद्धा के स्वर गूँज उठते है—

सन्त - मनीषी, प्राज्ञ - पुरुष,
चरणों में शत्-शत् वन्दन।

हे ज्योतिपुञ्ज, हे ज्योतिर्धर
करते तेरा अभिनन्दन॥

❀ चित्त दमन ❀

चाहे जितनी क्रिया करने में आवे, चाहे कितना ही ज्ञान पढ़ने में आवे, चाहे कितनी ही तपस्या करने में आवे और चाहे कितनी ही योग साधना करने में आवे, पर जब तक मन की अस्थिरता होवे, चित्त आकुल व्याकुल होवे, मानसिक क्षोभ होवे, वहां तक साध्य प्राप्त हो सकता नहीं। यह खास लक्ष्य में रखने का है। ज्ञान, तप और क्रिया का आशय मन पर अंकुश लाने का होना चाहिये। मन की अव्यवस्थित स्थिति से प्राणी के कार्य कोई भी फल दे नहीं सकते, यह शुद्ध दृष्टि की अपेक्षा से यथा तथ्य है।

—अध्यात्म कल्पद्रुम

पूज्य गुरुदेव, प्रज्ञापुरुष, अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी म सा आदि की

उत्तराखण्ड यात्रा—
—मधुर स्मृतियाँ

(दिल्ली से हरिद्वार, ऋषिकेश, श्रीनगर, बदरी, हरिद्वार, अनूपशहर होते हुए दिल्ली तक)

(दिनाक 18–3–81 से 8–7–81 तक)

☐ ले० मुनि मणिप्रभसागर

ब्यावर, अजमेर, मालपुरा जयपुर, कोटपूतली होते हुए क्रमश फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी ता 18–3–81 को प्रात महरोली पहुँचे। वहा दादा श्री मणिधारीजी के श्री चरणो मे भक्ति भावना-प्रपुरित हृदय से वदना की। मैं और मेरे छोटे गुरुभाई तो प्रथम वार ही मणिधारीजी के दर्शन कर रहे थे। वहा से आधे घटे के पश्चात् छोटी दादाबाडी आ गये। वहा पहुचने पर ही लोगो को पता चला कि महाराजजी पधार गये है। इसमे श्री डोशीजी, श्री रावयानजी, श्री दौलतसिंह-जी जन, श्री शीतलदासजी रावयान श्री घनश्यामजी आदि सभी वडे नाराज हुए, कि आपके बिना किसी सूचना के पधारने से हम आपका जरा भी स्वागत नही कर सके, अत हमें काफी खेद हुआ है, किन्तु गुरुदेवश्री ने कहा, मैं आपके स्वागत के लिये नही, अपितु दादा गुरुदेव के दर्शन करने आया हूँ। छोटी दादावाडी मे मन्दिर व दादागुरु के दर्शन करते-करते आस-पास के करीवन 100-200 भाई बहिन एकत्रित हो गये। वहीं नवनिर्मित व्याख्यान हॉल मे पूज्य गुरुदेवश्री ने लगभग 1 घण्टा प्रवचन दिया, तत्पश्चात् स्थानकवासी आचार्यश्री आनन्द ऋषिजी म के समुदाय की विदुषी आर्या श्री प्रमोदकुमारीजी ने अपने भावपूर्ण भाषण मे "पूज्य श्री के एकाएक दर्शन करने तथा वाणी सुनने से" अपने आपको व सबको भाग्यशाली बताया।

दोपहर मे विश्वधर्म सम्मेलन के प्रवर्त्तक आचार्य श्री सुशीलकुमारजी जो पूज्य गुरुदेव श्री के पुराने प्रेमी हैं पधारे, करीबन एक घटा तक वार्तालाप चला, उन्होने विदेशो मे चल रही अपनी विभिन्न प्रवृत्तियो के बारे मे जानकारी दी।

उसी दिन केन्द्रीय वित्त मन्त्रालय के सयुक्त सचिव श्री डी आर मेहता दर्शनार्थ पधारे।

यह तो पूर्व निर्णित था कि दिल्ली मे रात्रि विश्राम नही कर सकते थे, अत उसी रोज विहार कर दिया।

ता 19 3 81 को प्रात विहार कर करीवन 7 8 कि मी तक पहुचे ही थे कि श्री डोशीजी,

राक्यानजी आदि मिले । उन्होंने बताया कि राजघाट से ठीक 20वें कि. मी. पर पू. वल्लभसूरि स्मारक बन रहा है, जो करीबन 2.5 करोड रुपयों की लागत से तैयार होगा, आज वही ठहरना है ।

हम वहा पहुचे तो वहा दिल्ली के सुप्रसिद्ध जिया बैड की धार्मिक धुनों व गीतों ने स्वागत किया । साथ में शताधिक पंजाबी भाई थे ।

पूज्य गुरुदेव श्री ने अपने पौन घण्टे के व्याख्यान मे पू. वल्लभसूरिजी म. के प्रति अपनी भावना दर्शाते हुए आपको वर्तमान काल का युग पुरुष बताया । वहां से विहार कर क्रमशः करनाल पहुचे । शहर मे प्रवेश करते ही एक भगवत् आश्रम आता है । वहां के अधिकारी पं. श्री देवराजजी ने हमें जाते हुए देखा तो वे दौड़े हुए आये और आश्रम में ठहरने के लिये निवेदन किया । उस रोज विहार करते-करते 12 बज गये थे और आकाश बादलों से आच्छादित हो गया था, ऐसा लग रहा था जैसे कुछ ही क्षणों के पश्चात् वर्षा प्रारम्भ हो जायगी । ऐसे समय में हम भी स्थान की गवेषणा करते हुए ही चल रहे थे अतः हमने शीघ्र ही स्वीकृति दे दी । उन्होंने पूरा आश्रम बताया और कहा, जहां आपकी इच्छा हो, ठहरिये ।

इस भगवत् आश्रम की स्थापना श्री भगवन-स्वरूप ब्रह्मचारीजी ने दि 29-7-1969 को की थी । साधुसंतों के लिये अनेक कमरे बने हुए हैं तथा भोजन की व्यवस्था हर समय रहती है । आश्रम का मुख्यालय, जहां कीर्तन-प्रवचन वगैरह होते हैं, एक हालनुमा है, जहां चारों ओर तस्वीरें लगी हुई हैं । जिनमें शंकरजी, कार्तिकजी, हनुमानजी, पार्वती, महावीर, बुद्ध, ईशु, गुरु नानक, मीरा, विवेकानन्द आदि सभी के फोटो हैं । आश्रम की नियमावली को पढ़ रहा था, उसके सात नं. के नियम को पढा तो हर्ष-विभोर हुए बिना न रहा । वह इस प्रकार था ।

"किसी भी धर्म के अथवा सम्प्रदाय के साधु, संत, महात्मा यहां स्थिरता कर सकते हैं ।

कितना असाम्प्रदायिक नियम ।

विहार क्रम जारी रहा । पथ में आने वाले स्कूलों में, कॉलेजों में प्रायः प्रवचन होते थे । इस प्रकार नैतिकता का प्रचार-प्रसार करते हुए क्रमशः हरिद्वार पहुंचे ।

हरिद्वार, यह सनातनों का प्रमुख तीर्थ है । यह तीर्थ दिल्ली से 200 कि. मी दूर उत्तर-पूर्व में आया हुआ है । इसे गंगाद्वार, स्वर्गद्वार आदि नामों से भी पुकारा जाता है । प्राकृतिक सौन्दर्यता से भरपूर इस तीर्थ में हजारों लाखों यात्री व पर्यटक गंगा स्नान करने पहुंचते है । आवागमन की सुविधा के लिये बस व रेल दोनों ही साधन उपलब्ध हैं । बदरी जाने वाले प्रायः सभी यात्री यहां एक रोज ठहर कर गंगा स्नान द्वारा अपने आपको पावन कर, यहां के प्रधान-प्रधान दर्शनीय स्थलों की यात्रा सम्पन्न कर फिर आगे बढ़ते हैं । यहां यात्रियों के स्नान की सुविधा के लिये कई घाट बने हुए हैं, जैसे—चंडी घाट, सुभाष घाट, बंगाली घाट, रामघाट आदि, किन्तु मुख्य घाट, "हरि की पैड़ी" है । *गंगा-स्नान का मुख्य केन्द्र यही है ।* अन्य घाटों पर स्नान करने का फल शरीर-शुद्धि है, किन्तु हरि की पैंडी घाट पर स्नान का फल पापों का निराकरण है, ऐसी सनातन-मान्यता है । यह प्रधान घाट संगमरमर का बना हुआ है । दो धाराओं को बांटने का काम मध्य में बिरलाजी द्वारा निर्मित प्लेट फार्म करता है, जहां घण्टाघर भी बना हुआ है । इस पैड़ी पर गंगाजी की धारा अति वेगवान् है । प्लेट फार्म पर खड़े होकर धारा की गति देख रहा था कि एक श्लोक याद आ गया ।

"है प्रवाह अति तीव्र हरिद्वारी गंगा का,
सावधान रहना हरि की पैड़ी पर जाकर ।
इसकी डुबकी मार शीघ्र ऊपर आ जाना,
बह जाओगे तो पहुंचोगे गंगा सागर ।।
—काका हाथरसी "काकदूत"

अच्छे से अच्छा तैराक भी गगा की मुख्य धारा मे जाने से घबरा जाता है। लेकिन हमने देखा, कई साहसी युवक तीव्र प्रवाह को नजर-अन्दाज करते हुए गोता लगा रहे थे।

कोई व्यक्ति प्रवाह मे बह न जाये अत हर पुल के नीचे कई जजीरें लगी हुई हैं। जिन्हें पकड कर व्यक्ति किनारे आ जाता है। तथापि वर्ष मे 10-12 दुर्घटनाए तो हो ही जाती हैं।

वहा चारो ओर पूजापाठ कराने वाले पडे बैठे हुए दिखाई दे रहे थे, जो मीठी-मीठी बातें करने मे बडे ही प्रवीण होते हैं।

सायकाल की आरती का दृश्य बहुत सुहावना होता है। श्रद्धालुओ की भीड उस आरती के दृश्य को नेत्रो मे बसाने उमड पडती हैं, शायद ही कोई यात्री या पर्यटक उस समय धर्मशालाओ मे रहता होगा।

हरिद्वार-कनखल मे पार्श्वनाथ भगवान दिगबर जैन मन्दिर है, जब मैं वहा पहुचा तो अलीगढ का जना हरीमन का 6 लीवर का वहा ताला लटक रहा था। सरक्षक महोदय दूर रहते थे। वहीं कनखल मे दक्ष-प्रजापति का दर्शनीय मन्दिर है।

हरिद्वार के दोनो ओर पर्वतमालाओ की भव्य शृखलाए हैं। बायी ओर के पर्वत पर मनसादेवी का मन्दिर बना हुआ है। ऊपर जाने के लिये ईंटो की सडक बनी हुई है। उस सडक पर स्कूटर के सिवाय अन्य किसी वाहन को ऊपर जाने की इजाजत नहीं है। सडक घूमती हुई जाती है। नीचे से ऊपर तक करीबन 3 कि मी पड जाता है। बदरी से वापिस लौटते हुए हमने देखा कि वहा रज्जु मार्ग (आकाश मे चलने वाली कुर्सिया) बन चुका था जिसे कलकत्ता की एक कम्पनी ने 50-60 लाख रु की लागत से तैयार किया था।

शायद ही कोई यात्री ऐसा होगा जो हरिद्वार आकर मनसादेवी के मन्दिर में न पहुचा हो। यहा के मनसा माताजी बडे ही चमत्कारिक माने जाते हैं। श्रद्धा-प्रपूरित भावना से की गई भक्ति निष्फल नहीं जाती।

दायी ओर के पर्वत पर चण्डी देवी का मन्दिर है, वह भी चमत्कारिक है। यहा सप्तऋषि आश्रम विशेष दर्शनीय है।

ऐसे सनातन तीर्थ हरिद्वार मे पहुचने से पूर्व स्थान की गवेषणा आवश्यक थी। अत पूज्य गुरुदेवश्री व अन्य मुनियो को सघन वृक्ष की घनी छाया मे विराजमान कर मैंने एक व्यक्ति के साथ प्रवेश किया।

किन्तु सध्या को जब 8 घटे भ्रमण के पश्चात् लौटे तो मुख-मण्डल पर निराशा की झलक स्पष्ट परिलक्षित हो रही थी। हरिद्वार-दर्शन और वहा ठहरने सम्बन्धी जो भी विचार पूर्व निर्णीत थे, सभी पर तुषारापात हो गया। वहा साम्प्रदायिकता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। प्रत्येक धर्मशाला का मैनेजर ज्योंही परिचय के रूप मे "हम जैन मुनि हैं" सुनता, तो "ना" के सिवाय दूसरा शब्द न निकलता। लगभग 80 धर्मशालाओ के चक्कर लगाने के बाद हमने हमारा गवेषणा-रुख आश्रमो की ओर मोडा, तो वह प्रयत्न भी निष्फल रहा। कुछ मिला के पालीताणा की जैन धर्म शालाओ से कम सकीर्णता न थी।

आखिर थके हारे हरिद्वार मे वापिस रुडकी की ओर चले। 10 कि मी पर बहादराबाद गाव के बाहर "सत सनातन कुटिया मन्दिर" नामक एक आश्रम है, जिसमें एक छोटा सा मन्दिर, बरडा, व दो कमरे हैं। वहा सन्त सेवादासजी जो निर्वाण (नागा) सम्प्रदाय के हैं, रहते हैं। उन्होंने प्रसन्नतापूर्ण हृदय से हमें आमन्त्रित किया, हमने वही बाहर बरडे मे अपना आसन जमाया। प्राकृतिक सुषमा व दृश्यो से भरपूर उस स्थान पर हमारा इतना मन लगा कि

करीबन 18-20 दिन वही रह गये। ध्यान और अध्ययन के सिवाय अन्य कोई कार्य नही था। वहा हमारा परिचय दो व्यक्तियों से प्रमुख रूप से हुआ।

1—श्री रामदत्तजी शर्मा, भारद्वाज, जो जन्धेडी (मेरठ) के निवासी है, और मवाना में रहते है। तथा बहादराबाद इण्टर कॉलेज मे प्रोफेसर है। हिन्दी संस्कृत और अग्रेजी पर आपका पूर्णाधिकार है। बड़े विद्वान् है। ऐसे विद्वानो की संगति से प्रतिदिन 2-3 घटे ज्ञान-चर्चा चलती।

2—श्री भोलूसिहजी जो बहादराबाद ग्राम पंचायत के सरपच हैं। वे एक अच्छे व कर्मठ कार्यकर्ता है।

और वहीं रहने वाले बाबा सेवादास जी शान्ति-प्रिय व सुष्ठु स्वभाव के है।

वहाँ कई व्यक्तियो को मद्य त्याग का नियम दिलाया। पूज्य श्री का सार्वजनिक प्रवचन भी हुआ, जिसमे ग्राम के बुद्धिजीवी व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

वहाँ बहुत दिन हो गये थे, फिर हमारा लक्ष्य तो बदरी था। अत विहार कर हरिद्वार होते हुए बदरी के पथ पर चल पड़े। हरिद्वार से करीवन 5 कि.मी. पर ही "बाबा दूधाधारीजी बर्फानीजी म." का एक विशाल आश्रम बना हुआ है। हम देखते-देखते आगे बढ़ रहे थे कि आश्रम के व्यवस्थापक आये और ठहरने का आग्रह करने लगे। उनकी भावना को देखते हुए हम इन्कार न कर सके। और हमने आश्रम मे प्रवेश कर दिया। वहाँ के 9 मंदिरों के दर्शन किये। बडे-बड़े आलीशान मंदिर और सभी मदिर मकराने के।

हमने बाबा दूधाधारीजी से मिलने की इच्छा व्यक्त की तो व्यवस्थापकजी ने कहा कि चलने मे असमर्थ होने के कारण वे आ तो नही सकेगे। किन्तु मैं वही व्यवस्था कर देता हूँ।

पूज्य गुरुदेव श्री दो मुनियों के साथ वहाँ पधारे। पूर्ण शिष्टाचार व शालीनता से परस्पर विचार-विमर्श हुआ।

मंदिर व आश्रम के ऊपर करीवन 20 लाख रुपये लगे थे, इतने बड़े अर्थ-व्यय के उपदेशक बाबाजी ने अपने शरीर पर टाट लपेट रखा था जिसे दो इन्च जाडे रस्से से कमर पर बाँध रखा था। निस्पृहता का इससे बडा उदाहरण और क्या मिल सकता है। उनके सामने एक अग्निकुण्ड था, जिसमें से करीबन डेढ फुट ऊँची लपटे निकल रही थीं, और बाबाजी अग्नि-ताप ग्रहण कर रहे थे।

रात वही ठहर कर दूसरे दिन विहार कर दिया। 1 कि.मी. भी नहीं चले थे कि श्री भंवरलालजी बोहरा का व्यक्ति आया, और उसने कहा, श्री भवरजी व श्री दौलतसिंहजी जैन हरिद्वार मे गंगा-स्नान कर रहे है, तथा थोड़ी ही देर मे आपके पास पहुंचेगे।

थोडा और आगे चले थे कि दुर्ग निवासी श्री इन्द्रचदजी बगानी सपरिवार मिल गये, जो कल से ही हमे इस क्षेत्र मे ढू ढ रहे थे।

उन्होने आगे जाकर वन-विभाग के एक बंगले में हमारी व्यवस्था कर दी। वहाँ श्री भंवरजी भी आ गये। कुछ आवश्यक विचारों का स्पष्टीकरण कर वे और श्री दौलतसिंहजी जैन दिल्ली की ओर रवाना हो गये।

श्री इन्द्रचंदजी बंगानी ने पूज्य गुरुदेव श्री के दर्शनों के लिये ही इतना लम्बा सफर तय किया था। श्री इन्द्रचंदजी व उनके पूरे परिवार की भक्ति श्रद्धा, आस्था पूज्य गुरुदेव श्री के प्रति अनूठी है।

उस रोज वही ठहरकर शाम को विहार कर हम सत्यनारायण मंदिर पहुंचे। पूर्व-निर्णीत व्यवस्था के अनुसार हम वहीं ठहरे। श्री बंगानी जी भी साथ ही रहे।

यह मंदिर बाबा काली कमली वालों द्वारा बनाया हुआ है। इस मंदिर के व्यवस्थापक श्री प मोहनलालजी शर्मा ने अपनी सज्जनता के द्वारा शीघ्र ही हमें आकर्षित कर लिया। उस मंदिर में हमने एक नई बात देखी, वो थी गेहू पिसाई की चक्की, उस चक्की को चलाने के लिए विद्युत की आवश्यकता नहीं होती थी। गंगाजी में एक नहर काटी गई थी नहर के द्वारा पानी आता था, उसके प्रवाह से वह चक्की चलती थी।

वहाँ से विहार कर ऋषिकेश पहुँचे, जहाँ श्री बगानी जी ने "भजन आश्रम" में व्यवस्था की थी। वहाँ से हमने लक्ष्मण झूला की ओर विहार किया और बगानी जी स्वदेश की ओर रवाना हो गये। लक्ष्मणझूला पार स्वर्गाश्रम गीता भवन परमार्थ निकेतन वगैरह शानदार आश्रम बने हुए हैं, और इस क्षेत्र के प्रमुख दर्शनीय स्थल माने जाते हैं। आकस्मिक कारणों से हम यहाँ न पहुँच सके तथा तेरह मंजिले मंदिर के दर्शन कर हमें आगे की ओर प्रस्थान करना पड़ा। फिर क्रमश: देवप्रयाग, श्रीनगर रुद्रप्रयाग, चमोली, जोशीमठ आदि दर्शनीय स्थलों को पार करते हुए लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे। पूज्य गुरुदेव श्री के लिये एक डोली की व्यवस्था की थी। सड़क मार्ग से यदि बदरी जाय तो ऋषिकेश से करीबन 300 कि मी पड़ता है, किन्तु हम तो कच्ची डाडी के रास्ते से जा रहे थे। दोनों ओर आकाश से बातें करती उत्तुंग पर्वत श्रेणियाँ

मध्य में अत्यन्त गहरी खाई।

और खाई में अति वेगवती गंगा।

यदि पैर जरा भी चूका तो 'गंगा शरण' के अलावा कुछ नहीं। डोली वालों के पैर बड़े सधे हुए थे। रोमांचों से भरपूर पर्वतीय यात्रा का आनन्द प्राप्त करते हुए बढ़ रहे थे।

यहां पर्वतों पर ही मकानों की कतारें।

पर्वतों पर ही खेती।

पर्वतीय क्षेत्र में रहने की आदी यहाँ के मानवों का शरीर गठीला व फुर्तीला है। यहाँ की ललनाएं भी कम कार्यक्षमता नहीं रखती।

और वह स्वर्णिम सूर्योदय हुआ जिसकी आभा में हमने लक्ष्य प्राप्ति की, अर्थात् बदरी पहुंचे।

सभी मुनियों का सर्दी के मारे बुरा हाल था। ऐसे समय यदि राजस्थान में होते तो गर्मी और लू के कारण बुरा हाल होता किन्तु यहाँ तो ठीक विपरीत स्थिति थी। हाथ पैर कुछ भी काम करने से इन्कार कर रहे थे। किन्तु उन बेचारों की क्या ताकत ? जो विरोध की आवाज बुलन्द कर सकें, उन पर मन का अंकुश जो था। और मन की भावनाएं, शीघ्र-दर्शन तथा अन्य विशेष कार्य करने के लिये उन्हें उद्दीप्त कर रही थी।

चढ़ाई उतर कर समतल में अलकनंदा (गंगा) नदी के किनारे बद्रीनाथपुरी बसी हुई है। 'बदरी' समुद्र तट से करीबन 10,300 फीट ऊंचाई पर बसी हुई है। यहाँ धर्मशालाएं आदि की सुविधायें पर्याप्त मात्रा में सम्प्राप्त है। मंदिर प्राचीन है व जीर्णोद्धार का कार्य अभी प्रारम्भ ही हुआ है। मन्दिरजी का बाह्य-रूप-रंग व ढांचा यात्रियों को अथवा पर्यटकों को इतना आकर्षित नहीं करता। मूल दरवाजे में प्रवेश करते ही एक पोल आती है फिर एक और दरवाजे को पार करने के पश्चात् रंगमंडप आता है जहाँ सरकार द्वारा नियुक्त दो-तीन पुजारी व पुलिसमैन बैठे रहते हैं। अन्दर मूलगभारे में बदरीनाथ की प्रतिमा विराजमान है। मुखमण्डल को छोड़कर शेष प्रतिमा पर हर समय वस्त्र आच्छादित रहते हैं। दाहिनी ओर कुबेर तथा गणेशजी, व बायीं ओर श्री लक्ष्मीजी का मंदिर है।

मंदिर के बाहर दुकानें सजी हुई हैं।

और हर दुकान में प्रसाद के थाल सजे हुए हैं।

और हर थाल में बदरीजी को चढ़ने वाला प्रसाद सजा हुआ है।

अर्थ की न्यूनता व अधिकता के अनुसार थाल भी छोटे-बड़े है। दर्शनार्थी वर्ग स्व-सामर्थ्यानुसार प्रसाद खरीदता है, व दर्शन करने जाता है। तत्रस्थित पुजारी उस प्रसाद को लेकर एक पाट पर रखे वैसे ही अतिरिक्त प्रसाद में मिला देता है; तथा फिर उसमें से थोड़ा लेकर पुनः थाली में डाल देता है। जिसे दर्शनार्थी वापस ले आता है, और उस प्रसाद को वह व्यक्ति स्वयं ग्रहण करता है, अपने स्वजनों में, परिजनो मे, संबंधियो मे, पडौसियों मे, परिचितो मे, बाँटता है, सभी स्वयं को अहोभाग्यशाली मानते हुए प्रसाद ग्रहण करते है।

मंदिर की बनावट ठीक जैन मंदिर के जैसी है, उसका शिल्प जैन-शिल्प से मिलता है।

हम परम्परा से सुनते आ रहे है कि इस तीर्थ मे विराजमान प्रतिमा, जैन प्रतिमा है। यह वास्तविक तथ्य है, या किंवदन्ति। इस प्रश्न का समाधान पाने के हमारे सारे प्रयास विफल हो गये।

बडे पुजारी, जो अपने आपको प्रखर विद्वान् व उच्च व्यक्तित्व वाला मानता है, उससे कहा, "हम जैन मुनि है, और हम प्रतिमा को आवरण-रहित दशा मे देखना चाहते है। "चूंकि हमारा निवेदन युक्तिसंगत था, अतः एकाएक इन्कार करना उसके बस की बात नही थी। उसने कहा—"जब प्रक्षाल होगा, तब दिखा देंगे। "निर्दिष्ट समय मे जब हम यहां पहुँचे तो प्रक्षाल की विधि पूर्ण हो चुकी थी। फिर उसने स्पष्ट इन्कार कर दिया और कहा, "यह हमारे शास्त्र तथा सिद्धांन्तो के खिलाफ है।" बात-चीत के दौरान वहां कई अन्य पंडे-पुजारी एकत्रित हो चुके थे। स्पष्ट था कि वे सभी उसी के पक्ष मे थे, बहुमत को अनिच्छा होते हुए भी शिरोधार्य करना पड़ा। अब वहां रुकना व्यर्थ था। हम धर्मशाला मे गये और वहां के दो-तीन पंडितों को बुलाया, जो वहाँ सर्वश्रेष्ठ विद्वान् माने जाते थे। हमने बदरी-तीर्थ, तप्तकुण्ड, ब्रह्म-कपाल आदि की प्राचीनता, विशेषता, विलक्षणता आदि के बारे में जानना चाहा! उत्तर में उन्होंने पूरी कथा एक घंटे में पूरी की जिसे मै सुनता जा रहा था और डायरी में लिखता जा रहा था और उसी कथा को संक्षेप में यहां भी लिख रहा हूं।

"असंख्य वर्षो पूर्व बना यह अति प्राचीन तीर्थ है, तथा इसका प्रकटीकरण भगवान् शिव ने किया।"

फिर तप्तकुण्ड के निर्माण की कथा बताते हुए कहा कि एक दफे शिवजी बड़े ही चिन्तित हुए कि गेहूँ, चावल वगैरह जितने भी खाद्य पदार्थ हैं, अग्नि उन्हे परिष्कृत कर देती है। सोना-चांदी आदि जितने पदार्थ है, वे भी सब अग्नि का सामीप्य संप्राप्त करते है तो शुद्ध हो जाते है। तो फिर मानवों की शुद्धि किस प्रकार से हो, क्योंकि मानव यदि अग्नि मे कूद पड़े तो जल जाय, अतः शिवजी ने इस तप्तकुण्ड की रचना की, जिसमें हर समय गर्मागर्म पानी रहता है। आदमी इसमें नहा लेता है, व शुद्ध, पवित्र बन जाता है, भले ही वह कुख्यात डकैत या खूंखार हत्यारा ही क्यों न हो?

फिर वहा के एक विशिष्ट स्थान "ब्रह्म-कपाल-शिला" का माहात्म्य बताते हुए कहने लगे, "जब ब्रह्माजी अपनी पुत्री सरस्वती पर आसक्त हुए तो शिवजी ने क्रोध मे आकर ब्रह्माजी का सिर काट डाला, लेकिन आश्चर्य, वह सिर शिवजी के हाथ मे चिपट गया। सिर, हाथ से पृथक् हो ही नही रहा था! तो शिवजी पृथ्वी के सारे तीर्थो की यात्रा पर निकल पड़े, अन्त में जब वे बदरी आये, तो सिर छूटकर अलकनदा के समीप जा गिरा, अतः वह स्थान ब्रह्मकपाल कहलाया। कहते हैं—यहां पर प्रदत्त पिंड व तर्पण करने से पितरों को मुक्ति शीघ्र मिल जाती है।

उन्ही के शब्दो से वातो ही वातो मे पता चला कि वदरी की मूर्ति ध्यानस्थ मुद्रा मे स्थित है !

उक्त वातो से यह स्पष्ट विश्वास हो जाता है, कि यह प्रतिमा जैन प्रतिमा है ! यह मदिर जैन मदिर है ! यह तीर्थ जैन-तीर्थ है । जैनो के लिये इससे अधिक खेद का विषय क्या हो सकता है ? खैर ।

चारो ओर वरफ के पहाडो से घिरे वदरी पुरी का दृश्य वडा ही सुहावना व मन लुभावना लगता है ! प्राकृतिक सौन्दर्य के इस क्षेत्र मे लाखो यात्री व पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं ।

ऋषिकेश से ही पहाडो का चढाव-उतार प्रारभ हो जाते हैं ! सडको के मोड इतने गहरे व खतरनाक हैं कि नया ड्राईवर गाडी नही चला सकता हैं । जगह-जगह "Horn please slow drive" आदि सूचनाए लिखी हुई हैं । इन चेतावनियो के वावजूद प्रतिवर्ष 4-5 वसें, कारें गगा मे धाम विलीन हो ही जाती हैं ।

यात्रा सपूर्ण कर वापिस जव ऋषिकेश पहुचे तो अखबार देखने पर पता चला कि दो ही दिन पूर्व एक वस श्रीनगर के समीप गगा मे जा गिरी किसी के वचने का तो प्रश्न ही नही, वल्कि लाशें और वस का भी पता नही ।

वदरी की यात्रा करने वालो को हैजे का टीका लगवाना अनिवार्य है । ऋषिकेश मे टीका न लगाया हो तो वहाँ से 25 कि मी वदरी की ओर एक ग्राम आता है (डायरी म नाम न लिख सका) वहाँ लगाना पडता है । टीका लगाने पर प्रमाण पत्र समुपलब्ध होता है । जगह जगह चैकिंग होती है, और वह प्रमाण पत्र दिखलाना पडता है । लेकिन हमने स्पष्ट अनुभव किया कि वे सारे प्रमाण पत्र झूठे थे । आजकल हैजे का टीका प्राय कोई नही लगवाता । टीका लगाने के लिये जो डाक्टर नियुक्त है, वह एक रुपया लेकर एक प्रमाण पत्र प्रदान कर देता है । इस तरह उसका व्यापार बडे जोरो से चलता है । यात्रियो पर्यटकों का भी इजे क्शन से उत्पन्न दर्द के वदले एक रुपया देने म कोई परेशानी नही होती । सहर्ष आदान-प्रदान होता है ।

फिर हरिद्वार होते हुए हस्तिनापुर की यात्रा के लिये रुडकी की ओर विहार किया ।

ता 29 मई को प्रात नारसन खुर्द पहुचे । वहाँ एक वगीचा था । सरक्षक की स्वीकृति सप्राप्त होने पर हम वहाँ ठहर गये । दोपहर के 12 वजे वगीचे के मालिक, उनके भाई, पुत्र वगैरह आये । देखा तो उनके हाथ मे टोकरे थे । एक टोकरे मे 60-70 रोटियाँ थी, साथ मे करेला का शाक, छाछ वगैरह पूरी भोजन सामग्री ! खाने का आग्रह करने लगे । हमने कहा, "अरे ! ये क्या किया, भाई, हम तो अब कुछ नही लेंगे !" उन्होंने कहा, "ऐसा कैसे हो सकता है, अतिथि देवो भव ! आप हमारे यहाँ ठहरें और हम आतिथ्य सत्कार न करें, ऐसा कैसे हो सकता है ?"

इतना अधिक आग्रह देख हम आश्चर्यचकित हो गये । जिस व्यक्ति से हमारा कोई परिचय नही और वे गूजर जाति के ! फिर भी इतनी हार्दिकता देखी तो हमने स्वीकारा कि ये भारतीय सस्कृति के उज्ज्वल-नक्षत्र हैं ।

यू कि हमारी गोचरी हो चुकी थी, फिर भी उनका इतना श्रद्धा-भरपूर आग्रह देख हमे थोडा-बहुत ग्रहण करना पडा । फिर सध्या को गाँव वाले आ गये तो पूज्य गुरुदेव श्री ने अपने मर्म-स्पर्शी और सरल प्रवचन देकर सभी को मत्र मुग्ध कर दिया ।

वहाँ से मुजफ्फरनगर होते हुए ता 2 जून को मीरापुर पहुचे । मीरापुर से 3 कि मी दूर श्री ओमप्रकाशजी सोनी का फार्म है, वही ठहरे । आस पास के करीबन 50-60 व्यक्ति एकत्रित हो गये । सभी मुसलमान थे ।

पूज्य गुरुदेव श्री का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली व विलक्षण है कि आगन्तुकों ने प्रथम दृष्टि मे ही समझ लिया कि आज तो बहुत विद्वान् फकीर तशरीफ लाये है। उन्होंने पूज्य श्री से तकरीर (प्रवचन) करने के लिये निवेदन किया।

इस पर पूज्य गुरुदेव श्री ने कुरानशरीफ की आयतो को सरल भापा में समझाते हुए कहा, "मुसलमान" इस शब्द का अर्थ होता है, "ईमानदार। यदि ईमान है तो मुसलमान है, नहीं तो वह बेईमान है। जो भ्रष्ट-ईमान है, वह कभी भी अपने आपको मुसलमान कहलाने का अधिकारी नही हो सकता।"

उन्होंने अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा—ऐसी बात तो आज तक हमे किसी औलिये, फकीर ने नही बताई।

दूसरे रोज राम-राज पहुंचे। वहाँ श्री देशराजजी तपस्वी (ओसवाल) ने हमें देखा तो भक्तिपूर्वक आहार लेने की विनती की, जिसे स्वीकृत किया गया। शीघ्र विहार कर संध्या के समय वहसूमा पहुँचे, वहाँ कालेज में हम रुके। थोड़ी ही देर हुई थी कि 200 कि.मी. से 300 कि.मी. की स्पीड से भयंकर आँधी आयी।

ये दादागुरुदेव की कृपा ही थी कि उस आंधी से हमे किसी भी प्रकार की कोई कठिनाई नही आई।

दूसरे ही दिन प्रातः विहार कर ता. 4–6–81 को हस्तिनापुर पहुचे। वहाँ मंदिर दर्शन कर ठहरे। श्री शान्तिभाई जो तीर्थ के व्यवस्थापक है, उन्होने अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा, "हमारे यहाँ मन्त्री जी श्री निर्मलकुमार जी का पत्र, टेलीफोन वैगरह आये है, और आदेश दिया है, कि पूज्य श्री का वैण्ड बाजे से धूमधाम से स्वागत होना चाहिये किन्तु आप तो विना किसी पूर्व सूचना के पधारे और फिर हमे आपके इतने शीघ्र आने की सभावना ही नही थी, अतः हम आपका स्वागत न कर सके, इसके लिये हमें भारी खेद है। पूज्य श्री ने फरमाया, इसकी कोई आवश्यकता न थी। 6 दिन वहाँ ठहरे। प्रातः प्रभु दर्शन, गुरुदेव दर्शन और निरीक्षण आदि इन्हीं कार्यो में समय व्यतीत हो जाता था।

हस्तिनापुर तीर्थ का मंदिर शिल्प की दृष्टि से कलात्मक वना हुआ है। पारणे की मूर्ति जो बनी है, वह अति भव्य है। यहाँ दिगम्बर जैन मंदिर अति विशाल वना हुआ है, धर्मशालाएं भी बड़ी बड़ी है। बालाश्रम भी यहाँ वना हुआ है, जिसका संचालन जैन श्वे. महासभा, उत्तर प्रदेश करती है। जंबूद्वीप की विशाल योजना, व नशियां का जीर्णोद्धार विशाल पैमाने पर हो रहा है। यहाँ की दादावाड़ी भी अति भव्य व विशाल है।

यहाँ पर ता. 7–6–81 को दिल्ली श्री संघ चातुर्मास विनती के लिये आया। भावना तथा आग्रह को देखते हुए पूज्य श्री ने स्वीकृति प्रदान कर दी।

ता. 10–6–81 को यहाँ से विहार कर मवाना पहुचे, श्री रामदत्तजी शर्मा भारद्वाज सपरिवार यही रहते है। अपने परिवार सहित आये और आहारादि के लिये विनंती की। 18-20 दिन हमारे साथ बहादराबाद मे रहे थे, अतः हमारे नियम-उपनियम जानते ही थे, श्रद्धा-पूर्वक आहारादि बहराया, पूरे परिवार की सद्भावनाएं वास्तव मे प्रशसनीय रही। आपके पिता श्री इस क्षेत्र के जाने-माने लब्ध प्रतिष्ठित ज्योतिपी है।

फिर परीक्षितगढ, गढ मुक्तेश्वर स्थान्न अनिवास होते हुए ता. 14–6–81 को अनूपशहर पहुचे। यहाँ पर जैनों के करीवन 7-8 गृह है, फिर भी यहां उनकी व स्थानीय नागरिको की श्रद्धा-सेवा व आस्था अनूठी है।

विशेष कर हिन्दी साहित्य परिषद् के मत्री श्री रतनचंदजी, श्री शान्तिप्रकाशजी की निष्ठा-भक्ति परम प्रशसनीय है।

अनूपशहर प्रवेश का उल्लास तो सर्वाधिक हमें था, आज पूज्य गुरुदेव श्री की दीक्षा भूमि के दर्शन कर रहे थे। पूज्य गुरुदेव श्री की दीक्षा इसी शहर मे हुई थी। विशेष बात तो यह थी कि श्री रतनचदजी शातिप्रकाशजी के पिता दादा श्री के हाथो, आप ही के घर से पूज्य श्री की दीक्षा सपन्न हुई थी और अब ता 26-6-81 को आपके ही वशजो का ओर से पूज्य गुरुदेव श्री के शिष्य की दीक्षा होने वाली है।

अनूपशहर (उ० प्र०) में भव्य दीक्षा समारोह

परम् पूज्य गुरुदेव, व्याख्यान वाचस्पति, प्रज्ञापुरुष, अनुयोगाचार्य श्री कान्तिसागरजी म सा की पावन निश्रा मे दि 26-6-1981 को विजय-मुहूर्त मे मुमुक्षु श्री चन्द्रभानजी जैन की दीक्षा अभूतपूर्व उत्साह, तथा उल्लास भरे वातावरण मे सानन्द सम्पन्न हुई।

दो दिन पूर्व दि 24-6-81 को प्रात श्री सघ के समक्ष दीक्षा के डोराबन्धन का विधि विधान सम्पन्न हुआ।

जुलूस दि 26-6-81 को प्रात 9 बजे प्रारम हुआ। क्रमश ऊट, घोडे, गाडिया लिये बच्चे, फिर दो झाकिया, पीछे बुलन्दशहर का प्रसिद्ध रतन बैंड, फिर दीक्षार्थी का रथ, फिर दो झाकियें, पीछे जहाजीराबाद का सुप्रसिद्ध बैंड अपनी भावपूर्ण भक्ति धुन तथा गीतो को गाता हुआ, चल रहा था। फिर पूज्य मुनि मण्डल, फिर श्रावक, भगवान का रथ, फिर दीक्षा के उपकरणो का छाप, फिर श्राविकाए। करीबन एक कि मी लम्बा विशाल जुलूस अनूपशहर के इतिहास का सवप्रथम जुलूस था। इस जुलूस को देखने नगरवासी उमड पड़े थे। मकानो की छतो पर, दुकानो के ओटालो पर, जिधर देखा उधर मानव ही मानव नजर आ रहे थे। करीबन 3 घण्टे तक शहर के मुख्य बाजार मे घूमता हुआ जुलूस पूर्व निर्धारित दीक्षा स्थल एस डी ए वी इण्टर कॉलेज मे पहुँचा, जहा सभा के रूप मे परिवर्तित हो गया। शीघ्र ही दीक्षा के क्रिया-विधि विधान प्रारम्भ हो गये। पूज्य गुरुदेव श्री के मुखारविन्द मे उच्चरित क्रिया-विधि विधान जन-समूह बडी तन्मयता से श्रवण कर रहा था। थोडी ही देर के पश्चात् मुमुक्ष श्री चन्द्रभानजी, "मुनि शशिप्रभसागरजी" के रूप मे परिवर्तित हो गये। केश राशि पृथक् कर दी गयी। मुण्डित मस्तक आभा स प्रदीप्त होने लगा। मुख पर उल्लास, उमग प्रसन्नता तथा शाति चमक उठी।

फिर अनूपशहर नागरिकगण द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री को अभिनन्दन-पत्र समर्पित किया गया, जिसका वाचन स्थानीय प्रमुख राजनेता श्री नवलकिशोरजी गग ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री ने फरमाया। "अनूपशहर तो मेरी द्वितीय जन्म-भूमि है, यानी मेरी दीक्षा 49 वर्ष पूर्व इसी शहर मे हुई थी। अत अनूपशहर से मेरा प्रगाढ सम्बन्ध रहा है। अब कृत अभिनन्दन साधुत्व का अभिनन्दन है तथा यहा के सभी नागरिकों ने अपना समय देकर इस शुभ कायक्रम को सफल बनाने मे जो सहयोग दिया। उन्हें धन्यवाद देता हू।

सभा का सचालन प्रोफेसर श्री रामध्यानजी अग्रवाल ने किया। उन्होन सभापूर्णता की घोषणा की।

इस समारोह मे भाग लेने दिल्ली से सर्वश्री मणिलालजी डोशी, श्री जवाहरलालजी रामपान, श्री दौलतसिहजी जैन, श्री सितावचन्दजी फोफलिया आदि के अतिरिक्त दो बसें आयी थी। ब्यावर से श्री शमुमलजी राका आदि, और भी स्यानो, मावडी, मेरठ, बुलन्दशहर, गाजियावाद, वगैरा, लश्कर आदि अनेक स्थानो से व्यक्ति पधारे थे।

सभा मे स्थानीय राजनेता, अधिकारी,

व्यापारी, बुद्धिजीवी आदि और भी सभी जातियों के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

स्वामीवात्सल्य का आयोजन बड़े ही सफल ढग से संयोजित हुआ। भोजन तथा परोसने की व्यवस्था की सभी व्यक्ति मुक्त-कठ से प्रशसा कर रहे थे। अनूपशहर मे इतना बड़ा विशाल समारोह सानन्द सागोपाग उतरा, उसका सारा श्रेय हिन्दी साहित्य परिषद् के मन्त्री तथा सर्राफा यूनियन के अध्यक्ष सर्वश्री रतनचन्दजी जैन तथा रामलीला कमेटी के प्रधान श्री शान्तिप्रकाशजी जैन का है।

समारोह का सारा आर्थिक भार आपने ही वहन किया। आपके पूरे परिवार के साथ तत्रस्थ श्री कुशलचंदजी, श्री गुलावचन्दजी, श्री अशोकजी श्री अनिलजी, श्री विनोदजी आदि ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे तनतोड परिश्रम किया। विशेषतः श्री अशोकजी, अनिलजी व विनोदजी सभी धन्यवाद के पात्र है। धार्मिक उत्सवो के प्रति उत्साह समादरणीय है।

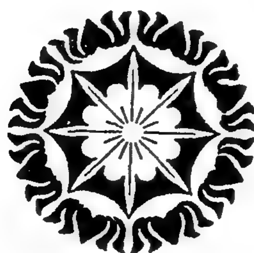
यह दीक्षा समारोह अनूपशहर के इतिहास में स्मरणीय रहेगा।

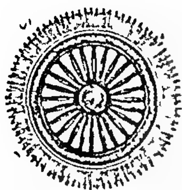
अनूपशहर से दि. 28-6-81 को विहार कर बुलन्दशहर, गाजियाबाद होते हुए दि. 3-7-81 को प्रातः छोटी दादाबाडी पहुंचे। फिर एक दिन महरोली दादावाड़ी रुके।

दि 7-7-81 को दिल्ली नगर-प्रवेश था। प्रवेश का वर्णन मन्त्री श्री दौलतसिंहजी जैन की भाषा मे—

परम् पूज्य गुरुदेव, अनुयोगाचार्य श्री कान्ति-सागरजी म.सा. का नगर-प्रवेश आज दि. 7-7-81 को सानन्द सम्पन्न हुआ।

आपश्री के नगर-प्रवेश पर टाउन हॉल मे स्वागत-सभा का आयोजन किया गया। इस सभा मे बहुत संख्या में नर-नारी उपस्थित थे। विशेष अतिथियों में केन्द्रीय पैट्रोलियम व रसायन मंत्री श्री पी. सी. सेठी उपस्थित थे। श्री किशनलालजी जैन ने महाराजश्री का जीवन परिचय दिया। चारो ओर अपार उत्साह था। इस कार्यक्रम का सचालन श्री किशनलालजी जैन ने कुशलता से किया। पूज्य गुरुदेव श्री के प्रवचन के पश्चात् यह सभा एक विशाल शोभायात्रा के रूप में परिवर्तित हो गई। शोभायात्रा मे जैन ध्वज, बैंड-बाजा भजन मण्डलिया और सैकड़ों की सख्या में लोग उपस्थित थे। जुलूस दिल्ली के मुख्य बाजार चादनी चौक, दरीबा कला, किनारी बाजार व मालीवाड़ा होता हुआ धर्मशाला मे पहुचा। जुलूस का सारा मार्ग शानदार ढंग से सुनहरी फरियों से सजाया गया था और टाउन हॉल से लेकर सारे जुलूस मार्ग में लाउडस्पीकर लगे हुए थे, जिस पर श्री किशनलालजी जो कमेन्ट्री बोलते जा रहे थे। वर्तमान मे पूज्य गुरुदेवश्री लाल धर्मशाला, मालीवाड़ा मे चातुर्मासार्थ विराजमान है।





विज्ञापन विभाग

उन सभी दानदाताओं के आभारी हैं—
जिन्होंने इस प्रकाशन में
अपना बहुमूल्य सहयोग देकर
समिति का उत्साह बढाया है ।



संसार की सारी इच्छा और तृष्णा मर जावे केवल एक इच्छा परमात्मपद प्राप्त करने की रहे तब ही आत्मा का बोध होगा ।

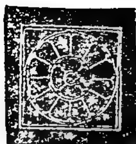


पीरचन्द भीखमचन्द दुग्गड़

P. O. साजा Distt. दुर्ग (M.P.)

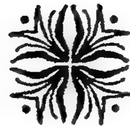
पूर्णता होगी वहां गम्भीरता होगी। भरे घड़े और खाली
घड़े की आवाज मे कितना फर्क होता है।

सदाचार से ही सद्गति और दुराचार से ही दुर्गति होती है।



प्रभु ने इन्द्र से कहा "मोक्ष की साधना उधार से नही होती।"

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :



गुलाबचंद अमरचंद बाघरेचा

P. O. बीजा Distt. दुर्ग (M. P.)

परमात्मा का अभिषेक स्वयं के पापों को धोने का निमित्त।

शुभकामनाओं सहित :



शांतिलाल बंगानी

P. O. नयापारा (राजिम) Distt. रायपुर (M.P.)

आज लोगो ने लगभग तारको से सम्बन्ध तोड डाला है और भवसागर
मे डुबोने वालो से पक्का सम्बन्ध बांध रखा है ।

शुभ कामनाओं सहित



राजेन्द्र इन्टरप्राइजेस

टिम्बर मर्चेण्ट फोरेस्ट कॉन्ट्रेक्टर
खरियार रोड (उडीसा)

वीतराग भक्त वीतराग के पास सासारिक राग के साधन
नही मागता है, वरन् वैराग्य के साधन मागता है ।

शुभ कामनाओ सहित



फोन { निवास 167 / मिल 677

रामलाल मिश्रीलाल लोढ़ा

ठि सुनील ट्रेडिंग क०
राइस एण्ड दाल मिल ओनर्स
दुर्ग–491001 (म प्र)

सद् विचार आचार में आ जावे तो हम ससार का सजन नही विसजन कर पायेंगे। मुझे ससार लूट कर मरना है लुटाकर नहीं ।

हमारी शुभकामनाओं के साथ



☎ ३८४७४३

सरदारमल पाबुदान गोलछा

नवा माधुपुरा

अहमदाबाद

आराधना का श्रम करने वाला श्रमण इसीलिये नवपद मे काला रग श्रमण यानी श्रम का सूचक ।

हमारी शुभकामनाओं के साथ



कान्तीलाल मणीलाल कोठारी

दादासाहेब की पोल

अहमदाबाद

पूज्य गुरुदेव श्री का दिल्ली प्रवेश —



पूज्य गुरुदेव, अनुयोगाचार्य

श्री कान्तिसागरजी म. सा.

का

आशीर्वाद प्राप्त करते हुये—

केन्द्रीय रसायन व पैट्रोलियम मंत्री

श्री प्रकाशचन्द्र सेठी